

❧ प्रार्थना ❧

प्राज्ञ पुस्तक 'मे' आपसे भविष्य निवेदन करना
 है कि यह परम पवित्र जीवन चरित्र रूप पुस्तक
 श्रीमान् परम प० उपाध्यायजी महागजने लख
 कर मुद्राशुल्लकचनना को मशोधन करने के
 लिये प्रदान किया अन मेने आप की आज्ञानुकूल
 इस पुस्तक को स्वबुद्धयनुसार सशोधन किया
 है यदि अब भी प्रेम तथा मेरे प्रसाद से कोई
 अशुद्धिरद्गड हो तो सरयावान् पुस्तक क्षमा करें।
 ध्योकि रहा भा है कि - अक्षरमात्रदस्वर हान
 व्यञ्जनमन्त्रि। विवर्जित रेषम् साधुभिरुग्र
 समञ्जेन्द्र्य। कोविमुह्यनि शास्त्रममृते॥१॥ इति
 अपिनुदत पुस्तक को आयुन लालो मिट्टीमल्ल,
 वायुगम, लुधियाना निवासो तथा ला० हरभग
 वान्दाम, गकरदाम कपूरु ठावाले भावडा डूबरी
 वाजा लाहौर वा लाला कृशराम, यमनामल्ल,
 सैक्रेट्री जैनमभा नृनपर और धारुकुन्दनलाल
 सने आबरमोयार, सदानन्द, लुधियाना निवासी,
 इन धर्म प्रेमी महाशयों ने श्रवणसे प्रकाशित
 कराया है जिसके प्रभाव से उक्त महाशयागे पद
 मे भी अनीव सुप्रशयानि की प्राप्ति की है ॥
 जैनमुनि पण्डित ज्ञानचन्द्र

प्रस्तावना ।

विदित होये सर्व सृष्टिज्ञानों को इस सत्तार चक्र में प्राणी मात्र का एक घम्म ही का आधार है ॥

धर्म के ही प्रभाव से आत्मा सद्गति को प्राप्त होता है । सा मानुष भव पाने का सारपदार्थ धर्म का नियम करना ही है अर्थात् धर्म निर्णय से सम्पत्त्य रत्न की प्राप्ति होजाती है ॥

किन्तु इस मनादि प्रवाहक सत्तार चक्र में अनेक प्रकार के धर्म प्रकटित हो रहे हैं जोकि (सत्य सत्य पससता गरहतापरवय) इससूत्रके कथनानुसार बताव कर रहे हैं अर्थात् स्व मतकी प्रगता परमन को निंदा करते हैं ॥

किन्तु विद्वानों का यह पक्ष नहीं है कि पर सत्यपदार्थकी भी अपनी कृत्तियों द्वारा कटकित करना । विद्वानों का यही धर्म है कि सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य को ग्रहण असत्य का परित्याग करना अर्थात् इस भारत भूमि में अनेक प्रकारके मत प्रवृत्तधारहे हैं जैसे कि-

स्वामी क्यानन्द सरस्वती जो न वेद या एक इंदर को ही सृष्टि कर्ता माना है ॥

इन्द्राचार्य ने एक शिव का ही सर्वोत्तम बनलाया है ॥

व्यासऋषिने एक वेदातद्गन का ही मुख्य रक्खा है ॥

ऋषिदेव ने सायनदर्शन में पञ्चविंशति ग्रहसियों से ही सङ्कुल मान लिया है इस प्रकार कणादमुनि गौतमाचार्य ने भी मिन २ पदार्थ माने हैं ॥

किन्तु मनुमादि ऋषियोंने दशक्रम या सृष्टिउत्पन्न विषय भइकादि से माना है पूर्व मीमांसको ने वेदविदित हिंसा को भहिंसा ही करके लिखा है ॥

श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । श्री गणेशाय नमः ।
श्री गणेशाय नमः । श्री गुरुभ्यो नमः । श्री गणेशाय नमः ।

एतन्मयं विज्ञानं लब्धव्यं न तत्र यत्नं ज्ञानोपपत्तिरित्या
सीं सम्यक् ज्ञानं न स्यात्कथं ज्ञानं प्राप्तं न तत्र न तथा सम्यक् द
पदेक ही सम्यग्ज्ञानं ज्ञानं न ।

[illegible]

अथाहं यत् उचिष्यन्त्यस्य वदन्त्यस्य कर्म न कृपयथैव भवति
तौ सन्त्यस्य न भवति । निज्जायन्त्यस्य कर्म न भवति । अथ कदा हायेति
किं एतत् प्रियमाणिक्यं यथा यत्किञ्चिद् कर्म न भवति । अथ किञ्चिद् काले म
इत्यादि ॥

मा मशान्न वा का यथा नाम हु ३१ आशुताम्बस्तथम
गच्छती मशान्नवा २ आमेतय य अमशित्वा मशान्न ॥

निजान अथवा भायका उमा उ मध्यम किया है निजान महि
पगिलाभा क साथ गुहसयम का प्ररण कर है महान । प पिवा
किया है ॥

किन्तु पञ्चावदश मन्त्राः अस्मात्प्रमाणम् गणना न कर्तव्यम् विवरः
महान् हो प्रोपकारः कियत् न कश्चिद् भावार्थमप्यप्यत्र का यम्
यैरात्य मयउपदेशः आ कि निमम मध्यकायः पाद्यः आ मध्यकायः के हा
को उत्पन्नये ॥

एतन्नाम श्री श्री परमेश्वरिणो कि एतन्नि मे निरोधनी ये
 श्रीर निर पैतृमार्गं व परमापदेशक श्रीपुण्यनी महाराज दृष्टः ॥

कथा मध्यगण उन महात्माओं के ज्ञान से मुक्त हो सके हैं कदा।
 नहीं मया ऐसा कौन है जो ऐसे महान् परोक्षरूपी महात्माओं क

जीवन चरित्र सुनना न चाहे तथा ऐसा कौन है जो वेमे महात्मा के गुणानुवाद न करे या ऐसा कौन है जो परम शांति मुद्राधारी सत्योपदेष्टा सद्गुरुलालन भाचार्यपद के धारक श्रीमान् पूज्य महाराज के गुणों में रक्त न हो । अर्थात् भगवत् गुणादि में सदैव ही रक्त रहे ॥

भग्य जीवों के हृदयरूपी कमल में उक्त महाकवि के गुण सदैव ही विराजमान रहते हैं ॥

भग्यजीव अपने तरने के वास्ते उक्त भाचार्यमहाराज जी के सदैव ही गुण की स्तुति करते रहते हैं क्योंकि निहोने सूर्य समान जिनमन का इसलोक में प्रकाश किया अर्थात् स्यादवादवापी के द्वारा जीवजन्म को मिन्नर करके दिखलाया तथा निष्कले सदर भगवत्तम के व्याख्यान में अनेक ही सद्गृहस्थ उपस्थित होते थे उस महामुनि का यह जीवन चरित्र है ॥

इस चरित्र ग्रन्थमें श्रीमान् परमपंडित भाचार्य स्वयं सदैवही नव विजय करने वाले जैनधम्म में सूर्य समान श्री १०८ पूज्यसोहनलाल जी महाराज जी ने मुसद्दा बहुत ही सहायता दी है साथ में बहुत से जीण पत्र भी प्रदान किये हैं जोकि यथास्थान इस ग्रन्थ में लिखे जायेंगे ॥

और श्री श्री १०८ गंगा घच्छेदेकउपाधि विभूषित आस्वामी गणपतिराय जी महाराज जी ने भी बहुत से पत्र इतिहास सुनाये हैं जो कि यथास्थान में दिए जायेंगे ॥

भार श्रीमान् लाल यसीलाल सोताराम मलेरी नामा वाले ने भी इस पुस्तक के लिखते समय बहुत से पुस्तकों की सहायता दी है ॥

और बहुत से भग्यजीवों की सम्मति से यह ग्रन्थ लिखा गया है । अर्थात् भग्यजीवों के लिये यह ग्रन्थ अवश्यमेव ही हितकारी होवेगा ॥

उपाध्याय जैनमुनि श्री आत्मारामजी ।

भीरू राजा दुर्गारामजी के पुत्र राजा ज्यादरमल—लाला बस
 तामराज जो कि समुद्रमर जैनममा के मंत्री हैं । भीरू हसराम, मुलाम
 राज बाबुराम ॥

यह भी स्वर्ग पितामह-धर्म में रक्त हैं भीरू भगवानदेवी जिसका
 लाला हेमराज जी के साथ विवाह हुआ था उस के एक दम्पतिदेवी
 बम्बा उग्रमर हुए उमरा विवाह निर्दोश में हुआ ॥

किन्तु तिसके गौरी दुगादेवी नाम की दो पत्नियें फकीरपुर
 नामक एक पुर का जन्म हुआ । सो गौरी देवी का विवाह भगवान
 में लाला धनराज के साथ हुआ और दुगादेवी का विवाह मुजानपुर में
 किया गया ॥

विविध वरा देविये श्रीगुरु मन्तराज केने विशाल कृप में
 उग्रमर हुए और केने विष्णोर्ण कीति पुनहुए क्योंकि
 पुरस्वाभममें सदाचारो मद्र अजमठनि पदम थे

जब अमरसिंह जी पुनः अमृतसर में आए तो दिनों दिन
पैराय माघ बढ़ने लगा धृति मुक्ति मार्ग में प्रवेश होगर् जो कुछ
सत्कारो पदाय थे वे अनियता दिखाने लगे मन निर्ममत्व में लग
गया मुनि माघ धारण को आकाशा बढ़ती गई थी जिनवाणी ने
अक्षय वा जोष के स्वरूप को निम्न २ घर के दिखा दिया ॥

तब फिर चित्त में यह निदयय किया कि किसी मुनिराज के
अभिष्टाने पर दोहा धारण करूंगा ॥

फिर कितनेक समय के पदवान् भीमान् परम पंडित श्रीस्थामी
रामदास जी महाराज भी भगवान् वर्तमान स्वामी के ८५वें पटो
परि विराजमान अपने अमृत करी गायतानों के द्वारा इस मांत में
लिखा यह था कहा करते थे तब अमरसिंहजी ने चित्त में निदयय
किया कि मैं भोमहाराज का दिव्य होकर भीमगवत का माघ
महाका कह जिस करके बहुत स मध्य जीय निदया यह को त्याग
कर सुगति के अधिकारी बने क्योंकि मनुष्य जन्म पानका यहो सार
है कि धर्म के द्वारा परोपकार करना तब अमरसिंह जी ने अपनी
पुस्तक पर एक पुस्तक गुमारने (दास) करके बड़ टापे सब काम
उनका समर्पण कर दिया घर का भी नियम पूर्वक कार्य उन का हा
न बना गया जिनका नाम यह है ॥

१। लाटा घनीटागल्ल १, मर्यामस्त २, सोहनटाल ३ घनैया
मल्ल ४ बोट्टमल्ल ५, जब आप सब काम कर चुक फिर यदा
देर योग्य धन मागधिदों को भी देकर दोहा के घरने धमूमर में बट
पट्टे परानु उस बात में परम पंडित श्री स्थानी रामदास जी महाराज
हा दिन्नी (इन्द्रवर्य) में विराजमान थे तब भी अमरसिंहजी दिन्नी
को ही बने स्थान रहे इस समय में देव गण्डी का प्रकार न हान के
कारण से बहुत रोग इन्द्रवर्य में जाने वाले सत्कर्मि नानक
गणों से होने हुए दिन्नी में पहुचने थे ॥

जब अमरसिंह जी पुनः अमृतसर में गए तो दिनों दिन वैराग्य भाव बढ़ने लगा अति मुक्ति मार्ग में प्रवेश हो गई जो कुछ सत्कारी पदाय थे वे अनियन्ता दिखाने लगे मन निर्ममत्व में लग गया मुनि भाव धारणों को भाङ्गना पड़ती गई थी जिनवाणी ने कम था जोय के स्वरूप को निम्न २ कर के दिखा दिया ॥

तब फिर विचार में यह निश्चय किया कि किसी मुनिराज के मिलने पर दीक्षा धारण करूँगा ॥

फिर कितनेक समय के पदयात्रा भीमान परम पंडित श्रीस्वामी रामलाल जी महाराज श्री नावान वर्द्धमान स्वामी के ८५वें पट्टे पर विराजमान अपने अमृत रूपी शिष्याओं के द्वारा इस बात में निष्ठा पथ का नाश करत थे तब अमरसिंह जी ने विचार में निश्चय किया कि मैं आमदाराज का शिष्य हाकर भीमवत का मार्ग प्रकाश कर जिस करके बहुत स मध्य अव निष्ठा पथ को त्याग कर सुगति के अधिकारी बने क्योंकि मनुष्य जन्म पाने का यही सार है कि धर्म के द्वारा परोपकार करना तब अमरसिंह जी ने अपनी दुःखन पर पांच पुण्य गुण देने (दास) करके बड़ लाये सब काम उनका समर्पण कर दिया घर का भी नियम पूर्ण कार्य उन का हाँ कहा गया जिनका नाम यह है ॥

छाटा घसीयमल्ल १, मर्यामल्ल २, सोहनलाल ३, घनैया मल्ल ४ काटू मल्ल ५, जब आप सब काम कर चुके फिर यथा योग्य धन सम्बन्धियों को भी देकर दीक्षा के वास्ते अमृतसर से चल पड़े परन्तु उस काल में परम पंडित श्री स्वामी रामलाल जी महाराज दिल्ली (इन्द्रप्रस्थ) में विराजमान थे तब श्री अमरसिंह जी दिल्ली न के हो चले स्थान रह उस समय में रेल गाड़ी का प्रचार न होने के कारण से बहुधा शोग इन्द्रप्रस्थ में आने वाले सन्तानादि नानक मठों से होते हुए दिल्ली में पहुँचने थे ॥

साधु होनहार हैं जैन धर्म के परमोद्योग दायेंगे । सत्य है लोग माया शीघ्र ही फलोन्मत्त हो गए ।

पुन नामा पटियाला छोट्याल इत्यादि नगरों में धर्मोपदेश देते हुआने १९०० का चतुर्मास भग्याला नगर में किया नगर में धर्मोद्योग बहुत ही हुआ क्योंकि श्री भग्यामिह जी महाराज धर्मनेता थे सदैव ही धर्म वृद्धि में कटि बद्ध थे पुन धर्म के पून प्रकार से परचारक थे चतुर्मास के अनंतर घनूड, खरड रोपड माछोवाडा, लुधियाना जगरावा चूड चक्र जीरा कीरानपुर इत्यादि नगरों में सत्य धर्मोपदेश दत्त हुए जीवों का मनमागर से तारते हुए बहुत से धारकों का भक्ति विवर्धित होने से १९०१ का चतुर्मास फरीदकोट में किया सा श्री महाराज ने जगल दश के लोगों पर महान् परापकार किया, बहुत से भग्यनना के भग्यन रूप चित्त वाणी से भक्त करण पवित्र किये क्योंकि श्री महाराज में जैन वाणी के उच्चारण की महान् शक्ति थी और शरीर का शक्ति ऐसा थी कि यादिन दशव करके ही रिवाद की भाशा त्याग कर दीक्षा के लिये उद्यत होते थे व्याख्यान की भी शैली अच्युतीय थी ॥

श्री महाराज ने इस चतुर्मास में श्री उपगार्ह सूत्रानुसार बहुत ही तप किया तथा सूत्रों का उपधान नाम छान्दि (भाचम्ल,दि) भी तप किया, चतुर्मास के पदयात ग्रामानुग्राम विहार करते हुए लोगों के चित्त के सशयनाश करते हुए श्री महाराज भग्यनसर में पधारे तब नगर में भत्यानद हा गया बहुत से लोग परमनवाले दर्शन करने का भाते थे पुन दर्शन करके भत्यानद होने थे क्योंकि श्री महाराज पूर्ण व्यवस्था में भग्यनसर में एक सुप्रसिद्ध जौदरियों में से नामांकित जौदरी थे ॥

बस धरल में ही भग्यनसर में श्रीरामाजी नागर मल्ल जी महाराज

साधु होनहार हैं जैन धर्म के परमोद्यानक होंगे । सत्य है लोग माया शीघ्र ही फलोन्मूल हो गई ।

पुनः नामा पटियाग लौटागल इत्यादि नगरों में धर्मोपदेश देते हुओं ने १९०० का चतुर्मास भग्याला नगर में किया नगर में धर्मोद्योग बहुत ही हुआ क्योंकि श्री भमरसिंह जी महाराज धर्मनेता थे सदैव ही धर्म वृद्धि में कटिबद्ध थे पुनः धर्म के पूण प्रकार से परचारक थे चतुर्मास के अनंतर बनूड, खरड, रोपड, माछोगडा, लुधियाना, जगताश चूड चड्डी जीरा, फीरानपुर, इत्यादि नगरों में सत्य धर्मोपदेश देते हुए जीवों को मयभागर से तारते हुए बहुत से आधकों की भक्ति प्रीति हाने से १९०१ का चतुर्मास फरीदकोट में किया सो भी महाराज न जगल देश के लोगों पर महान् परोपकार किया, बहुत से भक्तियों के अमृत रूप जिन घाणों से भक्त करण पवित्र किये क्योंकि श्री महाराज में जिन घाणों के उच्चारण की महान् शक्तियों और शरीर की शक्ति ऐसी थी कि वादिन दर्शन करते ही विवाद की भाशा त्याग कर दीक्षा के लिये उद्यत होते थे व्याख्यान की भी शैली अकथनीय थी ॥

श्री महाराज ने इस चतुर्मास में श्री उपचार्य सूत्रानुसार बहुत ही तप किया तथा सूत्रों का उपधान भाम लोदि (भाचम्लादि) भी तप किया, चतुर्मास के पदचात भ्रामानु भ्राम विहार करते हुए लोगों के चित्त के सशय नाश करते हुए श्री महाराज अमृतसर में पधार तब नगर में भक्त्यान्वित हो गया बहुत से लोग परमतवाले दर्शन करने को आते थे पुनः दर्शन करके भक्त्यान्वित होने थे क्योंकि श्री महाराज पूर्ण व्यवस्था में अमृतसर में एक सुप्रसिद्ध जहौरियों में से नामांकित जाहरी थे ॥

उस समय में ही अमृतसर में श्रीस्वामी नागर मल्ल जी महाराज

सत्य है ऐसे ही मिथ्या हठों से जिन मार्गों की यह दशा हो गई
ह अर्थात् मृतन दासों उत्पन्न हो गई हैं ॥

साठा मुस्ताकराय जी साठा हीरालाल सह वाले की पुत्री - गाला
देवी के सगे भाई थे ॥

बीमासे के पदचात् श्री महाराज ने इन का भी दीक्षित किया यह
*महात्मा जी श्री महाराज के ज्येष्ठ शिष्य हुए फिर श्री पूज्यजी महा
राज भामानुषाम विचारते हुए मध्य जीओं को सत्योपदेश देते हुए
लाहौर (लखपुर) में पधारे फिर बृहपुर (बसूर) में फिर फिरोजपुर
इत्यादि नगरों में विचारते फिर फरीदकोट वाला भाइयों की प्रकृति का
स्वीकार करके १९०४ का बीमासा फरीदकोट में ही कर दिया पूर्णतः
ही धर्मोद्योग हुआ फिर बीमासे के पदचात् भगवान् विचार के १९५
का बीमास मालेरकोटले में किया सो मालेरकोटले में धर्मोद्योग बहुत
ही हुआ ज्ञान की या तपादि की वृद्धि अतीव हुई क्योंकि उस काल में
मालेरकोटले में सूफ़ी ज्ञान का प्रचार था कई सनातन शास्त्रज्ञ भी थे
अपितु धर्म की सत्यता भी महत् थी, किन्तु अथ भी मध्य नगरों की
अपेक्षा महत् ही है ॥

बीमासे के पदचात् ग्राम नगरों में विचारते हुए धर्मोपदेश देते
हुए अन्यथा समय श्री महाराज भामानुषाम के समीप ही एक छोट्टा
घाट नामक वन नगर घसना है तिस नगर में पधारे जब रात्री का

मे रामनगर के धायकों से कहा कि यह घूटेराय जी तो समय से शिष्य
हो गया है तुम क्यों पवित्र भाग से एतित हाते हो तब रामनगर के
भाइयों ने कहा कि यदि घूटेराय जी धनस्थिति विविध भी करन
छाज्जाय तब भी हम तो रुक करके ही मानेंगे ॥

* श्री स्वामी मुस्ताकराय जी महाराज के शिष्य स्वामी
हीरालाल जी महाराज हुए जिन के शिष्य श्री स्वामी तपस्वी गान्धि
जय जी महाराज विराजमान हैं ॥

सत्य है ऐसे ही मिथ्या हठों से जिन मार्गों की यद् दशा हो गई
ह अर्थात् नूतन शास्त्रें उत्पन्न हो गई हैं ॥

लाला मुस्ताकराय जी लाटा हीरालाल मड़ वाले की पुत्री ज्वाला
देवी के सगे मारि थे ॥

बीमासे के पदचात् श्री महाराज ने इन का भी दीक्षित किया यह
*महामा जी श्री महाराज के ज्येष्ठ शिष्य हुए फिर श्री पूज्य श्री महा
राज ग्रामानुग्राम विचरते हुए मध्य जीशों की सत्योद्देश देते हुए
लाहौर (लखपुर) में पधारे फिर कुशपुर (कसूर) में फिर फिरोजपुर
हायादि नगरों में विचरके फिर फरीदकोट वाले माइयों की विरक्ति को
स्वीकार करके १९०४ का बीमासा फरीदकोट में ही करदिया पूर्ववत्
ही धर्मोद्योत हुआ फिर बीमासे के पदचात् अनुक्रम विचर के १९५
का बीमास मालेरकोटले में किया सो मालेरकोटले में धर्मोद्योत बहुत
ही हुआ ज्ञान की वा तपादि की वृद्धि भताय हुए क्योंकि उस काल में
मालेरकोटले में सूफ़म ज्ञान का प्रचार था वह भ्रातृगण शास्त्रज्ञ भी थे
अपितु घरों की सत्या भी महत् थी, किन्तु मय भी मध्य नगरों की
अपेक्षा महत् ही है ॥

बीमासे के पदचात् ग्राम नगरों में विचरते हुए धर्मोपदेश देते
हुए अन्यदा समय श्री महाराज नामानगर के समीप ही एक छीटा
घाट नामक उप नगर घसना है तिस नगर में पधारे जब रात्री का

ने रामनगर के आबच्चों से कहा कि यह घूटेराय जी तो समयसे शिक्षित
हो गया है तुम कधी पवित्र मार्ग से पतित हाते हो तब रामनगर के
माइयों ने कहा कि यदि घूटेराय जी वनस्पति विप्रिय भी करने
लगजावे तब भी हम ता रुक करके ही मानेंगे ॥

* श्री स्वामी मुस्ताकराय जी महाराज के शिष्य स्वामी
हीरालाल जी महाराज हुए जिन के शिष्य श्री स्वामी तपस्वी गाविंद
राय जी महाराज विराजमान हैं ॥

जी को मनान करवाया तो यह अव्यवहार में ही देणन हो
 गये फिर भी गगाराम जी महाराज जब एक्ले ही रहगये तो फिर भी
 पूज्य जी महाराज न विचार किया—यदि एक शिष्य नया हो चाये
 तो यह भी गगा राम जी साधु दा हा जायेंगे तब इन के समय पर
 निर्धार भी सुख पर्यंत हो जायगा ॥

साथ ही व्यवधान की भागा जीम ही पूर्ण हो जाती है तब
 इस काल में ही एक भासवाल जगल दरा व नाराम के बसने वाले
 भायक जीयनरामजी दीक्षा लन वास्तु किराजपर में स्थित हो
 भागवे तब भी पूज्य जी महाराज न "जीयनराम जी को भली प्रशार
 से हद करके और किराजपर में ही दीक्षित करके स्थानी गगारामजी
 का समर्पण करदिये ॥

धन्य है यस परापकार महामा को फिर भी पूज्य जी महाराज
 तो अव्यव विहार करगये ॥

और प्राय २ म जैनधर्म का प्रकाश बनत हुए अनुकमता से
 कली नगर म एधारा फिर बहुत से लोगों की विवर्ति होने के कारण
 ७७ का आमाग इन्द्रप्रस्थ म ला करदिया बतर्मास में मध्य जीर्ण
 मयूनरूपे सर्वज्ञान प्राप्त किलाया और भायक लोगों न भी जैनधर्म
 मनेक प्रकाश म प्रमापन करी कहेकि एक ता भी पूज्य जी महाराज
 दिल्ली म दीक्षा हा हुइ धा द्वितीय भी महाराज परम पंडित थे
 गण्य म लोग नामा प्रकाश का उभाह करते थे ॥

एक वही भीजीवनराम जी महाराज हैं जिनह शिष्य आमाराम
 य फिर भी जीवनराम जी महाराज न आमाराम का भक्षण
 कर स्व गच्छ से दाह दिला था कहेकि आमाराम जी का
 बदन अत्यन्त जवान और जिनह गच्छ हे पूज्य भी
 शिष्यन १ ॥

फिर श्री महाराज ने घतुर्मास के पदवात् ० ०
 के वास्ते जयपुर की ओर विहार किया ॥

किन्तु स्वामी मुस्ताफाखान जी महाराज या स्वामी * गुलाबान्
 जी महाराज की मी यही विनयि थी जब श्री महाराज अलवर
 पधार भार जिन याणी का प्रकाश किया तब बहुत से मध्यज्जाई
 पैराख माय डाय न हागया जिम का फल भागे लिखेंगे ॥

मन्यदा समय श्रीपूज्यजी महाराजजी न जब अलवर से विहार कि
 फिर अनक्रमस जब जयपुर म पधार गये तब जयपुर में आया नद उग्न
 हागया चारा भार धोजैन द्रव्यक नामका नाद हाने लगा—पञ्चासीम
 नामका मन्नास लाक्यकारन लग्य कयाकि पूर्वकाल में श्रीमान् भाषा
 मन्त्रकवद्र जी महाराज न जयपुर म मलान धर्माद्योत किया था ॥

फिर चारा भार म योमान का विनयि होने लगी तब ई
 महाराज जी न १९०८ का नतमान जयपुर का ही स्वीकार करलि
 फिर जयपुरक समाय ० विहारक योमान क वाकन जब जयपुरमें पधा
 तबही विहारका श्री दोता नत वाकन जयपुर म ही भागये फिर ई
 महाराज न विजालीय य जी की इतिहास करक निज शिष्य बताया ॥

* यह श्री मुस्ताफाखान जी महाराज या श्री पञ्चासीम जी महाराज
 जी के ही शिष्य य कि न हल की इन्हा मनेमान १९०४ या १९०५
 में मलिन वाक्यगण धर्मा ई बहुत म इन्हापत्र म्हा उपनयन
 हुए हैं इन्हा म मनेमान शिष्य प्रमाण करना हु किमन य महाराज
 जी कर्तव्यक क वाकन एक मनेमिह भागानक य ॥

† यह वक्ता श्री स्वामी विहारक य जी महाराज ने जिन्होंने
 १९१८ में विहारक दि मनेमिहवा का मनेमिहवाक का प्रमाण करक
 था यज्य जी महाराज म विहारक का वा दि हल दुराध का कयागण
 कान है नव श्री जय महाराज जी न मनेमिहवाक मनेमिहवा का
 कानक स व य कर विहा या जिम का लकव भाग दिवक ॥

किन्तु यह भी स्वामी विलासराय जी महाराज बहुत ही दीर्घ
दर्शी शान्ति रूप थे और इनका जन्म मालेरकोटला नामक नगर का
था दुबान लुधियाना नामक नगर में करते थे ॥

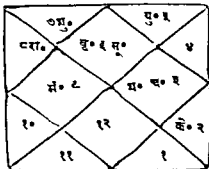
जब चौमास अत्यानन्द से व्यतीत होने लगा तब अकस्मात्
अल्वर से रामबक्ष जी का पत्नी युक्त दीक्षा के वास्ते जयपुर में ही
उपस्थित हुए तब भी पूज्य जी महाराज ने रामबक्ष जी सुखदेव जी
को जयपुर के चौमास में ही दीक्षित किया ॥

और तिनकी पत्नी भी भार्याजी के पास दीक्षित हो गई ॥

किन्तु यह महात्मा जी—जैन धर्म में सूर्यवत् प्रकाश करने
वाले हुए हैं भार पञ्जाब देश में भी स्वामी परम पंडित • रामबक्ष
जी महाराज ऐसे नाम से सुप्रसिद्ध हुए हैं ॥

क्योंकि स्वामी जी महाराज ज्ञानावर थे स्वामी जी का जन्म
१८८३ जन्म लग्न में इस प्रकार से ग्रह स्थित हैं ।

जैसेकि—विश्वमास्य १८८३ भाद्रपद मास शुक्र पक्ष १५
रवि वासरे मृग शीघ्र नक्षत्र प्रदनाम योगे कोलष करने जन्म चक्रम् ॥



* भी पूज्य रामबक्ष जी महाराज जी के पांच शिष्य हुए हैं

भी बृज शिष्याल जी १, विरनचन्द जी जो कि सधगी हो गये थे २।

हैं सो जो उन तत्त्वों का पेटा मुनि गुण धारण करने वाला पुरुष है
अर्थात् जो जीव सम्पद् प्रसार से तत्त्वों का ज्ञाता हो उसके मुनि
पद धारण करता है उसी ही जीव का सूत्र बना पुद्गल पुत्र के नाम से
लिखते हैं ॥

तब धीमान् धायक जी ने कहा कि हे महाराज जो भाप का
वधन साथ है भविष्य जो कुछ भापने इत्थं पात्र से महान् अर्थ सूचक
वस्त्र दिया है मैं इन का शिरो धारण करता हूँ किन्तु इस वधन का
साधना पूर्वक भापके चरण कमलों में निवेदन करता हूँ ॥

स्वामिन् जो दिगधरी लोग हैं वे एकान्त भव के स्थापक होन
से अनेकान्त भव में अवागम्य होते हुए सब आत्मा को स्वयमेव ही
तिरस्कार करने वाले हो गये हैं ॥

और जो द्वाताम्बर भव से निम्न हो कर पीताम्बर कहलाते हुए
तपागच्छादि धारी लोग हैं वे लोग भी अनेकान्त भव से वृषद् हो हैं ॥

क्योंकि—वीर शासन में एक द्येन वस्त्र धारण करने की आज्ञा
है किन्तु यह लोग उक्त आज्ञा को न मानने हुए मनमाने पातादि
वस्त्र धारण करते हैं ॥

और यह लोग पीतराग मणित दया भग से वृषद् हो
कर पद्मवक्त्र रूप मदितापदष्टा हो गये हैं और धी मरी जी सूत्र
में यह वधन है कि जो भूत अनुदत्त पुं धारी का वधन दिया
हुमा है वा वृष पुं धारी का वधन दिया हुमा है वे सम्पद्
भूत हैं और वे प्रमाण करने योग्य हैं ऐसे वधन होने हुए भी
यह लोग उक्त वधन का सादर पृथक् न देखते हुए आसन्न पदों
के रखे हुए भव हैं जिन में साधन विषय का कुछ भी विषय नहीं
होता तथा है उन भवों के यह लोग परमाव देशक हो रहें हैं तथा
शास्त्रोक्त लोभ के अनुसृत रूप का त्याग करते वृद्धा पद्मवक्त्र लोभों
के वशी करने से अदभुत कल्याण समझते हैं अर्थात् वे जीव कदा धारण

वरते हुए मुन से मुनपति उगार करके हाथ में रन्ते हैं क्या मार्ग को न पालन करते हुए पनः २ मसरयोगदेश देते हैं ॥

इत्यादि कारणों से यह लोग भी मनेकांत मन के मनधिकारी हैं सो सम्यक् दृष्टि से देखा जाय तो घोर शासन में शुद्ध मार्गोपदेश इवेताम्बर साधु मार्गी जैन ही हैं जब श्रीमान् धायक जी ऐसे कथन कर चुके तब श्री महाराज ने छगफरि कि—हे धायक जी यह कथन आप का मत है ही निष्पक्षता का सूचक है तब फिर धायक जी बोले कि हे स्वामिन् श्रीविवाह महन्ति श्री ज्ञाना धर्म कथाग इत्यादि सूत्रों में तब सप्तमादि नियमों को यात्रा बतलाया है किन्तु यह लोग उक्त सूत्रों को पाठ होत हुए भी ध्यानपूर्वक नही देखते हैं इसी ही कारण से यह लोग सम्यक् ज्ञान से पराङ्मुख हैं ॥

तब श्री महाराज ने कृपा करके धायक जी इहाँ कारणों से भारमा ने भक्त जन्म मरण किय हैं फिर भार मा धायक जी ने प्रश्न पूछे सो स्वामी जी ने सूत्रानुसार यत्कि पूर्णक एव उत्तर दिये कि धायक जी परमानन्द हो गये और श्री महाराज की परम कीर्ति करने लगे सो भानन्द के साथ १९०९ का चैमासा पूर्ण होने के पश्चात् बूढ़ी कोटे वाले श्री स्वामी फकीरचन्द जी महाराज मिले तिनके साथ भी धर्म वाचार्थ बहुत होती रहें ॥

तथा शेष सूत्र जो अध्ययन नहीं करे थे यह सत्र भी श्री महाराज जी ने स्वामी फकीरचन्द जी से पढ़े स्वामी फकीरचन्द जी श्री पुण्य महाराज जी की बुद्धि या योग मुद्रा का देख कर भक्ति भानन्द होते थे और अध्ययन प्रेम पूर्णक करता थे ॥

त्रिंशः अध्ययन करने के पश्चात् फिर श्री महाराज बीकानेर में ही श्री स्वामी हुक्मीचन्द्र जी महाराज को मिले सो उन के साथ प्रेम पूर्णक वाचार्थ हुए ।

अर्थात् जो श्रीमहाराजजी के दर्शन करता था वह अवश्यमेव ही

रामानन्द हा आभा था सो भक्तमाल धीरदत्तजी महाराज दिगार बाने
हुए था बहुतसे मुनियों पर मिलन हुए पुनः दिल्लीमें विराजमान होगये ।

रागों की परम उगाह उगम हा गंगा पुनः बनू मास
राम की विह्वल हाल लगी तब भी महाराज ५ प्रीत्य क्रमशः जान
रहे १९१० का नामान् दिल्लो में हो कर दिया पुनः गुरुमास के
पूर्व भाषाट मास में धर्म के वातर भी मासोगम जी, रामानन्दजी,
मोदमलाह जी, अनाम जी यह चार भार अधिपना सदीक्षा व
वास्ते दिल्ली में भाग्य ला था पूज्यजी महाराज न इनका रद बन्ध
भाषाट हप्ता १०मी का दिल्ली में हो दीक्षित किया पन २४ दिग्य
वमाये जिस में भी पूज्यजी के पदपाटी भी पूज्य रामवल जी महाराज
जी व पदवान् भी सपने भी स्वामी † मनीरामजी महाराज जी का
१९३९ में मालर बाटले शहर में आचार्य पद दिया भवितु यह स्वामी
जी महाराज महान् शान्ति मुद्राके धारो हुए हैं ।

● जिन २ मुनियों को मिले थे उन के नाम सर्व मर का उपलब्ध
नहीं हुए हैं इन लिये जीवन चरित्र में सय नाम नहीं लिख गये ह नाही
मदरपल के नाम मगतों के परे २ नाम मिल हैं माहीं माग्ये के ।

† भी पूज्य मनीरामजी महाराज का जन्म अधिपना के जिले
म एक बहलालपुर नामक नगर पसता है तिस में विमान् १८८०
भाषाट मास में हुआ था कति के वाली क्षत्री दीक्षा १९११ दिल्ली में ।
आचार्य पद १९३९ माटेरवाग्ये में भार स्वगवास १९५८ भाद्विनमास
अधिपाने में, भवितु भी महाराज के पांच शिष्य हुए जैसे कि धारवामा
गंगागमजी महाराज १ भी स्वामी गंगाधरेदिश भी गजपति राय जी
महाराज २ भी चदनी जा कि पूर्व पापादय से सयमसे पतित हागये
३ भी तपस्वी हर्यबन्ध जी ४ भी तपस्यो हीरालाल जी महाराज किन्तु
भी गंगाधरेदिश जी महाराजजी के शिष्य भी स्वामी जबराम जी
महाराज तस्य शिष्य भी स्वामी शालिग्राम जी महाराज तस्य
शिष्य इस पुस्तक के लिखने वाला उपाध्याय आत्माराम नामक हैं ।

स्वामी जी महाराज अथ विजय करते हुए लोगों को मुक्ति पथ का मार्ग दिखलाते हुए दिल्ली में विराजमान होगये और भी ५ कनोरामजी महाराज भी दिल्ली में ही विराजमान थे जो कि भी ५ आचार्य कबीरमन्दजी महाराज की सप्रदाय के थे ॥

तब भी कनोराम जी महाराज ने कहा कि भगवत्सिंह जी आप को व्यवहार सूत्र के अनुसार तुल्य पद के धारक होना योग्य है ॥

क्योंकि व्यवहार सूत्र में लिखा है कि जो साधु दीक्षाभूत परिचार करके सयुक्त होय वह आचार्य पद के योग्य होता है, सो आप तीन ही गुणों धर के सयुक्त हैं मरितु उक्त ही सम्मतिराय शोध बाद मन्त्र अज्ञमेर निवासी जो के पिता जी सुभावक भीमान् लाला भन्धोरमन्त्र जो की भी धो किन्तु पुनः पुनः इहोंन यही सम्मति की कि श्रीश्यामि भगवत्सिंहजी महाराज आचार्य पदों के योग्य हैं ॥

फिर भी कनोराम जी महाराज जी ने यह भी स्थापना की कि श्रीसुधर्म स्वामी जी से लेकर आज पर्यन्त आप के गच्छ में आचार्यों की धनी धनी भाई हैं और आप के गच्छ के आचार्य भूतधारित्र में परिपूर्ण थे पुनः तादना ही आप हैं ॥

तब दिल्ली में भी सप्रदायत्व हुआ फिर भी सच ने उक्त सम्मति सहर्ष स्वीकार करके चारादरी नामक उपाधय में भी महाराज विराजमान थे वहां पर भीसच भी प्राण तब भीसच ने उक्त विज्ञप्ति भी महाराज को करी साथ ही भी कनोराम जी महाराज को थे ॥

फिर भी महाराज ने स्वामी कनोराम जी से कहा जैसे आप द्रव्य सूत्र बार भाव देखें वैसे ही करें ॥

तब श्रीकनोरामजी महाराज ने भी रूप की सम्मत्यनुसार भी स्वामी भगवत्सिंहजी महाराज को *आचार्य पद आरोपण किया ॥

* परम्परा से आचार्य पद देने की यह प्रथाबली भाई है कि

तब ही श्री सध ने दीर्घ (उदात्तः) स्वर को साथ यह उच्चारण कर दिया कि भाज कल मारन भूमि भाचार्य पद से प्रायः दोन हो रही है क्योंकि बहुत से गच्छों में भाचार्य पद की प्रथा उठ गई है किन्तु यह काम सूत्रों से विद्वद् है क्योंकि सूत्रों में यह भाषा दृष्टि गोचर है कि एक गच्छ में एक भाचार्य एक उपाध्याय भगवद् ही स्थापन करने योग्य हैं ॥

सो भाज दिन श्रीसधन सूत्रों प्रमाण के साथ श्री स्वामी भगवद् सिद्ध जी महाराज को भाचार्य पद दिया है क्योंकि इस गच्छ में भगवद्गच्छिन्ता से श्री सुधम्मस्वामी से लेकर आनन्द्य त भाचार्य पद घटा भाषा है सो भाज परम आनन्द का समय है कि श्री वर्द्धमान स्वामी जी के *८६१ पट्टापरि श्री भाचार्य भगवत्सिद्ध जी महाराज

श्रीसध की सम्मत्यनसार जिन मूनि का भाचार्य पद देना हो तब एक सपाडी (चादर) का कसर से विभूषित करके वास्वस्तिनादि से भल्लकन करके भार उस मनिका नाम लिम्बके श्रीसध के सामुख साधु उस चादर का उस मनिका ऊपर द द्ये किए एक मूनि खड़ा होकर भाचार्य के गण या भाचार्य का गच्छ के साथ कैसा सम्बन्ध है और गच्छ को भाचार्य के साथ कैसे घटने वादिये इत्यादि सद्दरस भरे वचनों से भल्लकन प ६ निय ३ पट्ट के सुनाये किए गच्छ यथाभ्यास श्री भाचार्य महाराज का भाषा शिरोधारण करे और इन मान्ति से उपाध्याय गणि गणायच्छदिक, पदों की विधि भी जाननी चाहिये ॥

* श्री भगवान् वज्रम न स्वामी जी के ८१ पट्ट—श्रीमती भार्य पायनीजी छत्र बानदीगिरामस्वन् छत्र श्रीपूजमानारामजी महाराज का ज्ञान चरित्र या इतिहास नाम श्रीमान् जैनमहाशार के सपादक वि० बहोकाळजी छत्र इत्यादि पुस्तकें में प्रकाशित हो चुके हैं ॥

विराजमान हुए हैं और पुनः पुनः जय जय शब्द का भी सघनाद करता हुआ बिहुषों में या पक्षों में तबड़ी से धीपूजापाद श्रीमाचार्य भगवत्सिंहजी मदारराज ऐसे नाम लिखने लग गया तथा तब ही से श्री पूज्य मदारराज धारी भार ऐसे नाम प्रसिद्ध हो गयी किन्तु श्रीमदारराज ने दिल्ली से विहार करके भद्रभूमि विचरत हुए १९१३ वा चौमास सुभामनगर में बिदा हो पद्मवत् कामास में धर्मोद्यान हुआ। फिर कामासे के पद्मवत् श्रीग्याना शिष्यागण मदारराज की दीक्षा हुए ॥

श्री मदारराज फिर राम नगरी में धर्मोद्देश दत्त हुए पटिपत्त्य नामा, मातेरबोटला, गृध्रियाना फलीर पगवाडा आलंधर, कपूर घला गुरदासगढ़ियाला हापादि नगरी में जैनमत का प्रचार करते हुए या गणपतिजी की सेवा रक्षा करत हुए भद्रभूमि में पधारें या लोगों की कति बिहुषि होने से १९१४ वा काम स भद्रभूमि में ही कर दिया ॥

भद्रभूमि उक्त ही वर्ष में—हर्षि के आह्वान विरमचंद्र को दीक्षित किया क्योंकि यह विरमचंद्र राय दंड का शेरमल राय दंड का दमल जी का भाजन साला में रसोय का काम करता था किन्तु वह अत्यंत स्वभाव था समय से पगडमुक्त हो कर भद्रभूमि में ही वे कार्य ही करानेवाला ॥

वह हि श्री मदारराज ने जब हर्षि का अनुचित व्यवहार हुआ तब ही वही गणपति दंड का विरमचंद्र का दंड का दंड टिखेंते ॥

श्री मदारराज का वरत पूरा होना फिर पटिपत्त्य करने हुए श्री पूज्य मदारराज उक्त वर्ष में पटिपत्त्य पूरा होने की कति दिवस होने से १९१५ वा काम स भद्रभूमि में ही कर दिया था यह कार्य बहुत ही दुष्कर क्योंकि दंड का दंड में ही कर देने के सर्व कार्य सम्पन्न होये ॥

फिर घौमासे के पदयात् श्री महाराज ने राहों, नगरों, जेनों, बग, टांडा जालंधर, रत्यादि जगों में परोपकार करके १९११ का घौमास हुशियारपुर में किया स्याद्धादृक्पी घाणी से का भन वण परित्र किया जा लाग दशनाथें अन्य नगरों ये यह श्री पूज्य महाराज का दर्शन करके स्व जन्म को करते थे ॥

जब घौमासा शांति पूर्णक पूर्ण होगया तो माईयों की प्रति शिष्टि से वांगर देश की भार विहार कर दिया ग्राम नगरों में परोपकार करते हुए १९१७ का घौमास सनामनगर में किया घौमासे में पृथक् उद्योग हुआ ॥

फिर श्री पूज्य महाराज घौमासे के पदयात् ग्राम नगरों में घौमासे देश करने लग ।

किन्तु उन दिना में श्री स्वामी रामवशजी महाराज वा शिव शब्द्रादि साधु यमना पाए के क्षेत्रा में विचरत थे ॥

अबिल भामाराम मा मध्यल स भाकर श्मश्रुस्थ में स्थित जा श्रीरामवश जी महाराज के दर्शन करने का अनिलापी था कथें श्रीरामवशजी महाराज अन विद्या में परिपूर्ण थे किया में भति तीक्ष्ण थे श्री मा मागन भी धन विद्या के पाने वास्ते इनके पास ही भागये श्री स्वामी ज न प्रम पूज्य ११७७ विद्या का दान किया ॥

* मध्यन् १९१४-१५-१६ १७ —म मा कई दीक्षा हुई हैं किन्तु दाभा वत्र मध्य न मित्र के कारण स हो नहीं लिया हैं कइ विबुध न दीक्षा वत्र शिन्धु/दिवा के दा पाग थे ॥

† भामाराम के प्रेदन परित्र में लिया है कि १९१८ का घौमासे के पदयात् भामारामजी न रामवश विद्वत्साधु साधु

जीर भी पूज्य महाराज ने बहुत स भव्य जीर्णो को समुमार्ग में स्थापन करके १९१८ का बीमासा पटियाला में कर दिया। सो बीमासा में लच्छा शिखाराम (भी हज्जदार) नागरमल्ल, दलनमल्ल करोडा लाल बागीराम, दीवान लाला धनैरामल्ल, इत्यादि माइयों ने जैन धर्म का परमोद्योत किया फिर भी पूज्य महाराज बीमासे के पदवात् ग्राम नगरों में धर्मोपदेश देने लगे अनुक्रम विस्तारते हुए दिल्ली में पधारे जिन वाणी का प्रकाश किया हाग स्वावधान सुन के परमानन्द होने से फिर बीमासा की विह्वल करके लगे विन्त भी महाराज जयपुर की ओर विहार कर गये ॥

जब भी महाराज जयपुर में पधारे तो नगर में परमोत्साह उत्पन्न हो गया बीमासा की विह्वल होने लगी तो स्वामी जी न १९१९ का बीमासा जयपुर में ही कर दिया ॥

धर्मवृद्धि मतोव हुए भवित् बीमासा में ही स्वामी गणेशदास वा स्वामी जयचन्द्र जी को भीपूज्य महाराज ने दीक्षित किया। क्योंकि भी महाराज जी का ऐसा वैराग्य मय उपदेश था कि मध्यजन सुनते ही ससार मार्ग से मयमान गये हुए बीमा के लिए उद्यत हो जाया करते थे पुनः दीक्षित हाजर मुक्ति पथ की किया के साधक बनते थे। किन्तु भी महाराज बीमासा के पदवात् अनुक्रम विहार करते हुए पुन दिल्ली में ही विराजमान हो गये। तब ही धर्म के प्रकाश करने हारे पासड मार्ग उपायक ना। पहर बोधा के लिए दिल्ली में ही उपस्थित हुए

को आचारान सूत्र अनुपाग द्वारसत्र जीयाभिगमादि सत्र पढाये। सो यह निवेदन अनुचित लख है क्योंकि परम पंडित भी स्वामी राम बक्षजा महाराज से आत्माराम जी विद्या पढते थे और स्वामी जी की सहायता से पञ्चाक्ष दश में विचरना चाहते थे। परन्तु चर्चार्थदाइय भाग दतोव के पृष्ठ २७ में पर लिखा है कि आत्माराम जी का बहुधा यह स्वभाव हो था कि दूसरे को बोध देना इत्यलम् ॥

ऐसे कि नीलापतिराय जी । धर्मचन्द्रजी दूलेलमल्ल जी, जब इन्हों ने भी महाराज से विज्ञप्ति करी की हमको दीक्षा प्रदान करो तब भी महाराज ने तीनों को ही मोहित करके श्री स्वामी रामबक्ष जी महाराज के शिष्य कर दिये किन्तु "श्री धर्मचन्द्र जी महाराज की बुद्धि परम

* स्वामी जी का जन्म १८९४ माघ मास गुरुपक्ष १३ बुधवार का था स्वामी जी का जन्म कडली से यही सिद्ध होता है कि यह महामा जी परम पंडित वैराग्य रूप थे ॥

जन्म कुडली इदम्



चलन चक्र मिद



तीरन थी जित्त करके मन्मथस्यमं ही पंडित की उपाधि से विभूषित होगये। जिन्हों ने अनेक बार भामाराम जी की कृतियोंका अहन किया था बहुत से मन्मथजीवों के हृदय कृतुक्तियों करके जो विह्वल होगये थे तिन की कृतुक्तियों का भाग्य करके तिन के हृदय रूपी कमल में सम्यक्स्वरूपी सूर्यस्थापन किया था ॥

क्योंकि भामाराम जी का अनुचित मापण करने पर मन्मथस्य कुछ न्यून नहीं था फिर प्राप्ति हो लेख लिखते थे जैसे कि ॥

भामाराम जी के जीवन चरित्र के—४४ वें पृष्ठोपरि लिखा है कि—रामवन्ध जी ने भामारामजी से माघीनगा के साथ प्रार्थना करी कि भाव इस मूलक पत्राय में आगये हैं और मेरे गुरु मारवाड को धले गये हैं इस वास्ते भावने इस पत्राय देश में और लगा कर अजीय मन की जड़ काटने रहना इत्यादि सो यह उक्त लेख निश्चयल असत्य है क्योंकि वन दिना में भामारामजी भोस्वामी रामवन्धजी महाराज की सहायता से पत्राय देश में फिरना चाहत थे स्वामीजी से विद्या भाग्यदान करते थे किन्तु स्वामात्रिक गुण त्यागना दुस्कर है ॥

इसी वास्ते अनुपस्थिति निर्णय शस्त्रोद्धार के पृष्ठ ५ पर लिखा है कि त्पारेण भोममदावादाना साधना तथा भीसपना धावका ना मुख धी धार्ता समिती के भामाराम जी से उत्तम मापण करवानो तथा बीटो ने फरीशवागो कडा विचार नथो ने महकार नू धूलु छने अमेसारी पेठ जानीए छीए, इत्यादि यह सब तपगच्छाधिपति का हो है किन्तु भो मारवाड न प्रथम ही माला काटले म माइयो का कद दिया था कि—इन क्रियामों से यही सिद्ध होना है कि यह काठक धन पय में दिप्त करेगा सो ऐसे ही दान के चिन्त दिवत लग। क्योंकि विद्यमन्त्र १८—१९—२० के—अनुमान में पूजकों के प्रयोग से महत् भाषित सिद्धान्तों में भामारामजी को अधिका दान रूपा मुनिवृत्तों से अर्द्धि हुए मिथ्यामेइनीके बल से ऐसी भाग्ये उपन हुई कि वदिवन

मर्थों में दर्ज हागर्ज जैसे कि : 'नैन शास्त्रां मे दयेन यत्र धारण क्य
को भाशा है किन्तु आत्मारामजी की आशा पीनाम्यर धारण
गर्ज । जैनशास्त्रों में मुखपत्ति नामसे लिखी है तिस का मर्थ हो
कि जो सदैव ही मखड़े साथ लगी रहे तिसका हो नाम मुखपत्ति है
किन्तु आत्मारामजी ने यही मत में निजय किया कि मैं तो दाघ में
पत्ति को रक्खुंगा । तथा जैनशास्त्रों में मूर्तिपूजा का शिश्चिन् भी क्य
वा विधान नहीं है अपितु आत्मारामजी ने यही विचार किया कि
अब हाग कुछ जागने लगे ह फिर भी इन लोगों को एक मझानू का
रेरना चाहिये मर्षान् सूत्रों में जिस वस्तु का विधान नहीं है, उस
का ही उपदेश करना मुझ योग्य है इसी वास्ते आत्मारामजी ने मोक्ष
कर्म की प्रयत्ना से अजोय पदार्थ में जोय को धर्या करलो ॥

और महात्मा आत्मारामजी क लेखों से यह भी सिद्ध होता है कि
आत्मारामजीने विचार किया कि जैन सूत्रों में कहीं भी असत्य मान
करने की भाशा नहीं है किन्तु अब किसी म-यपत्ति से काम करना शक्ति

इसी वास्ते आत्माराम जी मध्यतन्त्राद्योद्धार के पृष्ठ २४१वें प
लिखत है कि-अपवाद मार्गमाभूषा षोल्धानी आस्थापनछे, इत्यारि
शक्त्यै मन्यमो उत्प न भुर्र किन्तु यह धार्तार्य आत्मारामजी के मत
में थी अपितु व्यवहार गुज रखा हुआ था सो १९२० का घौमासा मास
रामजी ने भागरे शहर में भीमान ५० रत्नचद्र जी के पास किया
विद्याऽप्ययनार्थे, फिर बहुतसूत्र या सस्कृत भाषा के मयचत्रादि प
करे घौमासे के पदगान् विहार किया किन्तु धर्नायत्वाप्रकृत्य से वि
नहीं करते थे । असे कि आत्माराम जी के जीवन चरित्र के ४५ वें पृ
परिलिखा है कि स्वामी रत्नचद्र जी ने आत्माराम जी को यह शि
ही कि एक तो धी जिन प्रतिया को कमी भी तिन्का नहीं करती
दूसरा वेनावहरके बिना धोषा दाघ कमी भी शास्त्र का नहीं छगाना
और तीसरा मयने पाम सदा दधारकन-३ मने मुझ को धी जैनमत
असद्वसर बताया है तथा मुखपत्ति १५० दद साथय से हमारे बहो

मुखपरी कही है और मेरे बड़ों ने अनुमान होसी (२००) वर्ष से बापनी
 पुत्र की है यह अनुमान अनुमान सय दो सौ २२५ वर्ष से बिना मुख
 अपने भाप मन बलिप देवधारणवाके निवाला गया है इत्यादि यह
 लेख असमर्थ है क्योंकि आ प्रथम लेख प्रतिमा विषय लिखा है कि
 प्रतिमा वि निश मवानो हम लेख में हम भी सम्मन है, इससे यह
 भाविद दाता है कि आमागम ओ प्रथम प्रतिमा को निश वरत होगे
 तमी तो उहने निश दी कि मुनिजनों को क्या भावश्यकता है। कि
 अब की निश कर किन्तु आमाग प्रतिमा का मदत की सदस्य मानते
 है पुनः अब में जीवत की सजा ५ म्म करते हैं पूजा की सामग्री से उसे
 प्रसन्न करते हैं उसके विषे मरि की प्राप्ति करते हैं अथवा उसके
 सम्मुख बाहिष वजाने हैं इत्यादि क्रियायें निर्यात माग को पुष्ट करती
 है इस प्रकार महात्मा उन उपदेश करत है मननिदा। सो यदि आमा
 राम जी के आगवानुसार ५० रत्नचद्र जी का भावय जाना तो उनके
 दिव्य (उनकी मप्रदाय क) स्वामी अविगात्र जी सत्य र्थ सागरादि अथ
 वारेको बजाने जिस में मूर्तिपूजा की अब काटो है। मयान् मूर्तिपूजा का
 मुक्ति या शान्तिनुष्टुप्ति विषय लिखा है इस विषय आमारामजी का माग्लेख
 प्रथम निशारूप बलिग है। दूसरा लेख लिखा है कि—स्वामी रत्नचद्र
 जी ने कृपा करी कि—पदाव करक बिना हाथ पाय कनो भी शाल को
 नहीं लगना दिवगय भाप स्वय विचार करें कि अब उक्त कार्य
 आमाराम आ करते होगे तमी तो ५ जीन निश दी है। और इस
 लेख से यह ता रजता ही सिद्ध है। त्पत्रक वासी महात्माजन आमा
 रामजीका पुनः पुन निश दी करने से ऐसा काम मन दिया करा। क्योंकि
 जिस शाखा में भावराज आ जाना चाहने थे या जिस शाखा के ग्रन्थ
 भी पने थे उस शाखा में उक्त कार्य मयोग्य नहीं बतलाया है।

उदाहरण ओ प्रतिग्रन्थ सूत्र थायक मोमसिद्धमात्र के द्वारा
 प्रचलित हुआ तो सम्यन् १२५१ माघवरी १३ मोड़ मयो में। जिस ग्रन्थ के
 ४७१ से ४७२ परियह गया लिखा है जैसे कि । -

साहमे भत्तोसफलाइ साहमेसुठिजीरअजमाइ
महुगुडतचोलाई अणाहारेमायनिर्वाइ ॥ १८ ॥

जिनके भय में यह लिखा है कि गो से ले कर सर्व जिनके मनिष्ठ
मूत्र उपयामादि कृत्या में पीन कल्पते हैं क्योंकि महन् के मन में
उपवास में चानुराहार का नियम है किंतु मूत्र भण्डार है ॥

तथा भोर मो दमिये—भास्त्र दिन कृत्य १८७६ ई० बनारस
जैनप्रभा करप्रेस का प्रकाशित हुआ जिनके ३६ वें पन्नापरि लिखा
है कि—भायक साध का दो प्रकार का पात्र द्ये । एक आ
भाहार का पात्र । दूसरा प्रघ्राय का पात्र २ इति यद्यनान्भव
सुब्रज्जन धियार करेंग कि—जय सवेगी मनि प्रघ्रायका पात्र रखते हैं ।
तथा जय ये विनारादि क्रिया करते ह तिस समय धं क्या करते होंगे ।
क्याकि भाहार क पात्र क साथ प्रघ्राय के पात्र का स्पर्श कराते हैं वा
नहीं यदि कहोगे हम प्रघ्राय का पात्र नहीं रखते हैं तो आप अपने पुरा
वाक्यों स रिख्य हुए । यदि कहोगे हम भाज कल नहीं रखते हैं ।
तो हम कहते हैं भाय के बद् पूर रखने धं क्योंकि तनी तो भायक
को प्रघ्राय का पात्र देने की आज्ञा लिखी है । यदि कहोगे
यह लेख हमको भ्रममाण ह । तो हम कहते हैं जो इन ग्रंथों में पूरा
की विधि क मन कल्पित लख लिखे हैं तो उनका प्रमाणिक क्यों
मानने न

यदि कहोगे हम आज्ञादि क पात्र न स्पर्श नहीं कराते । सा
यह वाक्य न भ्रममय है क्याकि पात्रा का समूह तो आप एक ही
स्थान पर रखते ॥

तोसरा छेक भाभाराम जी का दह है कि । पट्टिनराजबद्ध जी न कहा कि दह हाथ में सदा रखना सो घर भी कथन असीमित है कथाहि—यदि प० रत्नचन्द्र जी को दह रत्न में की भद्रा होती तो उनके गण्ड में दह मथा अथवा हो चल पड़ना किन्तु उनके गण्ड में बल भद्रा का माय सर्वथा भगवत् है क्योंकि बृद्ध शरीर के लिये सूत्र में दह कहा है मपिन्तु सत्य व लिये महों क्योंकि जब भर्तृत्वं व मन में रत्नाहरण का दह बिना यत्न व घट्टन किये रत्नमा नहीं बदलता है कि बोई जीय मय न पायं ता मला दह की आहा सदैव बाल व लिये कैस समथ होमली है किन्तु सवेगी लोचदह स जा काम लेते हैं उसका अदाहरण स निदधय कर लीजिये यथा । श्रीगणायचार्यदि व ५ गणपतिरायजी महाराज भीस्वामी जयराम जी महाराज भास्व मो दाटिग्राम जी महाराज स्थाने पञ्चक बत्तूर मास १९५१ का भवाले नगर में था । उस काल में ही अदनयितय नामक पथ सवेगियों का भी धामासा भवाले में ही था । तो एक दिन की बात है कि एक सवेगी हाथ में दह लिये जा रहा था तो एक मार्ग में महिष कड़ी हुई थी ता उम दंडो ने बह हो बल के साथ एक दह महिष के मारा तो महिष दह खाते ही माग गर माग स्पष्ट हो गया तो जब सवेगी महाशय ने पीछे का देखा तो दो साधु धीरशासन के इष्टि गाधर हुए तो दह दही भी शीघ्र २ घटके भाग गया ॥

अब पाठकगण अवश्यमेव ही विचार करेंगे कि सवेगी लोग दह स इत्यादि काम लेते हैं किन्तु दह लाग सवेग पथ से भी पतित हैं क्योंकि इनके ग्रंथों में १ एक सवेगी को पथ दह रखने की आहा है परंतु दह लाग एक ही दह रखते हैं यथा भास्वदिनद्वय प्रथ के ३१५ पत्र को प० ॥ पथ दह विवर्णाधिकार ॥

भागो जीवन चरित्र में टिका है कि—हमारे बड़ों ने १५० वर्ष से मुक्त घर मुक्तपती बांधी है तोरे बड़ों ने २०० वर्ष स मुक्तपदिमुक्त

एहेवुत्तपाठ्युत्पारे विद्याशालानी वेठकना

भारकाए भात्माराम जीन पूजा साहेब भाप मापति बाधनी रुडो चापोछो तो बाधन जेम मधी तयार भात्माराम जी एतेने पोतानारागि करवाने कछ के हम इहा से विहार काले पोछे बाधगे । इत्यादि प्रिय गण । जव भात्माराम जी व्याख्यान के समय मुहपति बाधनी अच्छी जमने हैं तो इसने सिद्ध हुआ कि जा पुकर सद्य ही मुखोपरि मुह पती या ते ई घ जिन जनकूल काम करते हैं क्योंकि जिन लिङ्गदाने से । तथा गजगान दश मै प्राय दूरेगायत्री की सप्रशय के बिना शेष सर्व सरेगी लोग मुहपती बाध क व्याख्यान करने ह तथा कित मेक सवगी लोग अपन मापका साध नहीं मानते ह सो यह अच्छे ह क्योंकि वह भसाव भापय स बचाव करते हैं सो भात्मारामजी के कथन से ही मुहपति सिद्ध है मुखोपरि बाधनी । तथा साम्प्रति काल के विद्वान् मो जैनमन का घप मुहपती काले मुख बाधना ऐसे मानत ह दखिये जगत् प्रसिद्ध सरस्वती पत्र । एप्रिल १९११ माग १२ सवरा ४ ॥ सगदक मश्वीर प्रसाद द्विवेदी—इडिपनग्रेस—प्रवाग से जा प्रकाशित होना है । जिसक २०४ पत्र परि स उद्गाचार्य का बिश्व दिवागया है जिस म द्वादशमा बिश्व धामादिनाथ (श्रुपनदेव) मगवान् का है जिस बिश्वपरि मगवान् मुह पर बाधो हुई है मर्यात—भीश्रुपमदेव मगवान् क बिश्व क मुखोपरि मुहपती बाधो हुई है ऐसे बिश्व जैनमन का दिवाया गया है । सो पाठकवृन्द ! जव पर मन वाले मो चेतमन का घेप मुखोपरि मुहपती बाधना मानते हैं और भी जैन भी उतराखयन सूत्र, भी मगवनी सूत्र भी प्रदन व्याकरण सूत्र, भीनशीय सूत्र इत्यादि कूत्रों में मो मुनि का लिङ्ग मुहपती माना है तने भात्माराम जी का लेख मुहपती निषेध हठ है । तथा पंडित रत्नचन्द्र जी की धर्या यदि भात्माराम जी के लिगे मनुसार होतो तो उनके बनये मोछ मागदि मर्षों में वह भद्वान् भवस्य ही पयाजाया

किंतु उनके बनाये प्रर्थों में उक्त अक्षर का लेश भी नहीं है अपितु श्री
मान् पद्मिनीजी महाराज के हाथ का लिखा हुआ एक हमारे पास जीर्ण
पत्र है जिस में देव गुरु धर्म के विषय में लेख लिखा है। यह मर्म्यजीवों
के दर्शनार्थ जैसे लेख है तैसे ही (प्रतिरूप) (नकल) लिखा जाता है
जिसका पढ़के मध्यजन स्वयमेव हो श्रावक रहेंगे कि श्रीप० रत्नचंद्रजी
महाराज का क्या आशय था। मध्य देवगुरु धर्मनी सच्चा लिखीय है—

१—देवसम्यक्तदृष्टि के मिथ्यादृष्टी ।

२—देव ज्ञानी के भ्रमानी ।

३—देव सम्यगी के असम्यगी ।

४—देव प्रत्याशयानी के अप्रत्याशयानी ।

५—देव सज्जती के असज्जती ।

६—देव वृत्ति के अवृत्ति ।

७—देव एकेन्द्री के पञ्चिन्द्र ।

८—देव ब्रह्म के स्थावर ।

९—देव मनुष्य के निर्यथ ।

१०—देव सागर के भगागर ।

११—देव सूत्र के वादक ।

१२—देव परिग्रहधारी के अवर्तिग्रहधारी ।

१३—देव माहारिक के भगमाहारिक ।

१४—देव भाषक के भभाषक ।

१५—देव शीतरागी के सरागी ।

१६—देव हाथ पुष्पशिलेण मानी के भमोनी ।

१७—देव ८ मास ४ मास विहारी के भविहारी ।

१८—देव चौधेभारे के पचम भारे ।

१९—देव शब्दधोता के अधोता ।

२०—देव घर स्थनाया के स्थिर स्थनायी ।

२१—देव पासगया के भपासगया ।

- २२—देव सर्वज्ञ के असर्वज्ञ ।
 २३—देव ८ कर्म सयुक्त के ४ कर्म सयुक्त ।
 २४—देव सत्नी के असत्नी ।
 २५—देव ४ प्रजा के ६ प्रजा ।
 २६—देव १० प्राण के चार प्राण ।
 २७—देव मुखगामी के ससारगामी ।
 २८—देव १३ गुणस्थाने के बीघे गुणस्थाने ।
 २९—देव शुक्ल रेशी के भलेरी ।
 ३०—देव पुष्य वेद स्त्री वेद के नपसक वेदी ।
 ३१—देव उपदेश वेद्ये के न द्ये ।
 ३२—देव रोमाहारी के कवलाहारी ।
 ३३—देव हन गड के भहन गड ।
 ३४—देव मुक्त के धमुक्त ।

गुरु ।

- १—गुरु हितक के महितक ।
 २—गुरु सत्यवादी के असत्यवादी ।
 ३—गुरु भक्तप्राप्ती के वक्तप्राप्ती ।
 ४—गुरु कनक कामनी के रयागी के भत्यागी ।
 ५—गुरु परिग्रहधारी के भद्रप्रदधारी ।
 ६—गुरु प्रतिपक्षक के अप्रतिपक्षक ।
 ७—गुरु धर्मोद्देशी के हिंसा उपदेशी ।
 ८—गुरु भावही के भयावही ।

धर्म ।

- १—धर्म जीव हिंसामे जीवत्या मे ।
 २—धर्म बाह्य के अहाम म ।

- ३—धर्म दर्शनमें के भद्रान में ।
- ४—धर्म चारित्र्य में के भक्तचरित्र में ।
- ५—धर्म आध्यात्म के सम्यक् में
- ६—धर्म निजरायों के यथार्थ में ।
- ७—धर्म १२ भद्रों तपस्यामें के भक्तपस्या में ।
- ८—धर्म भगवान् की आज्ञा के आज्ञावादि ॥

पाठकगण ! यह सब ५० जोके हाथ के लिखे हुए पत्र की तकल है आप स्वयं विचारें कि आत्माराम जीके हस्त का कितना अंतर है इससे सिद्ध होता है कि आत्माराम जी कृष्ण प्रकृति नहीं थे किन्तु हठ धर्मी थे ।

इस घास्ने चतुर्थ स्तुति गजोद्धार के २८१ वें पृष्ठोपरि लिखा है कि कमके आत्माराम जी आनन्द विजय जीन समझाने भर्षे जा कदाच महा विद्वत् क्षेत्र थी केरली भगवान् भाग्ये दोतो समय तो न थी इत्यादि सो पूर्व कमा क बल से आत्माराम जाक वित में अनेक सदाय उत्पन्न हुए जो कि यथा स्थान पर दिखलाय जायगी भवितु भी पूज्य महाराज जाने १९२० का चौमासा दिहली में हो कर दिया सो घमौंजोन मनोष हो हुआ ॥

सो चौमासा क पदचात घोमान महाराज अनुक्रम से विहार करते हुए नामा दाइर में पधारे सो नामा नगर में ५ ताय चौमासा की विहाप्तहुई गो गोसवाल वा भगवाल मारथों के अनि भागद स १९२१ का चौमासा नामा नगर में हो कर दिया । भयपाठकों का यह भी दिखलाते हैं कि पूर्व कर्मोदयसे आत्मारामजी की धृष्टा पडावदयक से भी रिपम होगी क्योंकि भी भगवान् वदमान स्वामी से भयपि पद त पडावदयकारनकल जो आयदयक क्रियानुष्ठान चली जाता है उसके भा मिरया समझन मो किन्तु जो कल्पित आयदयक भार

निम्न भाषाएँ मूल्यों को ध्वन्य रूप इस में दखि धनने की
कही कि भी भगवान् की अक्षमागधी भाषा है ।

तथा—भी समवायांगी सूत्र स्थान ३४ ।

सूत्र—अक्षमागधीभाषा धम्ममाइवति २२
सावियाण अक्षमागधी भासा भाविज्जिमाणिने
सिस्तवेसि आयरिपमणा रियाण दुप्पय चउप्पयमिग
पसुपन्निवसरिसिवाण अपणा दिन सिवसुहवाए भास
ताए परिणम्मडं ॥ २३ ॥

अस्याः —भीसमवायांगी की सूत्र के ३४ वें स्थान के ।

२—२३ वें सूत्र में यह लिखा है कि भी भगवान् की अक्ष मागधी ही
भाषा है अर्थात् भगवान् अक्ष मागधी भाषा में ही धर्म दिया करते
हैं सो यह भाषा मध्य अन्त्य द्विचतुष्टय मूल पशुपति स्यादि
सर्व जेव भवतः भवनो भाषाम ही समझ जाते हैं ।

तथा प्रमाण सब के प्रथम पक्ष में ऐसे कथन हैं :—

सूत्रम्—सेवित्ति भासायरिया, भासाय रिया
अणेगावेहापणत्ता तज्जहा जेणअक्षमागहायभासाए
भासति जयण वभीलिवापवत्तई वभीणलिविए
अठारम्मविहेलह विहाण पत्तवभी १ जवगालिया
२ दामा ३ पुरिया ४ खरोटी ४ पुक्खरमारिया ६
भोगवड्या ७ पहाराट्या ८ अनकवरिया ९ अक्षर
पुठिया १० वेणड्या ११ णिसड्या १२ अकलिवी १३
गणिनलिवी १४ गणव्वलिवी १५ वादशलिवी १६
माहेसरी १० दामिल्लपोलदी १८ सेतभामाय रिया ॥

अर्थार्थः—शिष्य प्रश्न करता है कि हे मागधन् मागधय कौन हैं ? शुद्धउत्तर देते हैं कि हे शिष्य मागधय के अनेक भद्र हैं किन्तु जो भद्र मागधी भाषामाषण करते हैं वे भाषाय हैं और जो *मघीठिपी के मन्दादश भद्र हैं मघीठिपी के साथ ही भद्र मागधी भाषा का प्रयोग होता है वेभी भाषाय हैं ।

तथा भी विवाह प्रज्ञप्ति सूत्र के पञ्चम शतक के चतुर्थोद्देश में यह सूत्र है ।

यथा—देवाण भतेकयराए भासाए भासति
कयरावा भासा भासिउजमाणी विस्समनि गोयमा
देवाण अद्धमागहाए भासाए भासति सविण अद्ध
मागहा भासा भासिउजमाणी विस्ससनि ।

इतिवचनात् ॥

अर्थार्थः—भी गौतम प्रभू भीमगन् भीरुर्दमान स्वामी से पूछने हैं कि हे मागधन देवत कौनसे भाषा माषण करते हैं तथा कौनसे भाषा माषण की हुई देवतों को प्रिय लगता है ? तब मागधान उत्तर देते हैं कि हे गौतम देवते भद्र मागधी भाषा माषण करते हैं मघी भाषा माषण की हुई देवतों को प्रिय लगती है ।

तथा हट्टरसाधिय भषण रचे सक्षिप्तहिन्दुस्तान के इतिहास में लिखत है कि हिन्दुस्तान में मूलमाय पराणो प्राकृत है तथा उद्भट प्रणोप शास्त्रालंकार में टिप्पणी करने में लिखत है कि प्राकृतभाषा सर्व भाषाओं से प्रधान है ।

● यह मन्दा दश मघीठिपी भेद किसी स्थान पर सविस्तर उल्लेख देखने में नहीं आये हैं इसलिये नहीं लिखे हैं मूल सूत्र में ता केवल नाम ही हैं -

तथा हिंदुस्तानका इतिहास इदं कथं प्रमाणमस्ति एवम् ए० मी सर्वे भाषाओं से पुरानी सब भाषाओंको माना *प्राकृत ही है अर्थात् सर्व भाषा प्राकृत से निकली हैं ऐसे लिखने हैं तथा यह व्याकरणका कृति कर्त्ता युरीविदन विज्ञान् मी पूर्वजन् हो लिखता है सो यह भाषाभी भाषा अनन्य अर्थ की सूचक है इसीप्रकार गणधर दधोने भाग्य प्राकृत वा भागधी भाषा में ही रच है भार भाषाद्वयक कियारे मी भागधी भाषा में ही रची हैं। किन्तु जो तपागठियों का भाषाद्वयक है वे सर्व भागधी भाषा में नहीं है अपितु सरहूत । प्राकृत, मारवाडी, गुजराती इत्यादि निम्न भाषा में हैं सो इसीवास्ते वह गणधर कृत विहित नहीं होता ॥

अरि भी अनुयोग द्वार जो सब में बड़ापरदक के विषय में यह गाथा लिखी है :—

यथा —सावज्ज जोगविरडं उक्कीतग गुण वउ पडि वत्ती खलियम्म निदण वण निगिच्छु गुण धारणाचेव ?

भावार्थ —भाषाद्वयक सूत्र का सावय याग निर्वृत्ति रूप प्रथमा व्यापक है १। अनुविशति रूप की स्तुति रूप द्वितीयावय है २। गुणधर्तों को वदना रूप तृतीयावय है ३। पाप से प्रतिजन रूप अनुयावय है ४। पाप का भण्डावना रूप पञ्चमावय है ५। प्रत्याख्यात रूप षष्ठ्यावय है ६। सो यह सर्व भाषाद्वय विद्यमान हैं किन्तु सबेगी लोगोंने बड़ावदयक में मन अनियत थाय वदना व्यापनावाच्यं व्यंज रादि देवों की स्तुतिमें लिख धरी हैं ।

* हिंदी भाषा की उत्पत्ति नामक पुस्तक में सम्यक सरस्वती एव महाशेर प्रसाद द्विवेदी जी भी प्राकृत भाषा की बहुत ही प्राचीन लिखते हैं ॥

मा आमाराम जीकी भ्रष्टा सनातन पट्टादिक से मो प्रियम हो गई मनः कल्पित भाष्य से परि भ्रष्टा बूढ़ होगई ।

अब आमाराम जी मालेरकोटले में भाए ता बिदनचन्द्रादि साधवा को मो सम्यक्तर से पतिव किया क्योंकि इसी घास्ते सूत्रों में लिखा कि (कूसग क्या क्या नहीं अकार्य करता) अर्थात् सर्वही नश्य इसी से होते ह किन्तु जो आमारामजी के जन्म चरित्र में यह लिखा है कि बिदनचन्द्र ७ पेशाव से हाथ धाए आमाराम जो ने उस को बहकिया ।।

प्रियपाठकगण ! यह सर्व असमजसही लब्ध ह ! क्योंकि आमाराम जी का यह बहूधा ही स्वभाव था कि अपना दाए पर के शिरधरना इत्यर्थ ॥ मोर यह प्रथा सवेगी लोगों में अब तक मो प्रचलित है किन्तु इस का प्रमाण भागे लिखेंगे अपितु यह सवेगी लोग प्रायः असत्य लिखने से मिश्रित मो नय नहीं करते दखिये यच्छां घन्टोदय भाग तीसरा पृष्ठ १२ पंक्ति ७ एक सवेगी साधु जी के जितने पत्र हमारे गुरु महाराज के पास भाये सब झूठ लेखों से सरा सर भरे हुए थे, इत्यादि सो आमाराम जी की भ्रष्टा पूर्ण कर्मा की महत्त्वता से छिन्न निम्न हुए इधर भी आचार्य महाराज जी का १९२१ का चौमासा नामा नगर में आनन्द पूषक स्थित हो गया फिर भी पूज्य महाराज भ्रामानुजाम विचरते हुए तथा जय पताका हाथ में लेते हुए मालेरकोटला, लधियाना फलौर, फगवाडा जालधर, कपूरस्थला इत्यादि नगरों में घूमोपदेश करके १९२२ का चौमासा भाष्यों के मतीव भाषह से गुरु के अडिआले में हो कर दिया । मैं इस घातका पर्यलिख चुका हू कि पर्य कर्मादय से आमाराम जी का वित्त सम्पत्त्य मे ता पराङ्मन हो ही गया था किन्तु अब प्रायः मैं मो प्रवृत्ति आमाराम जी को भविष्य हो गई जैसे कि आमाराम जी के जीवन चरित्र के ४७ पे पत्राति लिखा है कि नवावि

भात्मारामजी ने विचार किया कि इस समय कूल पंजाब देश में प्रायः दूधमनका जैरह भीर में बसेला गुद्ध भद्धान प्रगट करुगा तो कोई भी नहीं मानेगा इस घास्ते मइर शुद्ध भद्धान रख के बाध व्यवहार दूधर्ष का हो रख के कार्य सिद्ध करना ठीक है मइसर पर सब भज्जा हो सारंगा ! इत्यादि !

पाठकगण ! उन लेख से स्वयमेव ही विचार करें कि भात्माराम जी माया में भी कैसे प्रवीण थे मला गुरुनाका यही लक्षण है या साथ वादियों का !

तथा भी सूत्र हुआग के प्रथम धृत सूत्र के द्वितीयाध्याय के प्रथमादेशक की ९वीं गाथा में लिखा है कि :-

जइविषणि गणेकिमे चरे जइविषभुजइमान-
मततो जेइह मायार्हमिज्जई आगनागभाय अण
तमो ॥ ९ ॥

अर्थार्थ :- यदि कोई नम्र भी हो जाये शरीर को छरा भी करे देश में भी विवर मत्त २ व १ नरे भी माहारे कर यदि पत्तो वृत्ति युक्त हाकर भी छज करे तो मन्त काल पर्यन्त नर्मादि में प्रवरा करता है ।

प्रिय मित्रगण ! भात्माराम जी ने उन सूत्रोक्त कथन को भी विस्मृत कर दिया !

किन्तु जनोराम जी मइरात्र भात्माराम जी को मिले तिही ने भी प्रभुमाराम को बहुत दिन शिक्षा दी !

किन्तु भात्मारामजी का उन शिक्षामों से कुछ भी लाभ न हुआ अपितु अनेक प्रकारकी बातों से भात्मारामजी ने विदग्ध इति साधम को भी सम्यक्त्व से पतित किया !

इस कथाश्रवणके अनुसार आत्मारामजी का ध्यानमें उत्सर्ग भाषण करने लगे तब श्रीपूज्य महाराज ने यह लाला सादामरमकर (जो कि स्थाल काट से भी पूज्य महाराज जी के शिष्याय भाये हुए थे) ॥

निर्दोष मा आत्मारामजी का बहुत ही दिन शिक्षाये दीं और श्रीमहाराज ने आत्मागम को यह भी कहा कि—हे शिष्य यह मनुष्य मय मित्रता पत पत दुर्लभ है दिया धन से ही आत्मा अनादि काल से परितोषित करना चला आया है एक यम भी सूत्रका मन्यता किया आवे तो आत्मा अनन्य मयों का कर्म पश्य कर लेता है ॥

और तू कष्टों भयों का अनर्थ करता है यदि तुझे किसी बात की शङ्क है तो तू निराप कर ले या शास्त्र द्विगोचर पढ़ ले ॥

तब आत्माराम विद्वान्द्रादि साधुओं ने श्री पूज्य महाराज का चरण कमल पद पल्ले लिये पुनः हाथ जोड़ के कहने लग कि हे महाराज जा हमारा भाव के दाम है जो कुछ भाव की भ्रष्टा है तो हमारी है जो हमने सूत्र से विद्वद् कहा है निमका हम का यथा न्याय प्राप्ति दिवस दें या क्षमा कर दें इत्यादि पत्र भ्रष्टा करत दुर्भाग्य का तब भी महाराज ने यथा धाम्य दंड दे दिया ॥

फिर उन्होंने ने अपने भाव ही एक पत्र लिख कर श्री पूज्य महाराज को दे दिया ! पाठकगण पत्र इस लिये दिया मित्र होता है कि ! उन्होंने यह विचार किया हागा कि पत्र लिख कर देने से हमारी प्रताप ठीक २ श्रीमहाराज के विस में पड नापगी क्योंकि जब प्रतीत हो आवेगी तब हमारा कान निर्विधना से हावना भवितु पत्र भी नामादित करके दिया ॥

सो मनुष्य जायों का इस स्थान पर उक्त पत्र की प्रतिकृति (नकल) लिख कर दिखाते हैं ॥

जिस के पत्रों से पाठकों का भला भाति निश्चय होजायगा कि विद्वान्द्रादि साधुओं की विद्या बुद्धि कैसी थी ॥

किन्तु पात्र वृद्ध या स्वयमेव ही स्नान करने होंगे कि विद्वत्
श्रादि गत हो यों के स्थान की भी खबर नहीं हो क्योंकि यदि
विद्वत्श्रादि गत हो यों के स्थान विदित होते तो फिर यह वृद्ध
स्थान के यों की अगर मज्जन स्थान का यम कहीं टिखते ! जैसे कि
(लिखते) दाढ़ को लिखत दाढ़ कहीं लिखत यदि कोई यह कदा करे
कि आत्माराम जो वे दम्भाहार नहीं हैं तो बसना यह कदा है कि
आत्माराम जो वे यह भी आपनराम जो महाराज जो वे जो दसगुण
हैं ना आत्माराम जी को क्या भावना करना था ।

तो आत्माराम जी को भी महाराज ने बहुत ही दिव्यसाधने ही
किन्तु अनाचार्य आत्माराम जी का गुणनदोने के कारण से उन
गिरायों से आत्माराम जी कुछ लाभ न ले सके क्योंकि भीनही जी
सूत्र में लिखा है कि ।—

सासमासउ निविहायत्ता तज्जहा जाणिया,
अनाणिया दुविपट्टा, जाणिया जहायोर जहा हमा
जेघुहति इह गुरुगुणममिद्धा दो सेय विवज्जनि नजा
णसुजाणिय परिस । १ । अनाणिया जहा जाहोह
पगइ महुरा मियरिवय सीहकुडुडभूया रयणमिव
अमठविया । जाणिया साभवेपरिमा । २ । दुविपट्टा
जहानइ कत्थइ निम्माउनय पुच्छइ परभवस्म दोमेग
वत्थिइइ बायपुन्ना फुट्टग। मिन्त्यादुविपट्टा ॥ ३ ॥

भाष्य — १ न जहा को लिखा है जो है ऐसी विज्ञान ॥ १ ॥
जहा ॥ २ ॥ दुविपट्ट ॥ ३ ॥ जहा परितः सेवना है जिस विद्वत्
गुण जहा ॥ २ ॥ निम्न २ ॥ कदा ॥ ३ ॥ जहा स्मृत लिखा है

दुर्गेगायत्री का बीजाक्षर हुंकाराण्ठे में था सो दर्म भी यह प्रदत्त
के तैसे ही नान्ययोगों के जानने के वास्ते लिखते हैं ॥
हस्तो भीमच्छातितायापनम् ।

अथ प्रश्न लिखते हैं —

१—श्री सिद्धान्त में मार्ग तीन ब्रह्मा है उत्तरग १ मध्यग २ धोष
३ श्री मष्ट दस पाप स्थानक कहे हैं सोर उत्तरगमाग में मष्टदस
पाप स्थानक किम रीत से पान करवा है मने मध्यग माग में मष्ट
दस पाप स्थानक कैसे कथन किये हैं मने धोष माग में कैसे मष्ट दस
पाप स्थान का निरूपण किया है परपूर्वोक्त प्रशारेण नीनों माग के ५४
पाप स्थानक हुये सो इन ५४ वा म्य रा २ स्वरूप लिखना फिर ॥ भैसे
लिखना हदी ५४ मध्य महा मगगान जी की बीन से पाप सेवने की
नै बीन से मे मदी इति ॥

२—श्री प्रवचनसारोद्धार में भाषक के १३ सो बीड ८४ बीड
१२ लाप ८७ हजार २०२ नागा इन का स० पृथग २ स्वरूप लिखना
फिर भैसे लिखना कानमे मागे प्रतिमा जी का पूजना है मने कानसे
मागे में पात्रा करली कही है इति ॥

३—तपागच्छ वाले कहते हैं मन्वान् जी के मन्दिर में तद्वपी
देवता का नाटक करवाया मने घराराच्छ वाले निरूप करत हैं सो
तुमार ताई बीन सा पाठ उपदे है मने साम्प्र मन्वे तद्वपी मन्वा बुद्ध
या होइहा पद रत्ना मादि किम वा मान करवाया कया है इति ॥

४—मौर तपागजीवे कहत हैं साधु से न रखा डब टा देखादि
से कुशील सेवे ता पाप नशुं मौर नावरगजान कहा है टाट ने पडे
तो गल पसादि करी मरे सा इतच्छ सुनयन कैसे है इति ॥

५—भागे तपागजीव कहत हैं श्रीरही मन्विष्ट है मने मन्वा
मे ठिकसा है निरुपा दिष्टनी कहा है मा इनक मन्व कैसे है ॥

मं जिने हुए हैं इन ग्रन्थों के देखने से यह भी मली प्रचार विहित हो जाता है कि आमाराम जो व्याकरण के भी अनभिज्ञ थे मो पूर्ण समालोचना ३४ वं बोमास में लिखेंगे भविष्य बटेरायजी ने इन ग्रन्थों का विम्वृत भी उत्तर नहीं दिया है क्योंकि बटेरायजी कोई विद्वान् पुरुष नहीं थे नाहो उन्हीं ने कोई सूक्ष्म ज्ञान खोजा था दोष इन की बग़ाई हुई मनपनी खर्चा नामक पापी से निजय हो जाता है कि यह * बटेराय जी विद्वान् नशे से मार नयगच्छ की भी भलाकारण से भगवा नहीं समझते थे क्योंकि इन पातकों बटेरायजी ने अपना बनाई पुस्तक में स्वच्छ कर दिया है ॥

* बटेरायजी का जन्म-पञ्जाब देश में लुधियाना शहर के तरफ बलोळगुर से सात भाउ कोस दक्षिण के तरफ दूरवां गाम में देव सिंह जाट की कन्या नामा रबी की कन्या से विक्रम संवत् १८१५ में हुआ था पुण्योदय से इन्होंने सम्बत् १८८८ में भी १९०८ पूज्यमूर्ति के घर जो महाराज के गच्छ वं भी मुनिनागरमन्त्रालय महाराज के पास दीक्षा धारण करा फिर यह दिन की चबलता के प्रयोग से पकड़े हो कितने लगे भवदा समय यह पञ्जाब देश के क्वालकोट के जिला में पनकर नामक नगर में चले गये जहाँ पर इन्होंने अपने उपदेश द्वारा मूलचंद माधवाल का वैराग्य दिया और बिनाका ही मूख लिया तब मूलचंद का नाया(महत्पिता) साहमेराह क्वालकोट बाबा जगदेराह माधवा पनकरवाला जकिमूलचंद का मामा(मातुल) था जिन्होंने मुञ्जरावाला में बटेराय जी को पा मूलचंद की मुखपति छोड़ डाली फिर मुख से कहने लगे आपने जिनकी आज्ञा से शिष्य किया है यदि तुम सन्तानुसार किया नहीं करसके हो तो तुम मुखपति को मन रखो भयान् मुखपति मन बाधा क्योंकि साधु के यह कर्म नहीं है तब इन की भया मुखपति बांधने की उत्तर गई किन्तु जो

इसके ऐसे अनुबिन समय में इस नगर के बचन से और
 पूर्वोक्त कारणवाह भगाकर करने से किनन ह। शहरों के लोगों को
 सनातन जैनमन की गुरु भजा प्राप्त होनी यह दागई क्योंकि बहुत
 भनमान लोगों ने बिना ही समझ दठ बदायई करके भाग्याराम जी
 वगैरह के पास जाना माना यह कर दिया इत्यादि पाठकगण । क्या
 विद्वानों का यह। कल्प है कि सर्वव्यापक ही करवृत्तानुसार यथा
 करना जब कमो स्वरूप प्रगट होजाये ता शोक करना चाह ॥ ॥
 जिन जीव के पथोक्त एव हाये उस का सत्य यना मानना क्योंकि

जम लिया विरागविज भाव्यागुल सन्नोमन मिदया ते पाप का उदा
 इत्यादि बचन से सिद्ध है कि—बूटेराय जा तपगच्छ का मत करण
 से भगुता भी नहीं जानने थे किन्तु नाम ही तपगच्छ का रखते थे
 भाट जिनके पास तपगच्छ धारण किया था उनका स्वरूप बूटेराय
 जो मुखपति चर्चा नामक पाथी के ५८ वें पृष्ठापरि लिखत है कि
 शारदिका जन वाली थी त साधा का रूपय चदाय व पूजा करने
 लगी प्रथम तो रूपय चदावने रान विजयजी की पूजा करो
 फिर मणिविजयजीन भागरूपय चदावन पूजा करो पाछे मेरेको रूपये
 चदावने लगी तिवार निज विजयजी। और। हमारे भागे रूपये चदावने
 का कुछ काम नहीं हमारे रूपया को खप न थो हम कहीन मने कर
 हीनो तिर र दम सवे तडा न ऊठ के चठ भाये तिनोंने धाई कू दिसा
 देके शहर म बले गये इत्यादि इस प्रकार चतुर्थ स्तुति निणय शका
 जार के पृष्ठ २८ या २९ वें पर मो लिखा है ॥

पाठकगण देखिये जब मणि विजयादि सबेगी द्रव्य रखते थ और
 बूटेराय जी मयने भाप का साधू हो नहीं मानने थे ना ही बूटेराय
 जी को गुरु का सयोग मिडा नाही तपगच्छ की भगवत्करण से मला
 समझते थ—ता फिर मला तपगच्छिये किस तरह यह सब है कि
 हमारी परम्पराय गुरु सपमधारियों को है ॥

जिन् धर्म निरा में है या दान में है और मनवान की आज्ञा मर्दगन
म ह या निरा में ह ।

अदि बजोग मन्त्रान् एवमुच्यते जगत् ह । ता दन बदने हें जो
मन्त्रधर्म दिव्य भक्त हो पाठ हें वर एवमुच्यते बजोग दानवे भजा
बाई बुद्धिमान यह जान मान सना हें कि निराधर्म व निराम भ
एवमुच्यते न दाव और निराम निराम एवमुच्यते होजाय ओ महामाओ
वन जानो वा दानि पर्यन्त महा कलर दानिय उर गाला ओ न
हम मन्त्र भामाराम की ओ भक्त मन्त्र पुण्डित भामाराम ओ मे
एक ही भोम धारण कर निराधर्म हें उत्तर दन क्या सुखो म उक्त
दिव्य वा बाई भी वयन महा हें । इसी धारण भामाराम जो व
जीवन बरिच में ५२ पुष्टापर लिखा है कि—भामाराम जो मे साक्षा
कीमन्त्र बा भगवत् समस्त व उच्छा कष्टो इत्यादि पादजा पाह
जिम व मन्त्र व उत्तर न माय वही धर्म के अयोग्य सा इसी धारण
छाया जो के दृढधर्मा वा धर्म व अयोग्य निभा हें पाठकगन । यह
भामाराम जो वा विद्वत्ता ह किन्तु ओ महामाओ न पीराजपर व
व माता के पदपात्त्र व माय नगरी म धर्मोपदेश बर १९२५
वा बामसा गुह व अद्विचार में दिया सा उक्त बामसा म भावक
छायावा ह न का वरम मन्त्र हुना का माय जो व मन्त्र व निराम

मन्त्र उवाचरण सत्र वा उपासक दानाग सत्र भावद्वयवादि
भक्त सत्री में मुनिधर्म वा गृहस्थ धर्म व धर्म वरुण प्रतिपादन
दिया गया है इतना ही नहीं किन्तु ओ भक्तयोगशास्त्री सूत्र में भाव
द्वयवादि अधिष्ठाता म परम व मनेव मादरा के चिरव में पाठ हें ।
मणि ओ भक्तमैत्र व वा मन्त्र निराम्यति बडावदयक वरम जो ही
माहा निम्नी है इसीलिय ओ कहना है कि मन्त्र दिव्य के पाठ
एवमुच्यते दानवे हें सो निराम्य वरुणाल चरित वया ह ।

[illegible]

जिन्हें भीमदाराज नामसे क परधान् विचरते हुए जगताई
इन्द्र में पधार गये जिन्हें भव्यदा समझ जगताया से विहार कर के
भीमदाराज विजयपुर को चारहे थे ईशानोय से भामाराम जो मार्ग
नैहो मिटगये पुन भीमदाराज के करण कमल पकड़ लिप्रे मुख से
कहने लगे कि-भीषज्य महाराज जी मैं त' भाप का दास हु आपने
मरे ऊपर इन्ता कयवार किया है कि जा शय मैं भय भय में नहीं
रहता हु क्योंकि आपने भर गुरु महाराज को दीक्षित किया, और
मुझे आज पदाया ।

तब श्रीमद्वाराज कहते हैं कि मैं आत्मराम त मिथ्यात्व में प्रवेश करके कथा जम की विगायता मैं कथा न न उत्तम मन्त्री के फल का नया सता है कि जो मन काय पर्यन्त उत्तम के भाषी को स्वयंकर की मा आदि नहा होता ।

आर जो तब मन म काय मैं तो त नियम करले क्योंकि सूत्रों में यह पत्र मैं कथा है कि जो अजीव का जोर मानता है वही मिथ्या कहिहै ह मा जय त एक पापान क स्वड का भदन मानता है तो भला फिर त मिथ्या मैं मास मैं कम रिमक ही मका ह ।

आर फिर त लोगो क पास कहता मैं कि पूज्य जी मेरी रोटी खद करते ह ।

पियर ! हमका अन्तराय मन का कथा भावश्यकता है किन्तु जैसा त कर्म करता है इन कमा म ना पदा पित्र होता है तुझ को मान्य भव पाना ही तब मैं दा पापना तापत्य यह है कि तू शंकाओं को प्रकाश क मा तम इन काभा की समाधान करेंगे ।

अपित वक्रता । जोर मन कर दियादि जय श्रीमद्वाराज हृषा कुरुचक तब आत्मरामजी क उ नो उत्तर मैं दसके अपितु मन्नता करके अपने मार्ग चरत भय ।

साथ हैं तब धर्मो पश्य को मोतलो का शरण है क्योंकि अकजुता हैं वताव करना मा मारामजी क पावन चरित्र मे ही भिन्न है देखिये सीवन चरित्र पृष्ठ ६ -जय मा माराम जी जगदाश में विद्वन्महादि संधिओं को मित्र तब विद्वन्महाज्ञा मैं कहाकि महाराज जी मन से तो हम सदाशो भाव के साथ मिल हुये ह कथाकि मापने गुण सनातन जैनमत का यथार्थ स्वरूप दिख गक हमारे ऊपर जो उपकार किया है हम इसका बदला मर भय मैं नही दमकते ह, परंतु कथा करे भयना मनलव निद्र करने के वास्त ऊपर ऊपर स जुड़ाई रखते हैं यदि स्वामी भी जुड़ाई न रखें तो पूज्य जी नाराज हो जाते हैं और

उनके माराज होने से अपना कार्य सिद्ध होना मुश्किल है इत्यादि प्रिय पाठकगण ! उक्त लक्ष्य का स्वयं पढ़कर विचारें कि भारमारामजी या विद्वन्महादि साधुओं का भ-तरंग था या छत्र विचार कैसा विचार नीय है और फिर विद्वन्महादि साधु जगत्वा से विहार करके अनुक्रमे मम्बाला छावनी में पहुँचे फिर अपने हाथों से एक (बिड़्वा) पत्र लिख कर मम्बाला छावनी से मम्बाला शहर में मार्फत लाला मसानिया मल्ल, मालूमल्ल की भोऽज्य महाराज जी को भेजा जोकि १९२८ ज्येष्ठ कृष्ण १४ का लिखा हुआ सा पाठकों के जानने वास्ते हम उस पत्र की मजल यहाँ उद्धृत करते हैं —

श्री श्रीरामायनम्

स्वस्ति भोमन् सुमर्यान् विराजमान श्री श्री श्री परम पुण्य परम दयालू परम कृपालू परम रुधेगी चरित्र निधी दया व सागर पिता के महार सूरवीर धीर गनीर अनेक गुनकारी वरानमान ॥

कागज थोड़ा गुनघगा, मोपे कट्टा न जाय ।

सागर में तो जल घना, गागर में न समाय ॥

श्री श्री श्री परम पुण्य श्री महाराज हमारे लिए के छत्र समान मस्तक व मुकुट सामान अनेक गुनकारी विराजमान स्वामी श्री महाराज पुण्यचन्द्रजी महाराज के वरणा विव यद्वा नमस्कार वाचना श्री स्वामी श्री विद्वन्महादि महाराज वरणा वाकर गुलाम हुक्मे की यद्वा नमस्कार बहुत २ करक बावनी वरणा विव सोसगगा हुआ वाचना टाने ७ की जुद्धो २ यद्वा नमस्कार बहुत २ करक बावनी सबका ध्यान आपके वरणा विव लगता है हयगा स्वामी विद्वन्महादि का वरणा व गुलाम वा हुक्मे का ध्यान हरद्वन् गपक वरणा विव छगा रहद हैगा भावने हम रा ताफ सति दिस व ननी चिन्ता साधन कत्ना नहीं हम का ता मापके वरणा का यद्वा भयार हयगा धन

उदिन होगा जिस दिन आपका दर्शन होवेगा हमारे श्री बहुत मरलाय
 लग रही हएगी श्री श्री श्री १००८ श्री श्री श्री पुण्य जी महाराज के
 चरणों विच बिदनचंद की हुक्मचंद की चंदना नमस्कार तिहुतो के
 पाठ से १००८ बार पुनर २ वाचणी सुपसाता बटु २ करक पउणी
 भागे मेरी तथा हुक्मचंद की मरजी आपके वाणा म धामात करने
 की हेगी सा घडा क्षेत्र दाउ ना हुक्मचंद कह के मरा मित पूज्य जी
 महाराज के पास धामासा करण का ह मा भा १ नाण से स्थान सहर
 विच गिराजमान हावेगे सो हमार उपर दया नाउ करके महर दिन्दी
 करके इत लिपाये दणा हम इस ग्राफण न मार विन का वृति आप
 के चरणा म बहुरहे ह अपरम व न म रिउ कर करक नहीं समजणा
 अउरएसोतमेर तथा हुक्मचंद ११ गा प पजी महाराज के चरण
 विच गतरमासा कर ४ मरा करणा म प मार जमा रखणी आपके
 तावेदार ह चरणो क न कर ह इसीतरा ज नना घणु बधा लीपु धी
 केवली महाराज जान १० हमारा ना आपन घडा उपकार लिया है
 सा मार मत म एदि ह आप क प म रह २ शास्त्र विगारे सुमध्या
 आपन वर्ततो हम री मनसा एगी हुच सो भवके तो दुरका मदमा है
 पर मरा परम वागे "उत्तरा नाउगी इसम परक नहीं जानणा यह
 धान मतमकरण से लिखा ह आप बड गभार हा उत्तम हा आपके
 गुणा का पार नहीं है सो आप करक माता को खबर जहर मेजनी
 कृपा करक जहर जहरा नागनि सपसाता की खबर जल्दी कृपा कर
 के माध्या भता उवा दनो हमारा ध्यान बहुत लगरया हएगा—इति
 —मार इस पत्र क द्वितीय पृष्ठा परि वैश्य लोगों का जो (पही)

“शोक है यह पत्र भविषीण हान से इस स्थान के वर्ण ही उड
 गये ह पत्र भी छिन भिन हो रहा है कि तु इस स्थान में ऐसे शम्भू
 प्रतीत होते ह कि मैंनु आप जो माहा भेजागे तथा जिस तरा परमा
 धाम—इत्यादि—

निम्न पत्रादि में दिहो लिखने में जाती है यह ठिक्की हुई है उस में लिखा है कि—मन्नाला छात्रों का पत्र भार पत्र मेला लाला मत्तानियामल्ल मालूमल की माफत था पून्य महाराज का मजा १९२८ ज्येष्ठ दृष्ट १४-इत्यादि—भार माभारामनी के जीवन चरित्र के ५७ वें पृष्ठों पर लिखा है कि—कितने दिनों पीछे ममरसिहनी का ताप से पत्र ऊपर पत्र आने से लाचार हो कर थाविदितचदनी लुघी आने से विहार करके मन्नाला शहर में जा चोमराहा रहे इत्यादि—मिय पठक धृष्ट उक्त पत्र विदितचद वा हुक्मचद का लिखा हुआ है पत्र में शब्द प्रचार क था विद्यामान हैं तथा दोनों ने ही पत्र का धर्मों से भरित किया है। भविष्य पत्र मनुष्यी यहुन हो है सा उक्त पत्र के पदों से निश्चय हो जाता है कि यह महामा जी व्याकरण क मय ठगध भविष्यसुवेगी लोक इनकी विद्या की महान् स्तुति करत हैं सा ठीक है—यथा—

नमिष मिश्रवरो हन तार पत्र की सत्र ५० पत्तिथ ह प्रत्यक्ष पत्ति में मनुष्यों की मरमाह ह यथा प्रथम पत्ति में त न मनुष्य ह यथा—मनु के स्थाना परिमत्त पसे लिखा है व शून स्थान क स्थान में सुभ स्थान लिखत हैं भयवा पूष शब्द का पूष लिखा है तथा पत्ति २ दृष्ट शब्द को कपान्ति निधि शब्द का निधि प० ३ क्षमाका विमा प० ४ कागज का कागद म का म पून्य शब्द का पून्य महाराज शब्द को महाराज ७-८-९-१०—इत्यादि पत्तियों में स्थानान भूगत् पुष चद नमस्कार कपमा हगो इत्यादि मनक प्रचार की मनुष्यो है मगत् हाता ह कि महामाजी सस्कृत हिंदी वा उर्दू भाषा क विज्ञान बनने का इच्छा स लिखना चाहने थे परंतु उक्त भाषाओं का हा उपलब्ध है जो दिना पत्र महामाजी क हृदय में प्रवेश न कर गई भयान पत्र मनुष्यों से भरित कर दिया ह और पत्र पाठना का ता कहनाही क्या है धन्य है सत्रेगमत्रके व्याख्याताओं की किन्तु भाषाओं की विद्या का स्वरूप मनुष्य ३४ के वर्ग के धन्यास म दर्शन करेंगे।

सो इत्यादि ह्युक्ति विधि विद्वत्तद्र जी ने भग्नाराम जी से सीनी कर्णोंकि भग्नाराम जी ने विद्वत्तद्रादि साधुमा को भी अपने ही समान कर दिया ।

सविनु जब भोपूज्य महाराज जी को विद्वत्तद्र जी का लिखा हुआ पत्र भिजा तब भोपूज्य महाराज ने द्रव्य क्षेत्र कालनाथ को देख कर बल पत्र का किञ्चित् मा उत्तर नहीं दिया पुन भीमहाराज ने १९२८ का चौमासा ओरे नगर में कर दिया ।

अतुर्मत्त में बहुत से मन्दजनों के संगय छेदन किये अपितु बहुत समाप्तियों के लिये क्या उपाय बन सका है जब के गै शालाजी या जमावीजी को मगशान भी शिक्षा करने में असमर्थ होगय ।

सो चौमासा में बहुत ही घमोंदन हुआ फिर भोपूज्य महाराज जी चौमासा के पदवत अनुक्रम से विहार करते हुए मार्गशाप गुरु पय में लाला साबसिंह भोमयाल जोड़री की बैठक में जगरावा शहर में विराजमान हागये । आगे भोस्वामी विलासराय जी मगराज भीस्वामी पन्थ रामरुझणी मगराज भीस्वामी पन्थ मोती राम जी महाराज भीस्वामी हीरायाल जी मगराज भीस्वामी प धर्मचन्द्रजी मगराज भीस्वामी तपस्वी रामचन्द्र जी महाराज इत्यादि मुनि भी महाराज सह ५ भार भोस्वामी रत्नचन्द्रजी महाराज स्वामा ज्योतिराल जी भा स्वामी हीरायाल जी महाराज इत्यादि पाच साधु मारवाडी भी भोपूज्य महाराज जी के दर्शनार्थ जगरावा शहर में ही भाये हुए थे । भार तब ही विद्वत्तद्रादि साधु मा भग्नाला शहरसे विहार करके लुधियान में आगये थे ।

जब इहाँ ने सुना कि जगरावा शहर में भोपूज्य महाराज का भव्य बहुत स साधु एकत्र हुए हैं तब इन के विषय में घर निरुचय हुआ कि जो हम सूत्रों से विद्वत्तजन वरते हैं सा भोपूज्य महाराज मली मगर से जान गये हैं अब हम को मऊ से बाछ कामे के लिये ही एकत्र हुए हैं ।

सत्य है प्रतिशरक पश्य मयनीमाया को स्मृति करने भाष ही मय पाता है, इसलिये गाहमार पास सूत्र हैं यह सब माह छोन लेने इस घास्ने पुस्तकादि उपरग लयियाता में हो रख कर किर भी पुत्र मदागात के दर्शन करे १३ सर्व पुस्तकादि लयियाता में ही रख कर विशार करके जगगाय शहर में ही भीषण मगराज्क दर्शन जा विय ?

किर नम्रनादि करन जग नव श्री ५ य मदागाजनी में साव साध पकाय करक कहा कि मैं इन विनय द्राव द्रव्य साधभी का जगने गच्छ से वृषक करवा दु क नि ३ ह कान ना चारिष ही गुह्य रदा ह नाही दर्शन गुह्य है इसी वाक्य ३५ विरा गुठ करत है मयने वाय दर्शन के लिये मयय को नव नव श्री विद्यामगयजी मदागाजने वा मारवादी मतियों ने कहा कि सब हुए नाभ्यूर (पान) को रखता किसी प्रकार मो मरग नही जाता इसी प्रकार यह विदित द्रादि भी मसाय बालन है वा छत्र करन है भार नाही इर्दा का चारिष गुह्य ह नाही दर्शन सा इसी वाक्यने इन का गच्छ से शीघ्र ही चारिष करना चाहिये ॥

नव विनय द्रादि मा बहुत ही नम्रता करने लगे भार मर्जन पिडो की शरथे जान लगे वन रहन करन हुए गदगद घाणी बोटने लग्य और घना घना यह कन्य हुए रहन करन घ दे भीगुय मदा राज्ञा अब हमारा भयगध क्षमा करा फिर जा क उ माय हुना कोन म इ हम मनेम हम मूत नव है भाव अब मयदव ही हमारा मय राय क्षमा कर ॥

नव या पुत्र मयगन ने हुना कने कि नम कह लो मयनी मा कपेटि नम लयियाता में कबो पुस्तकादि छत्र कर मा ३५ ३५ लिये निज हुना है कि नुम्हारे मन में छत्र ह भय में नम को कदावि

गच्छ में नहीं रहूँगा । क्योंकि तब भीमचरही टिबत हो । भगवद्दी
 कोलने हो । उम काज म हो । गल गामाय लाल राधानन्द,
 जगदीश्वर गगनराज गङ्गादास छत्रमल घासुमन्द इत्यादि
 मार मा स्थित थे । मा उ दान भी धायय मारागजी से बहुतही
 दिखि करो हि भी पूय माराज जी भव इन पर समा करो
 क्योंकि यथ भव मूल गये हैं तब भी पूय माराज जी ने ह्वा
 करो हि ह माराग गद विद्वय द्वादि महान छल कर रहे हैं और
 इन का धार्मिक पादन्त वन्दित दागदा ह और भी इन का
 सब साधार भी पूर माराज ने अब मारिया के सुनाया तब सर्व
 मार कन्त लगे कि ३ माराज ! अब इन का निम्न मन रखो इसी
 ही समय भी माराज ने विद्वद्वदि गग को भयन गच्छ से बाछ
 कर दिया तब यह लाल साधविद ही बैठक में नीच उतार गये
 जिनके मान यह हैं । यथा :—

विद्वद्वद्व जी १ दुर्जनद्व जी २ निशानद्व जी ३ निधानमल
 जी ४, मलमनरागजी ५ तलसारागजी ६ धनैयामलजी ७, धम्पाल
 जी ८, बम्पावद्व जी ९, हाकमन्दजी १० गुरदितामल जी, ११
 रत्नारामजी १२ अब यह जगदास स दा पा तोनशास के भनुमान खडे
 गये तब इनके मनमें न जान कथा शान मार फिर यह नगराजों में हो भा
 गय पुन भीमाराज जी से बहुत करत हुए दिखि करने लगे कि
 भाव हमारा भयराय समा करो मार आ इच्छा हो यही प्रायश्चित्त दे
 देवे हम मारके दास हैं भयित् यह कथन भी इनका छल ही का था
 क्योंकि इनकी इच्छा मार भी कतिपय भय जीवों को सम्मार्ग से

* बहुत से पत्र विद्वद्वद्व द्वादि साधकों ने महान की शपथें ना
 कर भीमाराज को लिखकर दिये थे ।

चाह है मारा से यह पत्र उ न निम्न दागये ।

भक्ति लाला बभोवनसिंह ने जय में पधार कर विनयदादि व सच प्रदोत्तर कर के निज को निदत्त किया सो उस बात का स्वकार विनयदादि हो जानन थे इस ही प्रकार प्रायः भक्त नगरी में भी इनका साथ यही गता हुआ रहा । भार ओपुज्य महाराज के गच्छ में रहने वाले श्री धीरदासन व मुनि इन की स्वच्छपोल बस्त्रिय बातों को भक्त करके दिवाने लग गए साधिवें भी यथाशक्ति इनके समान पदों की सूत्रों द्वारा समालोचना करके भाष्यत्राशों को दिवाने लगे भक्ति लाल महाराज ने १९२९ का बीमासा पटियाला नगर में ही कर दिया ।

तब ही लाला बभोवन नाम बाल लाला शिखाराम (धीरदास) पटियाला बाल इत्यादि बहुत सद्गुरुस्थान स्व सम्मन्वित कृत पठित गान्नाय का एक पत्र देकर प्रायः पञ्चाश देश में यह प्रगट कर दिया कि यह विनयदादि वेधकारी शिखा स विद्वत् उपदेश करते हैं और विद्वत् हो इन का चारित्र्य दारदा है सो यदि यह किसी भी भाष्य को निम्नोत्तर देते सा यह उपदेश मानने योग्य नहीं है तथा किसी के मत में कार्य भी नहीं हो यह सच द्वारा निज कर लेवे और इनका भावार्थ व्यवहार जैन मतानुसृत नहीं रहा है जब ऐसे कथन को पढ़कर जो ने नगर नगर मान मान में प्रसिद्ध कर दिया तब लोगों ने उक्त प्रायम को यह उत्तर दिया कि पठित जा इनने लाला प्रथम ही इस बात का विचार हुआ है सा कल्पों न पत्रापरि विवित्तादि भी कर दो ॥

* श्रीमती भाना पार्थवी जी ने भी सरेगियों को बहुत ही सुन्दर उत्तर दिये हैं का स्थान पर इन की पराजय भी किया है शान्तिपिछादि कई सुन्दर पत्रों में लिखे हैं तथा इन का जीवन चरित्र उर्दू भाषा में आ छपा हुआ है ॥

के वनाय हरे नदी भाचार्य के वनाय दुर है तो मर्य सत्ये नदी भापनी मन कल्पना से मेल समेल करके वनाय है ।

और जो वतनान में ग्यात भग है इस में भी मेल समेल करधा हुआ है यह भ्रम भी जीवनराम का ॥

पक्षेसूत्र परतल्ल सूत्र बीराजी सूत्र तथा १४००० हजार ए सर्व मन कल्पना के वनाय हुए है भगवान की वाणी नदी ।

भारापना ब्राह्मणी करके भाष ज्ञान है भार भीनदीजी में जितन सूत्रा के नाम है सा सब सत्ये है । भार जा विद्वत् भाषार्थ्य मनामी का के वाक्य हुए जा मय है सा हूँ नदी है यह भ्रम भाभाराम की है नि ।

यह पत्र लिखकर भाभारामजी ने धर्म्य भी जीवनराम जी महाराज का दिया भारभीनदाराज ने भाभाराम का गच्छ सेमित काहे १९०९ का घानवा शिवापुरमें ही करदिया पट्टगन भाभा रामजी की विद्याजी मो दस लखे । सा भनुमन कर्तिक नाममें छला रचजीनसिंह जा मो जोरोचर में ही भागवे तब भी जीवनराम जी महाराज ने यह पत्र भाभारामजी का लिखा हुआ भ्रम भाषकी के दिखला दिया मो उस में क्या कि भाभाराम जी न भाष के साथ मय्य दिया है बर्दे जि जा बूठ भाभारामजी ने भाभारी भ्रम दिदय छल लिखा है तो क्या यह छल भाष का समस्त है तब स्वामी जी महाराज ने हर बर्दे जि मुं ता उल्लख मनाय नदी है और नदी में ता उल्ल कलानुसार भ्रम है तब भीमान् ने क्या कि जो बूठ भाषका मनामानन है तो यह इन पत्र पर ही टिपे बर्दे कि जो इस पत्र को पढ़ण उसका भाषा भ्रम व भाभाराम जी का भ्रम दिदिन हो जये नर स्वामी जा में इन पत्रपरिहा पर होख दिख दिया ॥ निवे —

राजमहाराज की हुई थी जब भीमराज मदीह शहर में पधार
तब नाहों की भतीज दिव्यप्रिये प्रयाग से १९३१ का बीमा सा मदीह
में ही कर दिया सो बीमासा में ५ फीटोत बहुत ही हुआ कामासे के
पश्चात भीमराज विचरते हुए मध्य जनों के रुझाव दृष्ट करत
हुओं में १९३२ का बीमासा नामा नगर में कर दिया सो नामे नगर
के घासी भोसवाल या वैश्य लोगों में घमोघोत बहुत ही किया और
इस कामासा में लोगों में हानि भी भतीज सीखा ।

अब पाठक जनों को यह भाकाशा भी भवश्य होवेगा कि जब
भी पूज्य महाराज ने विद्वत्पुत्रादिओं का भयने गळ से मि न किया
था और भी भोसवाल जी महाराज ने भाग्यारामजी को स्वगळ
से पूज्य किया था ता कि उन किम महाराज के शिष्य पनें और उत
महाराज के पूज्य महाराज केमे घ सा पाठकों के सदेह छेदनाये हम
इस बात के निगयार्थे अलगाव को भाक्य करत ह ॥

मित्र मित्ररा ! जब भाग्यारामजी या विद्वत्पुत्रादि मयद्रव्य
निष्ठा सुधम्मगळ से पूज्य किया गये फिर इन का अनुचित उपदेश
प्राय किमी भी भयान न प्रदण किया किन्तु इन को ही लोक गुरु
होन कहत उग गय कि इह न अनुमान १९३२ में भगवान पद्ममान
अरामा का निष्ठा परिचयन कर दिया और शहर महामहाराज में पक्षोच
गय फिर अहा पर बुद्धि विषय का गुह धारण किया नोकि पर सधम
गळ से निष्ठाका नय गळ उ गय। या पित्तका नाम बुद्धरायजी था ।

अब रह रत्नागजी ! महर्षिबालक जी ! ता इनस प्रथमजी
पूज्य हो चुके थ ।

किन्तु आ महामहाराज म पक्षाच गये थे उन्होंने अराम उ का
घासक्षेप लिया था ।

* भीषण महाराज न हमी सम्य नर में गळ को उन्नावर्षे सम
यानुवर्त ३२ अङ्क लिखे थे नोकि मयावि पथ्यन्त गळ में प्रबलित ह ।

पुत्र पर परामा संप्रति अभी कोई माचार्य उपाधनाय धारा नहीं
तो फिर कोई सपना गङ्गागङ्गा चर्च पर उस उपाधनाय धारा परामा
कालाया विना अथवा नवीदिष्टाने माचार्य पद वासन्धेय कराया विना
अनेकानिनायमा कई सपना माचार्य ने सपने माचार्य पदों की
धरिना पत्रना दृष्टिराग। धर्मिना न। दृष्टिमा माचार्य पदस्वीकार
करी देना। करोटा प्रदानात्तातन प्रयत्ना ३१४ मा दृष्टिमा छात्र
दृष्टिमा पाणीनाम में * वार प्रकर महा सार समुदाय ने माचार्य
पद दत्त।

* वच्चा वच्चादय मगतास के दृष्ट ३० पक्ष ५ पर लिखा
है कि मदन १ तुन माचार्य नाम जाक नाम क साथ में सूर्यावरण देख
कर क्यों उठत हा अनुमान दाता ह तमछ उनस कुउ हय मात्र है।

उत्तर—निश्चय हन उठत मा नदी ह मार हनछ उनस कुउ
प्रयत्न मो नगी परतु दृष्टि का नाम दृष्टिमा रचना एक नगी
वपरास्य हात है।

मदन—कहा माचार्य जी का मकल भी रुपये सपिष्ट नहीं
दिया है (उत्तर) सपना १९४३ में माचार्यजी ने पालिका में
धौमासाविदा मार काष्ठिक पुस्तक १३ का अन्तर्गत लेख को जात्रा
का अनेक भावक माने हो हैं। उनमें से दो बार उतर के रहन पाठों
मछे माचार्यजी के रागा थे) माचार्यजी से कहा हन मापछ
माचार्य पदों देना चाहत है माचार्यजी ने मालूम कहा छन जा
कर इसका स्वीकार करलिग मार मनमें फलगत हन मा नगी
कहा कि १ हनरे पदे दृष्टिमा सपि जा भी मूलचर्चा मारात्र तथा
भी दृष्टिमा जी मारात्र स हनमान में सपिष्ट मार मात्र देना
चाहिय दूसरे दिन माचार्य ने ७३ नरमिष्ट कदाव जी को पत्र दत्त
में एक मधान सत्रा कर माचार्यजी अभी पत्र पर बैठाय दिया मार
दृष्टिमा माचार्य ने कहा हा कर मनावन दिया कि मात्र उ मार

આમારામ જો મનમોહ દાવ તો જેમ મમેથી જૈન સાગરોના શ્યાવધી
 જોજો જાપો તેનો જાણ થો પ્રમોદ વિજય જો તા ગુહ મે સંજનો ।
 જાપો તા સાધુ સમાચારો પોતનો વરવરામાં સવળા ઉચિત્ત ન થા
 તા વન ધોગુહ જાણાવિવાવન સંવસી ગુહનો દા છે દિસા પ્રમુખ
 સાધુ સમાચારો તથા ગુહ વરવરાવ આવેનો મહાસપ સમસ ધી ગુહ
 દીધસી આચાર્ય વરવોના ધારક થો વિવેચતામ્ સૂત્રિઓ મે સવસો
 જાપોતમનો વાલેકવલવદ્ બધાન્ જયી દીસા પ્રમુખ જતો દિવા ઉદાર
 જરણા તમ વસને વલ સવસો મુસીની વાલે જાતિનાર સવન્ મર્ધાન્
 દીસા સ્વયી જાદવ કેમ જે જતી દીસા છેવો થો વલ તો જુઠિયરના
 નુ જલજ્જલી અમીમાન વેગ છોપર જામ જોજુ પોતે સાધુ નથી તા
 વલમમે સાધુ છોવ વધુ છોકાને કરે વ પહે ઉ ।

તદ્ રૂપ મિલવા માવલ કુપલ થો થયો જલે ! અને જોજુ જે જોર
 મોહ્યા ધાવજવલ મે સાધુ જતીને માને છે ત આવજા નુ મિલવાવ વલ
 વેગલ થર અને શ્યાદિ થદુ ગુલ વલ્લન થા મ ટે આ આમારામ જો
 માનવિજયજો આમાર્યો છે તાવ મમારુ જદુ વ વલમોવ દારકુલ જાપો
 મે મગીધાર કરને તથા આચાર્યવદ્ લવાનો વાંઝા દાવ તો આમારામ
 જો મે ઉચિત છે જે પ્રથમ જોડ વલ્લતાગત સવસી આચાર્ય લેલીન તથા
 અવ્ મમ વલ્લતાવ વલ્લદ્ સ્વાવ વમાવ જલ્લતાવ જ મહાન્ માગલુ
 વિલાગત વોડગ ધારના સંયમે સુવદ્ધના । શ્યાદિ ધોમંગ જુઠિયા
 પ્રમુખ જૈન સુત્રાનો અ જાના ધારક ધીસુધર્મ વલ્લતાવ વાવલ્લતા
 પ્રમુખ વલ્લમદ્ મમાદ છોડોને મમાન્ વિધિજા જાવળુ મુજો મે જિવા
 ઉદારના કરવા જલ્લ વલ્લ જોઈ મહાન્ માગલુરિ આચાર્ય જો રતેમનો
 વાલે દીસા છે આચાર્ય વરધારણ જે તો આગમનો મગ રૂપ કુપલ
 થો થયોજાવ અનેરમ ન આચાર્યમાનવા વાંઝા આવજોનુ મિલવાવ વલ
 વેગ છુપરજવ મે મલ્લતિગોદ રૂપો દારનારનો મોજમાન થાનો મવરવ
 રહી આવ જેમકે મનાધારીને સાધુ તથા મનાધાયને આચાર્યમાન ધાવલ

पाठवगा ! उक्त लेख भाग्याराम जी के ही गठबन्ध है सो भाग्याराम विचार करें कि भाग्याराम जी थी मगवान धर्ममान स्वामी का प्रतिपादन किया माधु धर्म या लिङ्ग छोड़ करके परिमद धारियों के जा शिष्य बने जो कि सपन से रदिन धन से विमर्षिन दुडिया बगते थे पाठवगा कमा जाने भाग्यारामजी ने इनके धन को ही देख कर यह विचार लिया हो कि यही मगवान् के शासन के हैं ।

क्योंकि इनके पास धन बहुत है सो मगवान् भी ससार पक्ष में राजपुत्र होने से बड़े ही धनाढ्य थे शोक !!! गेय समीक्षा इनके मन की पंक्तों पर छाड़ते हैं ।

क्योंकि पधिर समालोचना में विस्तार का मय है सो यह तो पाठवगन जान ही गये ह गे कि भाग्याराम जी सपमवृत्ती त्याग कर परिमद धारियों के शिष्य हुए मार न तो कोई उनके गठ में भाचार्य ही हुआ है नाही उपाध्याय सत्य ह जब सत्य ही नहीं है तो फिर भाचार्य कहा स हाथे ।

किन्तु थी पूज्य महाराज का १९३२ का धानासा नाने शहर में महानद से पून होगया थी महाराज चीनसा के पदगत गिरर करके देश में जय विजय करने लगे ।

फिर थी पूज्य महाराज ने माणेरवाटन रामपुरा गृधियाना फगार पगशुडा पतधर, कसरधन गहरा जगियादि गगमें में धर्मोपेय फाके गगन हस्तमदम सगगा भाग्याराम जी पठक म १९३३ का गेम स कर दिया ।

बनाता में धर्मिक कथ्य पदुवरा पुर १८ धन न में दो बार पदुय धम के प्रगानक पध गगगना के कसरधम में गगम भाग्याराम जी गेन हुए मगवान् में तो गगमे दैवे गिनी दो दू रागजी १ थी शिवधरजी, २ था साइनलजी ३ थी गगगिताय

अथ पत्रम् ।

स्थिति थी माइदा काटे साधू जी थी थी थी थी थी थी
 आचलरामजी याग लिपो आचपुर सेतो मामाराम ने सुपसाता विमा
 यणा सचदरी सचवी बहुत बहुत करके पाननी भागे आपने तो मेरे
 कू मूल्य दिया है परन्तु मेरे मन में तो आप घड़ी एक मूलने नहीं है
 कारण यह है जो बाल अरुणाधी भ पने मरी पालना करी यन पना
 या जो विद्या मेरे कू माइ है सा सच मायका उपगार है भन भव जो
 अनुमाने लापा धारक मरी सेवा काल है तथा १४ साधू मेरे साथ
 है एतय आप ही का उपगार है सा आप व मित्रों के बहुत भनि
 लाया छग रहा है सा आप व गन तो मर व सच माइम हैं मुह स
 बदे नही जाते है ग्राम चूड़चूड़ में आप स घना भरत करी थी के मेरे
 कू आप दुःख न करी परन्तु आप ना गह क दुरज थ सो मेरा कथा
 जोर घाना था दुसरा मने गो आप व भविष्य कथा नही कीया
 भो भाज दिग नव अपना मूग था बहर धार का निदा नही करी
 चलन आप व भद्रिह स्थमाय वा तथा प्रत्यय वा तथा तरुणा की
 मदिमाया लाका भगन करी ह परन्तु जद भार पाइ माउड़े हा
 तथा दिल मरमाइदा है माया स पनी भाभादा ह सा मने कू बडा
 दाइ दाता है सो ता कथा लगलिय सा मव भावन हवा करके मेरे
 कू अपना मूग कमा वा दर्शन करावना सो उठ घामासे मैं दिल्ली
 को लर्के विगार करके माउग महीने माघ नव सा भागने की बगर
 के गमा में विद्वार करके पधारण ।

सो आपका मेर हो अणगा भने जो मैं समुद्र के भगवत रचवा
 हेथी है तथा ज ज ताड पनी के र गर दसे है सो सब आप कू सन
 ऊगा मेरा उभा राग भार क उपर था मैनादी राग भव है मैं ता
 मचडी तर जानना ह ओ भ प परमेश सपारये के वास्त ऊदो

इस स्थिति को विचार करेंगे कि इसमें विद्वान का चेला नियमविह्वल पत्र होसका है वदापि मडा इससे स्वयं ही सिद्ध हागया कि भातमागम जी ने व्याकरण को ही कल्पित किया तथा माहो भामारामजी सुंदर पद रचना करके शब्द शायद लिखना ही जानतेथे जैसेकि उनके लिखे पत्र से स्पष्ट सिद्ध है तथा लिखने की गैडी इस प्रकार से ग्रहण करते हैं कि—परन्तु जद भाष पाद भाउदा हो तदा विल मर भाउदा है भाषा में पाणी भाउदा है सा मेरे को यहा दाह हाता है सो मो कहा गिगू । *इत्यादि मित्रवरो क्या यह व्याकरण क विद्वानों की भाषा है क्योंकि उक्त लम्बे स निश्च होता है कि भामाराम जी को व्याकरण का निगम सोच नहीं था यदि बाध होता तो उक्त पत्र विमति निश्च वृद्धत प्रत्यय समासादि से विह्वल क्यों लिखते तथा व्याकरण का यदि सहा प्रकरण भी दया हाता तो क्यों के स्थान ता आन हाउते उस कि व्याकरण क सहा प्रकरण में लिखा है कि—

अकुहविसर्जनीय निहामूलीयाना कण्ठ तथा
श्रुतुरपाणा मूर्धा ॥

अर्थात् अष्टादश प्रकार का भ्रमण पुनः करण जैसे कि—क ख ग घ ङ और विसर्जनीय निहामूलीयाना कण्ठ स्थान ह भार कर्ण के अष्टादश भेद दया। जैसे कि—टठडडण र, य, इनका मूदन स्थान है ।

मित्रवरो उक्त पत्र में भामाराम जी ने प्राय कण्ठ स्थान के वर्णों के स्थानापरि मूधस्थान के वर्णों का हा लिखा है जैसे कि—भाषा में पाणी भाउदा है (कालग लिगू) इत्यादि सा क्या यह भामाराम जी ने अपनी वृद्ध क परिवय नहा दिवाया है मयदय दिवाया है !

* बाह ! ! ! कैसी सुन्दर काव्य भामाराम जी न लिखी है त्रिम से हेमचन्द्रादि महानाचर्यों का कर्म्य ललितन होरही हैं ॥

चित्त लेख नहीं है मगर यह है क्योंकि साम्प्रतम काल के शोधकर्त्तन तो यह कहते हैं कि-इमें कोई भन्त नहीं मिला ।

फिर एक यह भी बात है कि-भामाराम जी १९३२ सन्त में पञ्जाब देश से विहार करके अमृतसर में बामान जा रहे फिर १९३३ का बामान भावनगर में फिर १९३४ का बामान जाधपुर में किया तो क्या यह तीनही मगर समुद्र के भग्न म समने वाले हैं ।

हा यदि जिना गालक नाम भामाराम जी ने समुद्र करार कर लिया हो तब तो यारी बात है क्योंकि जब भामाराम जी ने एक भविष्य द्रष्टा को भक्ष्य मान लिया है तो भला समुद्र की तो क्या हो बात है ।

क्योंकि मार कितो मरार भी मातमराम जी का समुद्र नर रचना देखना सिद्ध नहीं हो सकना क्योंकि मारन पर के सूत्रों में ३२००० हजार देश लिखे हैं किन्तु भामाराम जी के जीवन चरित्र में केवल पञ्जाब, गुजरात मारवाड मालवा इत्यादि देशों के ही नाम लिखे हैं मनु भय देशों के नाम । तो शोक है ! ऐसे लिखने पर फिर ठिक्का है कि मैं भज्जु तरह जनता हुआ माप परमत्र सुधारणे के वास्ते ऊठ हो तथा मेरा जस राग माप के उपर था ऐसा ही राग भक्ष है इत्यादि मित्र धरो ! अब राग की स्पृहा भी न हुए इवामी जी परलोक वास्ते उत्थित हुए भी निश्चिन्त हागवा ।

तो फिर दुनिया राष्ट्र ग्रहण करके धीरशासन के मुनियों की व्यथ निन्दा करके पर काने क्यों कर्य हैं ।

भविष्य जो किये हैं इस से भामाराम जी ने अपनी बुद्धि का परिचय दिखा दिया है ।

दुना लिखा है कि मेरी मरजी यह है जो मापकी सेवा कर रहा पास रह दुस्तक मेरे क इतने मिले है आ गियनो से बाहिर है बापकनो अनुमाने करा १०००००० लाख सेवा करते हैं इत्यादि ।

३४ सड़ख १०० एकपौ ४८ सर्वे जैन हैं इसी प्रकार भारतमित्र नामक पत्र में भी प्रकाशित हुआ है ॥

तथा किसी २ तारीख में जैन १५ लाख भी लिखे हैं सो वर्तमान काल में जैनमत को मोन सामने हैं जैसे कि दयेताम्बर जैन १, दयेताम्बर मूर्तिपूजक जैन २, दिग्बरजैन ३, दयेताम्बरमूर्ति पूजक जैनो की साम्ना हो एक पौताम्बर जैन हैं ॥

सो सर्व जैनो में पाछ लाख तो अनुमान भी दयेताम्बर स्थानक घासी जैन हैं, जेब दिग्बर दयेताम्बर जैन हैं सब विचारने की बात है कि जब पौताम्बर जैन ही भाग्याराम जी के लिखे अनुसार है ही नहीं, तो मग्न सभा की ता क्या ही भाग्याह तथा भी धन्य मगवन् वर्तमान स्थानीके भावक १००० • छान उनसठ सड़ख हा छत्र सूत्र में लिखे हैं सा भाग्याराम जो क्य कथन मसनजस है फिर लिखा है कि साधू मग्यामके सासनब छोड हैं साधू स्वागी अनुमान ७०५८० साधवीपां एक सा पवस १५० के अनुमान हैं । मिश्रवरो जैसे भाग्याराम जी स्वागी घैरागी धे नेस हा वइ ७०८० साध १५० माशिये होंगी धन्य हे देसे २ पौस हां का पुन मंदिर विषय लग लिखा है वइ भी पानपर के तीर्थवन् ही होवगा ॥

पुनः दनिखे भाग्यारामजी क्य जब भाओवनराम जी महाराजने स्वयंउ से भिन दिया था । फिर भाग्यारामजी की बिसी भी पत्र द्वारा नहीं बादा ॥

किन्तु भाग्याराम जी लिखते हैं कि—तने दिन जी बोठी नही लोपी सो आपने मना कर दिया था परंतु मैं बहालम सबर बरु हाणहि पठवान—देखिये भाग्याराम जी के लग की परंतु स्वामी ओषभराम जी महाराज ने इस पत्र का भी कार्य भी प्रत्युत्तर नहीं दिया । सो बरु पत्र से पाठवें क्य भाग्याराम जी की विद्या बुद्धि बिबेक स्वयं सर्व बात होवना होवेगा ।

तब ही भाग्याराम जी विद्वन्महादि सवेगी साधु भी मयूतसर में ही भाग्ये । किन्तु विद्वन्महादि सवेगियों ने कहा मेजा कि । हमने भी श्री पूज्य महाराज के दर्शन करने हैं सो हमसे दर्शन करने की आज्ञा मिलनी चाहिये ।

तब भी पूज्य महाराज ने कहा करीबि—जैसे उनकी इच्छा हो । तब ही विद्वन्महादि सवेगी साधु भी पूज्य महाराज के दर्शनार्थ लम्बा हरनामदास, सनत्काज जी बैठक में ही भाग्ये इच्छामि जमासमलो शपादि पाठ पढ़ के स्थित होगये पुन प्रेम की बातें करने लगे तब भी पूज्य महाराज ने कहा करीबि—विद्वन्महादिजी क्या ऐसा ! तब विद्वन्महादिजी कहने लगें । हे महाराज जी सिद्धाचल जी देखे ! तथा मनेक मन्दिर देखे हैं तब भी महाराजजी ने कहा कि—क्या कोई उगार झोप में ऐसा स्थान है कि—जहां कोई भी सिद्ध न हुआ हो ! क्योंकि अब तो यह स्थान ऐसा है जैसे किसी गेठ की दुकान चलती है तब मनेक लोक गेठ जीके पास भात है व्यापार करते हैं जब वह आपन उठारि जाती है या शेर उस दुकान को छोड़ जाता है वह आपन गिर पड़ती है फिर वह व्यापारी जन वहां पर नहीं भाते हैं ।

इसी प्रकार सिद्धाचलदि पण्डित हैं । क्योंकि जब मुनि जन परीनों पर साक्षात् विद्यमान थे तब मनेक गृहस्थ वा जिह्वासु जन गहा जाया करते थे और ज्ञान दर्शन चारित्र्य का लाभ उठाते थे । वनछात्रो मर कहा है वहां पर । तब भी साइनलाल जी महाराज ने भी पूज्य महाराज से विद्वानि करी कि—मुझे आज्ञा हावे तो मैं इनसे कुछ बातें करूँ ।

तब भी पूज्य महाराज जी ने भी स्वामी सोइनलाल जी महाराज की आज्ञा देदी ॥

आज्ञा पात ही भी स्वामी सोइनलाल जी महाराज ने विद्वन्महादि तपागच्छियों का निम्नलिखित मदन किये ॥

१ भाष लोग प्रतिमा जी की भाशातना ८४ मानते हैं कइना चाहिये अनिशय प्रतिमा की कितनी हैं ॥

जैसे कि महान देव की जन्म अनिशय १ दीक्षा के पश्चात् जो अनिशय प्रगट होती हैं वा केवल ज्ञान क पीछे अनिशय प्रादूर्भूत हैं सर्व का यजन पृथक् २ है ऐसे ही प्रतिमा जी को बनवाये ॥

२ भगवन की भासा दया में है या हिंसा म यदि हिंसा में कइगे तो नरकाटो प्र याकशन कैसे रह सकना है अकर दया में भासा है तब आप का चकार सुत्रानुसार नहीं ह ॥

३ जब भाष लोग मरिच्यत काल में मोत होने वाले जीवों का नमोत्पण के पाठ से बचना करते हैं तब जिन मंदिर में शिवलिङ्ग वा श्रीहृण्णजी की प्रतिमा कयी नई *प्रतिष्ठित की जानी है क्योंकि शिवजी का भाष के मन में अत्रनि सत्यक शान्त धारक मानागश है।

४ जब द्वारका जी मरुम होगा वो तब द्वारका में जिन मंदिर में या नई यदि थे तब मरुम कयी हुए यदि नहीं थे तब मरु कल्पित सिद्ध हावेगा तथा फिर अनिशय कहा रही ।

*दसो भाषा पूजा समुद्र नामक पुस्तक पु ८४ की ५६ ४५५६।

ॐ ह्रीं श्रीं कृष्णादि वीरान्न चतुर्दिशति त्रिन समुद्र भद्र भव तर भयतर सहायक ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कृष्णादि वीरान्न चतुर्दिशति त्रिन समुद्र भद्र निष्ठ निष्ठ ठा ठा ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कृष्णादि वीरान्न चतुर्दिशति त्रिन समुद्र भद्र समन्निहिता मरुमव यवट ॥ यन्ता भाषान का प्रमाण भव विवर्जन का प्रमाण मो दक्षिये उन ही पुस्तक पुष्ट ५८ की प्रथम या द्वितीय पंक्ति पुनर्गर्भ क बाद विवर्जन करना चाहिये इत्यादि सो यह प्रतिष्ठा वा पूजा करने वाले मत्र हैं ॥

नियन्त्रा १ यह लोक प्रतिष्ठा के समय मोक्ष प्राप्ति मोर्दहरी का भाषानादि कर्म करत है भार मत्र मो पढते हैं ॥

५ द्रोपति जी ने किस जिनकी पूजा करी उस दिनका क्या नाम रख उसका मंदिर बना किस आचार्य में प्रणिष्ठा करवाई।

६ भगवान् ने किस माटी में प्रतिमा को पूजन का उपदेश किया किन धातुओं ने धारण किया विधि विधान भी पूछा ३२ सूत्रों की संख्या सूत्र कान्ता धातुक और पद्म मणि त्रिगुणित का वधा स्वरूप है।

७ हिंसा का कारण क्या है दया का कारण क्या है। और इन के धर्म क्या २ बनते हैं।

८ ममस्कार मत्र के पंच पदों के ४ विशेष कैसे बनते हैं फिर वह पदनीय कितने हैं मयदनीय कितने हैं।

शापादि जब प्रदत्त पूछे महा वहां उत्तर की क्या भाशा थी तब विद्वत्पुत्रों कहने लगे कि हमने भी पूज्य महाराज के दान करने वाले भाये हैं तब श्रीसोहनतालजी महाराजने कहा कि हा दान करें।

अपित्त जब विद्वत्पुत्रादि साधु जाने लगे, तब फिर कहने लगे कि यदि भगवान् ने दान करने होयें तो वह भी करलेयें तब भी पूज्य महाराज ने हसकर जैसा उसकी इच्छा हो फिर विद्वत्पुत्रों बोले। यदि प्रदत्त कर ले लें। तब भी पूज्य महाराज ने हस कर कहा कि—यदि भगवान् की इच्छा प्रदत्त करने की है तो हम तय्यार हैं। यदि किसी और ने करने हो या किसी अन्यस्थान पर करने हो तो हम या सोहनताल जी को नेत्रों में।

महा प्रदत्त कितने करने थे। यह तो बंधन कहने मात्र ही था। जब विद्वत्पुत्रादि लगे गये।

तब भी सोहनताल जी महाराजने १०० प्रदत्त लिख कर भगवान् की ओर भेजे तब भगवान् की ओर १०० प्रदत्त लेकर उड़ितवा की ओर बिहार कर दिया।

किन्तु उत्तर देने का काम हो क्या था।

फिर भी पूज्य महाराज की शीर्ष की भोजन विधि होने लगे तब भी महाराज ने १९३५ का कैलासा समुद्र में ही कर दिया।

फिर लोग निरानंद होते हुए एक मुन्दर शिमान बना के तिस में श्री ७७ महाराज के शरीर का भाकट करके मदान महोत्सव के साथ नित व शिमानो पर ९४ दुशाल पड़े हुए थे यादिय बजने हुए मृत्यु सस्कार की मूर्ति में पक्षीव गये ॥

निराचरन के साथ मृत्यु सस्कार किया गया नित लोगों ने उक्त महात्म्य को दत्ता दं पड़ लोग महाराजा रणजानसिंह जी के मृत्यु महात्म्य की उपमा दिया करते हैं ॥

तात्पर्य यह है कि-उत्ता श्री पुन्य महाराज जी का पंडित मृत्यु समाधि युक्त हुआ था तब ही लोगों ने परम महात्म्य के साथ श्री पुन्य महाराज के शरीर का भग्नि सस्कार किया ॥

मिश्रधरा श्री पुन्य महाराज ने इस भारत मूर्ति में जैन मार्ग का परम प्रकाश किया। भार भासा की शुद्धि अर्थ जिहों ने एक से लेकर ३३ उपरास पर्यं न नय किया भार प्रति चाम सामे एक मष्टा दश मल त्याग रूप नय करत रह सथात् हर एक घौमासा में एक मष्टा करते थे भाषका सज्जीया काल चर्मादिनि यथ दुर्मा तीर मो अफने बहुतसे पष्टम अष्टम अद मान मण्ड इत्यादि तय किये ॥ भाष-महज १ सस्कार २ भाष जैनसूत्रों का प्रमन क शास्त्रों को मोदेला ३। मा येने महाम नारप न स्वरयाम का देख कर भाष अन सभार का अनियता विचारते थे। कदाकि लय इस मूर्ति पर तीपहर चक्रवर्ती पलङ्क वासथेव इत्यादि न रहे ता मग जाम्ब की तो क्या हा यान है। इत्यादि विचारों से लोगों ने भाष का शास्त्र किया फिर भाषा पद स्थापन करने की उन्नति हान अमी कर्चोकि सूत्रा म यह कथन है कि भाषा उपपाय विना गण्ड कु मूर्तियों का विचारा नों करपन है कि उ ओ उ महाराज के द्वाइय अस्तिथ हुए जिन के निम्नलिखित नाम हैं तयथा ॥

● वतमान काल में श्री पुन्य महाराज के शिष्यों का परिचार १

१—श्री मन्मताजीय जी महाराज

२—श्री गंगाजीय जी महाराज ।

३—श्री त्रिगम्भीर जी महाराज ।

४—श्री रामबल जी महाराज

—श्री सख्त जी महाराज

५—श्री मोतीराम जी महाराज ।

७—श्री मोहनजी महाराज

८—श्री रतनचन्द जी महाराज

९—श्री स्वामीराम जी महाराज ॥

१०—श्री सखचन्द्र जी महाराज ।

११—श्री बालहराम जी महाराज ॥

१२—श्री राधाकृष्ण जी महाराज

फिर श्री सच ने सम्मति करके अज्ञान परम पंडित रामबलजी महाराज का सन्त १९३९-वेष्ट कृष्ण तृतीय ५ दिन मात्राकादल नामक नगर में आचार्य पदपर स्थापन कर दिया ॥

कित धी पूज्य महाराज को भायु स्वयं हानि से पूज्य पद से २१ दिन पश्चात्-वेष्ट शुद्ध ९मी का स्वयंवास हागय फिर आसवम परम शर उत्पन्न होगया किन्तु ज्ञानयल सौन्दर्यसौन्दरता का दूर किया फिर आचार्य पद धी परम शान्ति मुद्रा वैराग्य रूप ज्ञान क वालो ज्ञेय धी स्वामी मोतीराम जी महाराज को दिया गया धी सच मे गति के प्रमाण से धर्म की वृद्धि होने लगी ॥

१० वा १०० साधु ६० भावधरो के अनुमान है कि तु धीपूज्य महा राज से लेकर मध्यापि पर्यंत ४०० साधु के अनुमान हुए हैं यदि सबका स्वरूप लिखा जाय तो एक बार महान् ग्रंथ बन जाये । इसलिये धी पूज्य महाराज के शिष्यों का ही नाम लिख दिया है ॥

निर श्री पूज्य मोतीराम जी महाराज के गच्छ में श्री स्वामी सोहनदास जी महाराज ने बहुत ही धन का उद्योत किया सो पाठ्यों के जानने शक्ती उदाहरण मात्र लिखते हैं ॥

जैसे कि १९३९ में श्री स्वामी सोहनदास जी महाराज और श्री स्वामी गणपतिराय जी महाराज तथा श्री स्वामी गंडेराय जी महाराज स्वामी चतुर्धा चामासा अम्बाले शहर में था तब श्री भाग्याराम जी का भी श्रमाल अम्बाल में ही था तब श्री पूज्य सोहनदास जी महाराज ने अम्बाले शहर में जैन धर्म का परम प्रकाश किया मरिनु श्री पूज्य महाराज के सम्मुख भाग्याराम जी नहीं हुए ॥

तब श्री पूज्य श्री महाराज न ५ मदन छात्र तिलाकचन्द्र एकीत पौरोजपुर वाले थे फिर क्योंकि बाधुसाहिब में कहा था कि माप के प्रश्नों का उत्तर मैं भाग्याराम जी से लूँगा सा मदन निम्नलिखित हैं ॥

१. प्रापति जी ने प्रतिमा विमजिन की पूजा की क्योंकि स्वामीग सूर में तीन प्रश्नों के जिन का बयली का बहुत बयन किया है जैसा कि अर्थात् श्रामी १. मनपराय श्रामी २. बेयल श्रामी ३. निर उस प्रतिमा की जिस मदान न प्रमिता करता कि स तेरेपर के उपदेश से यह मंदिर बनाएगा मरिनु मन्वीर तिलिन के जो श्रामी जी सूर हैं उन में तो मन्वीर का पाठ नहीं है किन्तु आ मन्वीर तिलिन के श्रामी धर्म बयान सूर हैं उन में एक पाठ विद्वान है सा यह कहा करता है ॥

२. (मन्वीर वयलीकम्मा) श्रामी का कहा मर्य करते हैं तदा यदि पर का देव मागने लव न मन्वीर सिद्ध हावेग कर्णिक लोचन

॥ श्रीराम पूज्य सोहनदास जी महाराज का पूज्य वृत्तन स्वामी जी के जैनधर्म में है किन्तु इस स्वामी पर तो उदाहरण मात्र हो दिया गया है ॥

† इस स्वामी पर श्री पूज्य श्रामी का सम्मुख श्री स्वामी सोहनदास जी महाराज से है जैनधर्म का उदाहरण ॥

केवली जोगेपुच्छा कहणे घोही तहेच नवेउ ।
 रिइत्यनुचियमिणिह चेटयदज्जम्म वट्ठिता ॥१२०॥
 कज्ज चट्ठवसोमयाण सुरावानेयउतया ।
 गट्ठनाहवस्सणेण भरहोत्तजगट्ठया ॥१०६॥
 रप्पद् मज्जविनामणिज्ज चक्खिज्जवामुदवट्ठ ।
 पुड्डननिजणण जिणुद्धारम्म मत्तारा ॥१०७॥

भाषा — इन गंधाओं का सागण इतना दि है कि बेधली
 मगवान न कहा है कि धैर्य द्रव्य का वृद्धि करने से मनोवामना पूरी
 दानी है तथा काश्य कला का गति धारण साम्यरूप तथा सूर्य
 समान शान्ति कामरूप स्त्री ज्ञान का आनन्दरूप का कल्पवृक्ष तद्वत् तथा
 विजयगिरि रत्न समान तथा घट्टवसीवसद्वत् व समान पत्थनीय होता
 है आ पश्य जय मदिरा का उद्धार करता है ॥

शिव मित्रवरो ! यह मन्त्रक कथन नही तो मोर कहा है क्योंकि
 किम बबली न उक्त उपदेश किया है किम सूत्र में गानमज्ञा ने उक्त
 शिवर काह मा प्रदत्त किया है मा इससे स्वतः हो निद्रा हो जाता है
 कि यह सब नूतन प्रयत्नारों ही का लीग है ॥

फिर भठरज्जकलाणपरन्ता में लिखा है कि —

नियदज्जमउज्जनिणिद्, भवणाजिणविउवरपइठासु ।
 वियरइपमरउपुत्थए, मुनित्थनित्थयरपूआसु ॥ ३१

भाषा — इस गाथा में यह दिखलाया है कि भावक जिन
 मदिरा जिन विन प्रकटा जिन पून तथा पुस्तक विज्ञान में धन का
 द्य हस्तदि तथा मगधना पर ना की ११ य गाथा में वेने लिखा
 है । तथा ।

हो है क्योंकि जय भानु धावक का सशक्तता ने व्यापारादि वा
 दादेश मन्त एकादश भावक प्रतिमा इत्यादि सब कथन कर दिये ता
 मन्त्रिचारन को याद है कि एक नियमनियम रूप जिन पूजा का हो
 पाठ सुख्य कर । था कि निम्नो भाग के कथनानुसूल परम
 भावदयकता यो इस स सिद्ध होता है कि यह कथन हा हठ कर है ।

फिर जो आत्मराम जी ने धो समवायाग जो सूत्र का प्रमाण
 दे कर सब सेवकों को भानु किया है वह भी कथन आत्मराम जी
 का हासउप्य है क्योंकि :-

धो समवायाग जो सूत्र म जो केवल उपानव दशाग सूत्र का
 इतना हो कथन है कि, धावकों के नगर के नाम नगरों के बाहिर के
 उद्यानों के नाम फिर उद्यानों में जिन दयनों के मन्दिर थे उनके नाम
 भावकों के धर्माचार्यों के नाम इत्यादि कथन है किन्तु जिन मन्दिर का
 वर्णों भी कथन नहीं है इमलिय भानु रामजी का कथन मन्य है ।
 सो धो पूज्य महाराज भानु राम जी के साथ दाहशाय करने वास्ते
 जयपुर तक पधारे ता मल आत्मराम जो कथा शक्ति रमते थे कि
 धो पूज्य महाराज के समस्त मान ।

क्योंकि जिन लोगों में आत्मरामजी के साथ प्रानोत्तर किये हैं
 वे कहते हैं कि भानु राम जी का प्रदानावर करने का शक्ति बहुत हो
 न्दुन थी ।

जैसे कि लुपियना में भानु राम जी ठहरे हुए थे भार धो पूज्य
 महाराज मा लुपियने में हा शिराजमान थे तब भीमान् लाटा
 दलियामन्त, लाटा भाइयल्ल यह दो भावक आत्मराम जी
 के पास गये और पूजने दग कि ! हेमदामन ।

एक दुइने ने धोरामचन्द्र जी का मन्दिर बनवाया भार एह ने

किस प्रकार मजीब में जीव सञ्ज्ञा धारण करते होंगे क्योंकि यह निष्पात्त कम है ।

क्योंकि आमाराम जी भी तब निजय प्रासाद नामक ग्रन्थ के ३५२ पञ्चांगि लिखते हैं कि ।

प्रतिमा स्वल्प बुद्धिना । मयात् प्रतिमा का पुनः मल्प बुद्धिवालों के वास्ते ही है । सो क्या आमारामजी न तीन ज्ञान के धारकों को मल्प बुद्धिवाले नहीं सिद्ध किया है मयदय मय किया है । का यह क्या महामा जी की बुद्धि का परिचय नहीं है । अवश्य है ।

तथा सदैव काल स जीवों का लान में अधिक रुचि होती है सो लोभ के पशोमूत हो कर बहुत से मायजन धन से भी पतित हो जाते हैं ॥

जैसे कि । आमाराम जी के जीवनचरित्र के १४ व पृष्ठोपरि लिखा है कि । महमदाबाद में एक दिन धी सय ने मलादकरके धी महाराज जी साहिब आमाराम जी स प्राथना करी कि आपने देश पत्राव स आ नये आग्रह बनाये ह तिन का हम मदद दनी चाहते ह तब आमाराम जी ने कहा कि तुमारी मरजा तमारा धन हा है कि अपने स्वधर्मियों को मदद दनी इत्यादि पाठकम्य फिर बहुतसे पदार्थ महमदाबाद से पत्राव दश में आपसा कई मद्रजन माग स पराहमुख हुए क्योंकि मरन् प्रभु का पण्डितोपगाममात्र का है न तुलोम का ।

किन्तु महा मा आमागमन आ का यह धन ही था कि निज से पुत्र लिया जाय उसी ही की समारूप निदा करपा जैसे कि जीवन चरित्र पृष्ठ ६३ पर लिखा है कि । बार जितनेक सोचों के दिल स दहकों का भविष्यत घटन देखने से जैन धर्म के ऊपर डेप हो रहा था दूर किया । क्योंकि लाकों को मालूम हो गया कि :—

जो म्दबधे हैं वे मनीन है और पर पीनबर धारन करने वाले उन्मठ धन एकपक्ष हैं ६४ इस वसत नी किसी क्षत्रीय ब्राह्मण के

विश्व भोऽयं महाशक्तिः मे बहुत से तपस्विन्सुतों के साथ प्रदत्त कर
दिए । और इन लोगों को मन्त्रित हो निदत्त कर दिया ॥

अतः यह लोग बहुत ही दानस स्वयंसेवा त्याग नहीं करते
हैं किन्तु सदायः जन जन में रहना शोचार्थ मा भूया करते जैसे कि
मार्कण्डेयनेत्र ही एक महाशयने सयोगीश्वर के मन्त्रण करके श्री
पुण्य महाशक्ति को शरण ली थी जिस का नाम गंगाशाल या और
तब ही लुधियाने से एक सयोगी सप्रेम मन का त्याग के रायशाय में
श्री गणेशादिक ध्या गणपतिराय श्री महाशक्ति व पान पशुं व गया
जिस का नाम सशालचद्र या इत्यादि और भी कई मन्त्र जन इसी
प्रकार इस मन कलिरत मन के साथ प्रत्यक्ष करत हैं क्योंकि सुत्रों में
पुनः २ यदा वचन है कि । आत्मा तप सप्रेम से ही पार होता है न
न अन्य पदार्थों से ॥

या इसी प्रकार योगशास्त्र में हेमचन्द्राचार्य अपने बनावे द्वितीय
प्रकरण में लिखत हैं कि ॥

● कचण मणि सावाण थमनहस्मा मियभुवणगनल
जोकागिज्ज जिणहरत गोवि नवमजमो अहिआ ॥११॥

अस्यार्थ — हेमचन्द्राचार्य कहने हैं कि । किमी पुरुष ने सुधन
मन्त्रादि युक्त मन्त्रों स्तनों से विमूढन परम रमनाय ऐसा दिन
मदिर बनाया किन्तु तिस से भी तप सप्रेम का फल महान है ॥

* कचचनमणिमोगतस्वप्नमहच्छोद्धितसुखनन्दन ।

याशारथेज्जनगृहताडितयः सुखादधिक ॥ १ ॥

कउहदमपनगुणा ।

सदायसत्तितृत्तानु—

कचचमनिसोरायेधम्म सदस्सुत्तरसुधन्नतले ।

जकारथेज्जिज्जिदरेतमोविनसत्तवमा मपनगुणोत्ति ॥

पुण्यादोदयत ।

होली। तब मानव ही पड़ेगा कि मानवराजजी का जतिरी हमारा
 परमा वस्तु उपराज जी सब में छिपा है कि, जति बल गुन
 शक्ति आदि पराजगत् हम मानवराज जी के कपन का क्या समझें
 करें हम को तो ऐसे बचन भी भाष्य करने बन्पन नहीं हैं किन्तु
 मानवराज जी शीघ्र ही भगने बने बचन से पूछ कर मो हा जान थे !
 जैसे किन्तु हमारा बर में मानवराज जी से प्रश्न किया कि मनुष्य की
 जब भाष्य भाष्य नर्पका से प्रणिमा को अधिक मानने हा फिर उस
 प्रणिमा का बिबदे मपट्ट क्यों करती है तब इस बात का उत्तर
 मानवराज जी सगुणगोश्वर के १३१ वें पृष्ठोपरि इस प्रकार
 लिखत हैं ।

प्रणिमा छे ते कथापना रूप छे माटे तेने कथा सपट्टमा कथपय दाप
 नय कथप के त काइ भाष्यमरुत नयी पन भरहवनो प्रतिमा छे
 इत्यादि ।

(मनोभा) पाठक्याय देनिध उक्तप्रश्न होन पर मानवराज जी
 न भपगे लसमो का किस भार कटिपि है इस से सिद्ध होता है
 मानवराज जी पराजगत् विरुद्ध जिनने में भी किन्तिन् सङ्चित भाष्य
 नहीं करते थे क्योंकि प्रथम लेख में भाष्य तीर्थेश्वर से प्रणिमा अधिक
 सिद्ध करी है इस लेख में मानवर्हत्प्रणिमा से अधिक लिख दिए है ॥

फिर पद-लोग तरुधम भी सूत्रों से विडम्बण ही करते हैं जैसे
 कि जिस नगर में दिन मन्दिर नहीं होना कहा पर पद लोग मन्द
 मनिप्रद करके बैठ आते हैं कि जब तक भाष्य लोग मन्दिर नहीं बन
 वदंग तब तक हम तुम्हारे नगर में पारणा नहीं करेंगे ॥

तब बहुत से माछे मार इस प्रपच को ना आनेते हुए इस गोरध
 जाल में पन आनेते हैं फिर पट्कावा की दिसा में कटिबद्ध होजाते
 हैं किन्तु विचारशीलपुङ्ख इस बन्धन से मुक्तिदारा मूक्त (छट)
 हो आते हैं ॥

हुई और मनुमान ०१ नगतों के बहुत से आग्रहजन भी दर्शनायें
भाये हुए थे और फिर महान् महोत्सव के साथ दो दोहा भी हुई ।
तब श्रीपरमावर्त्य श्रीमोतीराम जी महाराज ने श्री सध की
सम्मेलनानुसार श्रीसोहनलाल जी महाराज को १९५२ चैत्र शुद्ध ११
को पुण्यराज पद पर स्थापन कर दिया ॥

और श्रीमती भार्या पारंगती जी को गणपच्छेदिका की पदवी
दी गई पुनः मानद के साथ महोत्सव पूर्ण हुआ ॥

किन्तु तिस समय में एक पुण्योत्सव नाम का सवेगो भाग्याराम
जी के आचार को वृत्तित वृत्त कर श्रीपूज्य महाराज के पास
दीक्षित हुआ ॥

प्रश्न—हमने सुना है आप लोग जिन सूत्र में मूर्ति पूजा का
विधान आता है वह सूत्र लोगों को सुनाते हैं नहीं जेकर सुनाते
हैं वह पाठ ओ मूर्ति पूजा को सिद्ध करता है उसे छाड़ जते हैं और
बर्षों ३ सूत्रों में जो ओ पाठ मूर्ति पूजा से सम्बन्ध रखते हैं उन को
हठताल से मिटा देने हैं सो क्या यह कथन सत्य है ॥

उत्तर—हे भगवन् ! यह सचकथन मिथ्या है, उक्त कार्य हम
नहीं करते हैं और बाहरी सूत्रों में मूर्ति पूजा का विधान है ॥

सो इस प्रकार भाग्याराम जी भी भगवन् बनाये *महान् विभित
मास्तर मास्त्र प्रभ के द्वितीयवर्ष के २१४ वृत्त पत्ति १४वीं से
इस प्रकार से लिखते हैं ॥

प्रश्न—जमने कहा है ओ सूत्रों में कथन कहा है सो पदपत्र
करे ओ पुनः सूत्र में नहीं कहा है और विज्ञास्तर शोध में है कोई
कसे करना और कोई बिना तरह करता है तिस विषय ओ कोई
पूछे तब गीतार्थ को कहा करता बिना है ॥

उत्तर—ओ वस्तु मनुजान सूत्र में नहीं कथन कहा है करते

* यह द्वितीयवृत्ति के पद का प्रभाव है ।

दिखलाने नहीं है सो क्या वे ममत्व मापन नहीं करने तथा क्या वे सूत्रों में मननिष्ठ नहीं हैं अथवा ?

क्योंकि यदि सूत्रों में भगवान् जी को मूर्ति पूजा का पाठ मिलता तो निरुपदेव वे कर्ण निष्ठन कि सूत्रों में कौन यद्गन का विधान नहीं है सो उक्त कथन में सिद्ध हो हागन कि भगवान् जी को कौन भा मूर्ति पूजा के विषय में सूत्रों से पाठ जब न मिलता तब ही भगवान् जी ने इसे लिखा ।

हिं जब भगवान् जी मूर्ति पूजा को कटि कर जानने हैं तो निरुपद्रु जीनों का सूत्रों के मान से क्या सुन में डालत हैं सो यह इन का दंड है ।

निर लिखा है कि यह बात गीताओं के वित्त में सदा प्रकाशमान रहती है सो सत्य है क्योंकि गात्र धर्मा इन धान का सूत्रों से विच्छेद उनके उक्त पूजा का निषेध करता है ।

सो हे स्वामी लोग भबता भगवान् जी के ही कथन को स्वीकार करके जैन सूत्र में मूर्ति पूजा चला है इस भगवत् रूप धारण को छोड़ो । यदि आप सो भगवान् जी से अधिक विज्ञान हो तब तो भगवान् जी के उक्त को भगवत् रूप निच्छ करके नकार करो यदि भगवान् जी से स्वस्ति विज्ञान हो तब इस भगवत् कथन को त्याग । निर भगवान् जी स्वस्ति यद्गन को कटि कर सिद्ध करते हैं । सो भी यह कथन युक्ति बाधित हो है ।

क्योंकि यह कटि भी बद्धाव के वर रूपान्तर है जैसे हिसक एवं निर विचारनीय बात है यदि यह कटि सत्य रूप हाती तो सूत्र कर्ता मूठ सूत्र में ही रखते ।

जब सूत्र कर्ता ने मूल सूत्र में उक्त कथन हो रखा ही नहीं इस से सिद्ध होगी कि यह कथन सूत्र कर्ता से विच्छेद है अथवा सूत्र सम्मन नहीं है । और भी पूरा मशहूर का १९१३ का खोजता

हुशियारपुर में था तिस काल में ही बीर विजय भादि सवेगियों का भी बीमासा हुशियारपुर में था किन्तु कोई भी सवेगी भीमद्वाराज के सम्मुख नहीं हुआ ।

फिर भी पूज्य महाराज ने १९५८ का बीमासा मालेरकोटले में किया । और तिस समय ही भी परमाचार्य शांति मुद्रा ज्ञान में समर्पित भी पूज्य मोतीरामजी महाराज वा भीगणायकछेदिक भी गणपतिरायजी महाराज इत्यादि साधकों का बीमासा लुधियाने में था तब भी पूज्य मोतीरामजी महाराज को उबर भाने लगा मरिगु सर्वाङ्गी की मति हुई हो जान स तथा आयुस्वल्प होने के कारण से भीपूज्य महाराज १९६८ भादपित छठ्या मास्यी को स्वर्ग गमन हुआ ।

तब बीमासा के पदवात भी गणपतिराय जी महाराज वा भी छाल चन्द्र जी महाराज इत्यादि २६ साध पंडितों में एकत्र हुए फिर भी कथने सम्मति करके मन्थाला निवासी साय छत्रमूळ जगन्नाथ मल्ल वा ममूनसर निवासी भावको की सम्मति के साथ वा अमान् साक्षात्शिराम पंडित'छाया'र'हो भी सम्मति भनकूळभीसधने महान् भावन्द् के साथ भीपूज्य मोतीरामजी महाराज की आज्ञानकूळ १९६८ मंगशर्त शुद्धा ८ मा का गुरुपूजा बार के दिन मन्थाल के समय पूर्वाह्न विधि के साथ आचमन भी स्वामी साहजलान्जी महाराज का भीमाचार्य गुरु पर स्थापन कर दिया तब स ही पर्वों में भीपूज्य साहजलान्जी महाराज पंग लिखना मर्दम हुआ तब और भी सधने शास्त्र के प्रमाण स भनकूळ चार्मिक कार्य हुआ तब वा इ' रहे हैं ।

मरिगु भी पूज्य महाराज मगनन ब्रह्मचर्य स्वामी के ८९ वरी वरि विराजमान हैं ।

अपूज्य महाराजने शैवधर्म का प्रचार मात्र मगनील करते १८११ का बीमासा मन्थाल में किया ।

फिर भीमासा के पदचान् जघावल क्षीण हो जाने के कारण या
उत्तर में स्वधा के प्रयोग से भी पूज्य महाराज अमृतसर में ही
भीमान् छाला हरनामदास सतउलही कोठीमें विराजमान होगये ॥

बिन्नु भा भाषाई महाराज के पधारने से अमृतसर में धार्मिक
अनेक कार्य हुए या हो रहे हैं ।

प्रिय पाठ को ! एक बात और भी तथागण्डियों में बड़ी
प्रधानता से बतल रही है कि किसी महात्त मुनि को यह लोग किसी
प्रकार के पद में देवदत्त करके सनातन जैनधर्मसे पतित कर देते हैं ।
फिर भाषाई असत्य रूप निहा लिख के इस क नाम से मुद्रित कराते
हैं पुन कहते हैं, माधो यह प्रथम दृष्टिवा या फिर इसने दृष्टियों
क मनिष्ठाधारण देख कर तथा जैन भूषों में स्थान २ मूर्ति पूजा
के पाठों को पढ़कर (जो पाठ दृष्टि के किसी को सुनाते नहीं)
विचार दिया फिर सम्पत्त छन्दोधार को देखा तब ही इस के
चित्त में मूर्ति पूजा महत् मातृवर्धित हो गी फिर इसने बड़े २
दृष्टों के साथ प्रस्तावर विषय लिखु किसी भी दृष्टक न इस को
बतल नहीं दिया तो फिर हम में जान लिखा कि यह दृष्टक मत तो
बतल बपोल बर्जित हो है पुन इससे गुप्त सनातन जैनमत मूर्ति
पूजा रूप स्वीकार कर लिया प्रियपाठको ! यह सब हमने स्वस्वपोल
बर्जित करन हैं हम भाषाई इस विषय का उद्धारण देत हैं ॥

जैसे कि सन् १९६४ वर में पन्तम विजय जाने अमृतसर के
एक धर्मोत्सव श्रेयस्वर साधु को किसी प्रकार मारने परे में डाँठ
कर बहारत जैन पाठशाला में भज दिया ! और उसको एक छेक
भी जैनमत की निहा रूप लिखकर मेजा और साध में यह भी
लिख दिया कि माधो मारने बमोर्त हम छेक का प्रकाशित करा हो
तो पुनोपासक ने यह यह लिखकर बल्लभ विजय जी को मेजा
को दृष्टों के जानने कहे तब यह को बल्लभ छेक हो देली हो
हम इस बल्लभ पर देने हैं बेकिदे !

४—आवितामपि धैत्यवन्दन मात्र पढ़कर "मुरती को मनस्वर करने की किन् शास्त्र में लिखी है ।

५—नमोऽङ्गु सिद्धाचार्यो पाश्याय सव साधुभ्य ये भवतः किस भागमें हैं ।

६—आदिनि वेदपार किस भागमें हैं ।

७—उत्तमगन्धर्व लघुगान्धीस्तव ओ प्रतिश्रमण में बोलने हो किन् शास्त्र में लिखा है वे प्रतिश्रमण में स्तोत्र पढ़ने ।

८—प्रतीकमण में स्तयन और सज्जाय बोलने हो सो कोण से भागमें हैं ।

९—तीर्थ वन्दना ओ तुमरे पच प्रतिश्रमण में है सो किस शास्त्र के अतीये ।

१०—पोसदनुपद्वयव्याख्या पोसदपारवानी गाथा किस भागमें हैं ओ तुमारे मन्त्र में प्रचलित है ।

११—सिद्धाचल पर्वत को धैत्यवन्दन करने ये वाहा लिखी है ।

१२—पलीताने के पाम ओ सेतकजी नदी है उस में स्नान करना महाम किन् भागमें से बतलाते हो ।

१३—दुर्गे और कोपरा अगर्द्वे इत्यादि वस्तु अनाधारक कहते हो सो किन् भागमें में ऐसी वस्तु को अनाधारक लिखा है साथ इस क ये मो निरमेविषा अथ के पृथक् वस्तुओं को ओ तुम राजी में आते हो ता तुमारा राजी माञ्जन वन मह होना है या नहीं ।

*पत्र जैसे लिखा हुआ था तैसे ही पत्र पर लिखा गया है किन्तु हमने पत्र को मुद्र करना ठीक नहीं मानकरा क्योंकि लिखक को ओ आया है वह मध्यजन शीत ही जान लेंगे इस प्रकार भय पत्र मो मुद्र नहीं किये गए तथा यदि मुद्र करके शिरोपा धार लिखते तो पुस्तक के अर्थोव वृद्धि होने का भय था ।

२५—इसके कालिक मन्त्रागम जी में जो घोषन प्रत मा बबला दिह का बटा है या कथा नहि लेन क्या कारण ।

दससतचुनेटाल ।

एठइगम ! इन प्रदनों का उत्तर भातमानइ जैन पवि का में प्रकाशित नहीं हुआ है विचारये की बात है हमारे प्रिय सवेगी भार्द सत्यादि प्रदों को स्पष्ट कइये कहां २ काम कर रहे हैं क्योंकि सवेगनन में 'शास्त्रागमन तो सत्य ही है किन्तु मन' कलित रूप प्रदों का भगवान् प्रदान है हम वास्ते इन लोगों की बुद्धि विह्वल हो रही है, और फिर यह हमारे प्रिय भार्द इति वास्त प्रदन का उत्तरन माने से शीघ्र ही झोष करने लगते हैं मूख से अपराध बोधने हैं ।

उदहरण ! जैसे कि सन् १९४७ में भातमान जी कसूर (कुशपुर) में ठहरे हुए थे तब भी श्वेतान्तर प्रधानक वासी भावक समुदाय जैसे कि टाटा औद्योगिक, पंचधाइशाइ औद्योगिक, दिवानचद, हराराम टाटा भातमान गुदइसेजा, दुविच, मनेइशाइ बिस्वाइशाइ लाल गाराइशाइ बसू परमानंद पटोइरा मठेराम इत्यादि भावक भातमान जी के पास गये और यह प्रदन दिया ।

कि भातमान इनको एक जैन शास्त्र के मूठ पाठ से मूर्तिपूजा सिद्ध करके दिखलाये !

भातमान उ — जैनशास्त्र में मूर्तिपूजा का विधान है ।

*भातमानजी के ओवर बरिच क पदन स मा नि बय होता है कि । भातमान जी ने जो कुछ पत्र दिया है वे सर्व ओ श्वेतान्तर जैन मुनिों से ही लिए हैं किन्तु सवेगनन के पारप काल के पदवात् किसी भी सवेगी से और म पुस्तक नहीं पडा है ।

कुछ बनों के का भावक उन भातमान जी के पान नहीं गये थे और का मन्त्र निष्ठ गये थे !

आयकमडल—कौनसे सूत्रमें है ॥

आत्माराम जी—दशमै कालिक सूत्र में है ॥

आयकमडल—हम न पकौ श्रीमान लाला हरजनराय जी।
मठार से दशकालिक ला देते हैं आप हमको पाठ दिखला दें।

आत्माराम जी—अच्छा लादा।

आयकमडल ने जब धामान् लाला हरजनराय जी को मठार में
स श्री दशम कालिक सूत्र लाकर आत्माराम जी को दिखलाया
और कहा कि आप इसमें मूर्ति पूजा दिखल व तब आत्माराम जी ने
भी दशमै कालिक सूत्र का पाठ जो चूलिका लिखी है उन्हीं में
से एक गाथा दिखलाई तब श्री आयकमडल ने कहा कि यह
सूत्र का गाथा नही है और आप का प्रतिज्ञा यह थी कि हम श्री दशमै
कालिक सूत्र से दिखलावगे वा चूलिका न सूत्र है नाहो प्रमाणिक है
और इसका क्या कान है ?

जब इतना आयक मडल ने कहा तब आत्माराम जी काया
तुर होगी फिर अनुचित शब्द बोलने लग गये कथा जान आयक
मडल अच्छे मुहूर्त में न गया हागा जिस वास्त आत्माराम जी तपगये।

तथा श्री सूत्र टुट गम ठीक कहा कि (आ उभ सरण जति) मर्थात्
दारे हुए पुण्य को काय हो का शरण है, सो इसी प्रकार आत्माराम
जी ने भी आयक मडल के साथ पत्वार किया ॥

निर्गुण यः सरेगी लाग चत्य शब्द स ही मूर्ति पूजा सिद्ध
करणी व हो है सो यह कहा ये य शब्द है जिस के विषय अमरकाय
में ऐसे उदय है यथा :—

(चतुर्मापन इति ज्ञापन मदस्य) मर्थात् चय और आयतन
यद् दाना नाम दण्डाला की मूर्तिका कहें ॥

जिस की रचना रंग मूर्ति पत्रा में व्यवहृत करत हैं शक्ति ॥

प्रश्न—मूर्ति ध्यान का धारण है इस लिये ही पूजन पात्र है ॥

उत्तर—मित्रवर ! यह भी बचन भाव वा दास्ययुक्त है क्योंकि
 कारण व मन्दा ही वायु लागा है मोक्षेन का कारण जटिल नहीं
 हुआ करता यदि मूर्ति का रूप मानागे तो वही कार्य पर्यन्त बनायेगा
 इसलिये मोक्ष ही प्रधान वा कारण और अज्ञान ही अनप्रमत्ता ही है ॥

अतः—जैसे सामान्य करने में भावनादि की भाव्यवृत्त है
इसी प्रकार कर्म के समय में कृति की भाव्यवृत्त है।

[illegible]

प्रश्न—किस विषय में शिक्षा विभाग को अधिकार प्राप्त हैं ?
 जवाब—विशेष विधायक विभाग के अधिकार हैं ।

उत्तर—जिस प्रकार का अविनाशक प्रमाण है कि जिसका
है और अविनाशक का अविनाशक वह है जो कि जिसके विनाश
दिखा देता है इत्यादि ।

[illegible][illegible]

दाता कैसे बन गया है। इसीलिये यह मूर्तिपूजा यकि वा सूत्र द्वारा
 थापित ही है। तथा निम्न प्रकार यह लांग मूर्तिपूजा में हठ करते
 हैं इसी प्रकार मुख्यपति विषय में भी यत्नाव करते हैं जिस के लिये
 अनन्य सूत्रों या प्रार्थनों के पाठ होने हुए भी यह लोग मूर्धपति हाथमें ही
 रखते हैं सो जिह्वाभजनों ! इस के प्रमाणार्थे जैनहिनेच्छु, पत्र ईस्वी
 सन् १९०६ माह जुलाई, मंक ६ पृष्ठ ६ से देखिये —

धीमान् सुपादक थाड़ीलाहजी लिखत हैं कि मूर्धपति का सबब
 के जिसको हमने बिल्कुल छाड़ दिया था उसको छेड़ के गमीर का
 देने वाले भाइयो मूर्ध जिन किताबा का मानन हैं उन किताबा का
 भूमिप्राय यहां बतलाने हैं । मूर्धपति पाटा, दाढ़ी, भार जो तरापी
 मित्रता ॥

द्विज शिष्याराध ! श्री विजयमन सूरि के प्रमाणिक भावक ने
 संवत् १९८२ में बनाया है उस में लिखा है कि :—

मुखमाधेने मुहपति, हेठीपाटोधार ।

अनिहेठेदाढायइ, जोतरगलेनिवार । १।

एक कान भज सम कहो, गभे पछेवडी ठाम ।

केडेवोशीसोपली, नावे पुण्य ने काम ॥ २॥

सब इस हास्य रस युक्त काव्य में मूर्धपति का हनु बराबर सन-
 जाया है ! देह में पैसे की बस्तनों बांध रत्नमें से क्या पुण्य होगा !
 पैसे की बस्तनों का हान में रखन से ही उपयोगी धोलागि विजयजी
 साय हिम की कल है संवत् १८९० में श्री लक्ष्मि विजयजी महा-
 राज ने, हरिबल प्रणजी का राम बनाया है उसमें प्रमाण संबंधी कृत्य
 के बारे में उपर्युक्त दिना है कि :—

मुखमयोधी जीरडा माहे निज पट्टम,

साधुजन मुखमुरति बाधी कहे जिनधर्म ॥ १ ॥

सुविहितमुनिजानीये माडे निजपटकर्म ॥

साधुजन मुखमुपति बाधी कहे जिन धर्म ॥ २ ॥

श्री भोयनियुक्ति गाथा १०६६-६४ की धूर्ती ।

चउरगुलविहत्थी एयमुहणतगस्सउपमाण वीय
मुहप्पाण गणणपमाणेणइक्कि ॥ १ ॥

सपाइमरयेण पमसणठावयतिमुहपत्ति नास
मुहच घधइ तीएवमहिमज्झतो ॥ २ ॥

सपातिमसत्त्वक्षगार्थं जलरद्भिर्मुखेदियतेरज स
चितरेणुस्तत्प्रमाजनार्थं मुखवस्त्रिकावदनि नासिका
मुखचघघ्नानिययामुखवस्त्रिकपावमनिप्रमार्जयन्त्ये
नयेनमुखादोनरज प्रविशति । श्रीप्रवचनसारोद्धार
गाथा ॥ ५२१ ॥ सपातिमजीवमाक्षिकाया रक्षणार्थं
भापमाणेर्मुखमुखवस्त्रिकादीपतेतथारज सचितपृष्ठी
स्तत्प्रमाज्जनार्थंचमुखपातिकादीयते ।

रेणुप्रमाज्जनार्थं प्रतिरादयति तीर्थं करादयमनया
वसति प्रमाज्जयन् माधुर्नामा मुख च घघ्नाति आ
छादयति । पुरिमद्वका प्रायश्चित्त ।

श्री महाभिरुपेय से इतद्विना दनेरह इतिवा बरिवा पटिह म
बरिवा—मनि कवद मन्हावकोव कनादे—एत इतिमद्वका प्रायश्चित्त
करा है—देनताअ को बुनि से बाबरा पूछउर के बचन मुहाति
दंफला करा है ॥

यदिन *हेमचन्द्राचार्य यह भी लिखते हैं कि कर्म स्वास से शत्रु काया भी भी हिंसा होनी है ॥

साधु विधि प्रकाश में ॥

प्रति लेखन करते वरत मूहपत्ति बाधना कहा है ॥

यतिदीनद्वयमें काजो लेते वरत मुखरत्निका बाधना कहा है—
आचार दिनकर में बाधनादिह के लिये मूहपत्ति बाधना कहा है ॥

शानपदी में

देशना देते वरत मूहपत्ति बाधना कहा है ॥

निशाधच्छि—उद्देश १० वें सन्निति के अधिकार में माया बाधना
वरत मूहपत्ति हरी भद्रसूरीकृत आवश्यक वृद्धत् गृहति में मरगये साधु
को भी मूहपत्ति बाधना कहा है ॥

प्रमसूरीकृत यति दीनव्यासटीक में काजो लेते या ठले जूत
मूहपत्ति बाधना कहा है—वृद्धत् माय म देशना देते वरत गमधर
प्रमुख आचार्य न मा मूहपत्ति बाधा एवा कहा है—रिवार रत्ना
कर ग्रथ में व्याख्यान के समय मूहपत्ति बाधना कहा है ॥

श्री भगवता शक्तक १६ उद्देशा—२—में सङ्गमभियादि पाठ
खुल्लेरीन से समझा जाता है कि जिन समय शत्रुद्रुमभ भागे बलादि
रखे सिवाय बाल उस वरत साधु माया बाल कहते हैं ॥

और मूह के भाग हस्तवलादि आड़े रख कर घाले उस वरत
जीव रक्षण के लिय नियम माया बाला कहते—भक्तगङ्गासूत्र में अधि
कार है कि—गानमस्यामा गात्रो का गये यदा एवता न (भक्तिमुक्त)
उनह पुछा के कहा पधारते हा । गानम जी न । निष्ठा वृत्ति के लिये
जाता हू ऐसा कहा तब मेरे घर भोगनाह है इसलिये वहा चलिये ।

* योग शस्त्र सटीक तृतीय प्रकाश पृष्ठाङ्क १२४ यथा—
मुखरत्नमधि सम्पत्तिम जीव रक्षणादुग मन्वरात विराज्यमान
बाह्य वायु काय जीव रक्षणांमुखे धूलि प्रवेश रक्षणाच्चोपयोगि । इति

ऐसा कह कर प्यता ने गाँतमस्यामी के एक हात की मगुलि पकड़ के रखने में बाँटें करते करते दोनों घटे । अब जब एक हाथ में सोझी है और दूसरा हाथ प्यता से रोका है तब (जा मुह के भागे मुह, पत्नी नहीं बांधी हो तो) क्या गाँतमस्यामी खुल्ले मुँह से बातचीत करते गये होंगे ॥

इस तरह से चारों बाजु से विचार करने से मुहपत्ती साबित होती है येमा होकर भी एक फकत मन की बात है कि कितने उसको मर्याद उदा देने हैं । क्यावशत के धकत मा महुपत्ती नहीं बाधने वाले धर्म के मन्थुओं को बाधनरने के उाके कान उद के मर्यापत्ति बाधनी पडती है इससे खुल्लि तरह से दुरामह साबित होता है । जिस मुहपत्ती को शास्त्र स्थापन करना है जिस मुहपत्ती का उपयोग पारसा मादि अन्य धर्म के कुछ भी धर्म क्या बहुत बात है ॥

जिस मुहपत्ति का हाट के सुधरे हुए जनाने के युरोपियन डाक्टर खिराह के वक्त मुह के भाग बाधने हैं ॥

जा महुपत्ति खुद नहीं बाधन बल् माभाराम जी मदारान्त उहाँ ने माव रणी और खुद कहीं नहा बाधत इस क सुपय बतवाने में पछटे गये और अपने वग म हूटे पड ॥

ऐसी मर्यापत्ति जैन मुनि का विद् है । जैन पाँडे का हथिपार है जैन शासन का शुगार है और सब को मानतोय ह ॥

नामा में दो वक्त उसका अब हुआ यदि कुछ भाइवर्य बाँठा नही उसका सद्व्र हमेशा विजय हो ह तकिन जिस का नाम मुहपत्ति महु का पत्ति मुह का कबज में रखन वाले उसका धर्म का बाध विद् मानने वाले लाग उनके निदर्थों क मुपरिष्ठ कथा के बहाने से कमी दक्षा तदवा निर्या मापय तुकठ शब्द बालेग ही नहीं मुह अपर का दह बाधु क ओ सज्जनार्थ का लक्षण है वस का कर्त्तव्याचार स्वेग बिबलता उदराने उससे क्या मुहपत्ति के मल निबल बन जायेंगे जैन को सन्धि स कौय मझात है ॥

प्रिय पाठकगण ! यह सर्व उक्त लेख हमने यथावत उक्त पत्र से उद्धृत किये हैं सो उक्त कथनों से तिर्य है कि जैन धर्म के मुनियों का विद्वद् मुहपति मुहपर बाधना हो निर्य है सो इतने प्रमाण होते हुए जो सरेगी लोग मुहपति मुख के साथ नहीं बाधने हैं वे उनका असत्य दृष्ट है ॥

तथा जो यह लोग सुपुत्रा का पत्र पुनः कदु शब्द प्रदान करते हैं तिस का मूठ कारण यही है कि आ सृष्ट पदय शास्त्रानुसूल गुणो पदेश करता है उस पदय से ही यह लोग प्रतिकूल हो जाते हैं और फिर उस को मनुचित शब्द बोलने वा लिखने लग जाते हैं । उदाहरण ! जैसे कि धोमान् भास्कर लोका जो ने सम्यक् १५०८-९ के वर्ष में श्री भद्रमदाश्रम में जैन धर्म का गुप्त उपदेश किया तब ही यह लोग उसके प्रतिकूल हो गये और लोका जी को मनुचित शब्द लिखने लग गये क्योंकि लोका जी सूत्रानुसार उपदेश करते थे ॥

सा आ उपदेश लोका जी ने किया था तिस समय में ही उन्होंने एक पत्र ६८ भक्त युक्त लिख लिया था भवित् उसी पत्रका प्रतिक्रिया जीर्ण पत्र एक हमारे पास है सो उस (जा गजर मापा में है किन्तु यहाँ पर हिन्दी करके लिखते हैं) में से कुछ भक्त वा अन्य शिक्षाकर भक्त पाठकों के आचार्य इस स्थान पर लिखता हू ॥

१ केवली भगवान् त्रिफालक हैं सा उन्होंने तीन काल का स्वस्व स्व ज्ञान में ऐसा ही देखा है कि सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन सम्यक् धार्मिक वा नवतत्वादि के जाने बिना कोई भी पाप मोक्ष में नहीं गया नहीं जायेगा भवित् प्रतिमा के पूजने से काह मा जोत्र मोक्ष नहीं गया है और नाही जायेगा नाही जाता है ॥

और नाही सूत्रों में किसी मूर्ति पूजक का अधिकार है कि भक्त जोत्र मूर्ति पूजने पूजन मोक्ष हो गया एवं सर्वत्र जानतेना । सो ज्ञान दान धार्मिक से ही मोक्ष है दक्षा सूत्रद्वारा प्रथम भूतस्वरूप भ० १२ पृष्ठा ६९ ॥

२ जीवगति मजीवगति सत्रों में यह दोनों ही राशि कहाँ हैं
 सो यदि कोई तोसने राशि प्रति पादन करे ना यह निम्न है दत्ता
 सूत्र उक्ताई ओ । प्रदन १९ ॥

३ जो जीव का मही जानना मज्जोर का भी मही जानना ना
 मला समय माग हैस जान सना द दगे सूत्र दशवैकालिक म० ४ ।

४ सम्यक्त्व के बिना सम्यक् ज्ञान मही सम्यक् ज्ञान के पिता
 सम्यक्त्व रिश नहीं सो सम्यक् ज्ञान सम्यक् दर्शन सम्यक् चारित्र्य
 के बिना माह मही उत्राख्यत सू० म० १८ ॥

५ साधु स्वयं मोर मसाधु पदुस्व द दशवैकालिक सू० म० ७ ॥

६ साधुओं के पश्य मदात्रन सपथा प्रकारे हैं देश मात्र नहीं
 हसीवास्ते साधुओं को मंदिर का उदेश करना सूत्र विद्वद् हे देखा
 सू० दशवैकालिक म० ४ ॥

७ ज्ञान पिता दया नहीं दया ही समय है सू० दश० म० ४ ॥

८ भगवान् ने अपने मन से (महिता सज्जमानना) यही धर्म धन
 लाया है नतु मूर्ति पूजा ॥

९ भगवान् श्री वज्रमन् हरामोजी न शात धाहार प्रदन किया
 तथा अन्य मुनियों का प्रदण करने का उपदेश दिया दत्ता सूत्र भाव
 रांग प्रथम धुनरुक्म म० ९ उत्राख्यत म० ८ ॥

१० धायक बेवली भगवान् का ही प्रतिपादन किया हुआ धम
 प्रदण करे देखो सूत्र उक्ताईओ प्रदन २० यपि नृ हिता धम न प्रदण करे।

११ जो प्रवचन है सो भय है किन्तु गोप सब भय कप है देखो
 सू० उक्ताई प्रदन २ ॥

१२ साधु गृहस्थादिसे कोईमो कार्य न कराये सू० नशीय उदेश ॥

१३ मित्र भाग्य भाषण करने वाला और मनी मोइनो कर्म की

● आत्माराम जी के जीवन चरित्र में जो गहरावाले के विषय
 में लेख लिखे हैं वे सर्व अनुचित हैं ॥

प्रकृति बाधता है सू० समवायाग जी स्थान ३० वा अथवा सू० १७
अतस्त्वय ॥

१४ मिश्र भाषा सयथा ही त्याज्य है देखो सू० दशरथे० म० ३१

१५ सप्तमय चतुर्निक्षेप का स्वरूप अनुयोग द्वार जी सूत्र में है
किंतु भाषानिक्षेप ही बदनीय है ननु भा० ॥

१६ साधुक नष्टादश पाप सेवनका त्याग सर्वथा प्रकारे है न
वेश । सो जब सर्वथा त्याग है तब भनिप्रहादि धारण करके मक्षिणा
का घनयाना जिन पूजा का उपदेश करना कैसे हो सकता है, सावध
कर्म सूत्र विद्वत् है देखा सूत्र० उग्र्याह जी साधुगुति ॥

१७ जिन यस्तु पर मूर्च्छा भाव है वही परिमद है देखो सू०
दशरथेकालिक म० १ ॥

१८ मगवान् ने दोनों प्रकार का धर्म प्रतिपादन किया है सूत्र
स्थानार्ग स्थानद्वितीय ॥

१९ गृहस्थ धर्म म द्वादश मग द्वादश प्रतिमा ही हैं नाभि
मूर्ति पूजा दक्षिणे उपासक दशाग सूत्र या दशाधतस्त्वय सूत्र ।

२० अर्हन् प्रभु ही सत्यवत हैं देखो सूत्र उत्तराध्ययन म० २३ ।

२१ साधुक नवको गी प्रत्यावर्तन है ता बनलाइये प्रतिमा का पूजा
द्विज भागे में है नवको गी का स्वरूप देखा सू० स्थानार्ग स्थान ९ ॥

२२ राग द्वेष ही पाप कर्म के बीज हैं उत्रा० सू० म० ३१ ॥

२३ तपादि मुक्त कबल निजगार्थे हो कर नव मग्यार्थे ॥

२४ गन्धर्वग वद्वानों ही मग क्षय हार्यंगे तब ही मोछ होवेगी
देखो सू० उत्रा० म० २१ ॥

२५ मंदन म पतिग दृष्ट की प्रशंसा कर ता प्रायश्चित्त भाग
है द्वा सूत्र मग्यार्थ ॥

२६ दोनों प्रकार का मग्य मगवान् ने बनलाया है बाळ सूत्र

एभिर्न मृत्सु सो विन विन जीर्णो वा कोन कोनता मृत्सु होना है
ऐसी स० उत्रा० म० ५ ॥

२७ बेवली वा १४ पूर्णधारी से लेकर १० पूर्णधारी पर्यंत सर्व
सन्भूत है मही जो सूत्र में देख लीजिये ॥

२८ जो बेवली भगवान् में मयाचोप कहे हैं वे सर्व मुनियों
को स्वागतीय हैं देखा स० दश० म० ३ ॥

२९ भगवान् का प्रतिपादन किया हुआ धर्म एवाग्न हितकारी
है वही स० प्रदन व्याकरण ॥

३० व्याका ही नाम पूठा हुआ यज्ञ १ प्रदन व्याकरण स० म० १

३१ सर्वैव ही शक्ति का उपदेशक नादवा स० उत्रा० म० १० ॥

३२ ब्रह्मद्वारा व्याकरण ही पाया है ब्रह्मा जो सूत्र वा भगवती भी
सूत्र में इन का वर्णन है ॥

३३ भगवान् में समार से पार होने के मार्ग पश्य सबरही
कहे हैं म० व्या० ॥

३४ श्री भगवद्व्याख्यान श्री सूत्र म उभय (दोनों) बाळ साधु
साधरी भावक भाविका का पहावरपक करन की भाषा है मनु मंदिर
पूजने की ॥

३५ मूर्तों में पूजा २ का उपदेश है कि विद्या काचित् से ही
मोक्ष है मनु म० ५ से स० व्याख्या व्याख्यान हितोप ॥

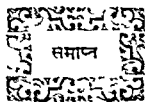
३६ जिन वक्त्रों में विम्बित भाव मो सावय उद्देश मही है
ऐसी सूत्र व्याकरणदि ॥

एकवचन अत्र भेदात् एवमादिना म शादि मान् पूछे वा
सुश्लेष होये वा सलोपना सुश्लेष नव ही मूर्ति पूजक अत्र वा
निर्मलधारी सा० एवमादि की विद्या बरन मने और उबहे दिने
मन्त्रिन इन्द्र निगमे एव मो वर वन व रव मिते वा दृढ धर्मि
बलना है बर्हिह मुद्र पूजा मूर्ति का वे दन वाजा है वन दृष्ट पूजा
मुद्र पूजा वही वा मन्त्र पूजा वही दोनों का रक्त ही अर्थ है एभिर्न

किन्तु आचार्य जी महाराज ने परोपकार किये हैं अर्थात् जिन्होंने ने परोपकार की भांशा से असारा ससारोऽय, गिरि नदी घेगोपम यौवन, तुलाग्निममजोवन, शरदस्रच्छाया सदृशामोगा स्वप्न सदृशो मित्र पुत्र कन्य भृत्यवर्गमम्बुधः इत्यादि सद्भिचारो द्वारा परम वैराग्य तथा सशौलता को उपाजन कर इस क्षण भगुर ससार को त्याग दिया और मुनि धृति ग्रहण की क्योंकि कहा है—आदौचितेतन जायेसता सम्पत्तेजरा असतातु पुन जायनैवचिते कदाचन इति । पुन आपने मदन दाग्यतासे रुद्ध कालमें ही धृत विषाक हृदय तथा गूढाशय को ग्रहण किया पुन' तब क्षमा द्या शांति इनकी मझान स्थरसे उद्घाषणा की और मृदु सशोमल मायोपद्म रूपी तोष्ण शर स नम्य जीवों व हृद्यों से मिथ्यात्व रूपी कठिन तदभा को उत्पाटन किया, पुनः सुधाव्य मनोहर व्याकथनोंसे भङ्गमन का उत्तजन किया, प्रेमभाष तथा सम्पदी वृद्धि का दश देगान्तरी में पर्यटन करके मनेका ही प्राप्तिवों का भजन मायित सय घम में उपस्थित करके हट किया, और स्व भाग्य गुरुघर्षे महान तप किया पुनः गम्प्यातम याग द्वारा आत्मा को निमल और पवित्र बनाया और मन में भजन नहन् करने तथा मा हनो मा हना ऐसा उपदेश करते हुए स्वयं गमन हो गये ॥

इसलिये शिष्यवरो ऐसे महानावाय व गुणानवाइ करने से तथा इनके गुणों का अनुकरण करने से वा इनका भोजनवर्ति पढनेसे जोय पापकरो मल को ह्मामृज करन है इसलिये प्रार्थना है कि ऐसे महारामा के नाम की विरह्यायी करके मोक्षपिहारी बना ॥ सुख-विबहुना ।

ॐ शान्ति ! शान्ति ! शान्ति !!!



त्रिपष्टि चतुः पष्टिर्वावर्णा शम्भु मते मना ।
 प्राकृते सस्कृतेचापि, स्वयंप्रोक्ता स्वयं भुवा ॥१॥

सो समिति काल म त्रितने सस्कृत भाषा के व्याकरण उगटाय होने हैं जिनसे भनि प्राचीन स्वरूप परिभ्रम तथा बहु फल प्रद भी शाकटायन व्याकरण है अतः पणिनीय व्याकरण की मष्टाध्यायी के पुनीय मणाय के चतुर्थे पाद के १११ वें सूत्र में शाकटायन मुनिका मत तथा सूत्र में नाम प्रदत्त किया है यथा—

(सङ् शाकटायनस्यैव) मणिः स्वामा दयानन्द सरस्वती जी ने मष्टाध्यायी के चारक प्रकरण के हिन्दी भाष्य के ४८ वें पृष्ठ में ऐसे लिखते हैं कि—(उपशाकटायन व्याकरणा) मयात् यून है अथ व्याकरण शाकटायन व्याकरण स । सो सब पुनरा । श्रीशाकटायनाचार्य जैन मनानुयायिहो सिद्ध हो चुके हैं । क्योंकि इस व्याकरणापरि अनेक टीकायें जैनाचार्यों ने ही करी हैं । मणिः शाकटायनाचार्य भी अपने आपछो अन्य बेवली देशीयाचार्य ऐसे नामस लिखते हैं । जोकि जैनधर्मके उल्लासार्थिक शब्द हैं । तथा जैन मनानुसारही प्रकिया है अतः बिना मणि नामक टीकायें प्रकियना चार्य ऐसे प्रति पादन करते हैं कि—आप्येपयापी यही व्याकरण है जैसे कि—

● श्लोक ●

स्वल्पग्रन्थ सुखोपाय, मपूर्णयदुपक्रमम् ।
 शब्दानुशासनसार्व महच्छामनवत्परम् ॥ १ ॥
 इन्द्रचन्द्रादिभिः शब्दैर्यदुक्तशब्दलक्षणम्
 तदिहास्तिममस्तव यन्नेहास्तिनतत्कचिन् ॥ २ ॥

महा इस महा मन्त्रके धात्वादि को अधिक तर भावदयकता है किन्तु कई भी पुस्तक उक्त विस्तार युक्त दृष्टिगोचर नहीं हुआ इसी प्रयोजन से प्रेरित हो कर मैंने उक्त दो व्याकरणों के सूत्रों से इस की व्याख्या को लिखा है। सो महानाशा तथा ब्रह्म विश्वास है कि पण्डित जन इस महामन्त्र की व्याख्या को पढ़न कर मेरे परिधन को सफल करेंगे ॥

उपाध्याय जैनमुनि आत्मरामजी पनायी ।

नमस्कारपरम्परेद्वितीयस्य ॥ प्रा० अ०८ पा०१
सू०६२॥ अनयाद्वितीयस्य अनमात्व भवति ॥

इस सूत्र से नमस् शब्द के द्वितीय शब्द के मकार को अर्थात् नमस् शब्द के मकार के मकार को मोक्षार हो गया जैसे कि (नमो स्कार) पुन -

क-ग-उ-ड-न-द-प-श प स = क = पामूर्ध्वलुक् ॥
प्रा० अ०८ पा०२ सू० ७७॥ एपासयुक्तवर्ण सम्यन्धि
मूर्ध्वस्थितानालुक् भवति ॥

इस सूत्र से सकार का रूप हो गया तब (नमाकार) ऐसे रहा पुन:-

अनादौ शेषादशपोदित्वम् ॥ प्रा० अ०८ पा०२ सू० ८९ ॥
पदस्यानादौ वर्तमानस्य शेषस्य चादेशस्य दित्वं भवति ।

इस सूत्र से ककार हित हो गया तब एतिपठ प्रमाण (बनाकार) एमे निरु हुमा यह पूर्वक लेन से मने भानि ने न प्रमाण पुन सिद्ध हुए ।

॥ अथ सत्त्वं सन्त्र ॥

नमो अग्निनाथ । १ । मित्राण ।

नमो आचार्य ग नमो उरु ज्ञायाण ।

नमो ए मन्त्र म हूण । इति ।

भगवति सत्त्वं शक्ति १ उच्छे १ ॥

ज्या ५५ (मा) न नमस्कार (अग्निनाथ) (महेश्वर)

महेश्वराय ध्यात सत्त्वं गत त्वय न होकर बहुत शब्द बनता है

। सदा नाम प्रादुर्भूत । (मि) तह मा मि मिहित भगव तों के

ताइ नमस्कार हो गाने उन की नमस्कार हो (नमो) (नम) नमस्कार

हो (मित्राण) । (मि) भ्य (पधमगधा) गत सत्त्वं प्रत्ययान्त हो

कर सिद्ध शब्द बनता है मधान जो सिद्ध बह मजग भामर, अशरीरी,

सर्वसत्त्व दर्शी है तिनके नई नमस्कार हो (नमो) (नम) नमस्कार

हो (आचार्यग) आचार्यग्य) जो आठ उपसर्ग पूरक धर्माति

भक्षणयो ध्यात सत्त्वं तका ध्यात प्रयया त होकर सिद्ध होता है मधान

० वाई २ इय पूरपान की माह १ वा साहस्य में व्याप्त कर

क तथा दठ करक ११ मा आपण करत है कि (नमोकार) शब्द गुद्ध

है मधान जिस क पय जकार होय यहा गुद्ध है मय सर्व भगुद्ध है

पर तु ये गाने व्याकरण स भनमिष्ट है कथाति प्राकृत व्याकरण में

ऐसेलिखा है यथा -

वादी १५ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २२२ । असयुक्तस्या

दा वर्तमानस्यणो वा भवति ॥ णरो नरा णई नई इति ॥

[illegible]

मायाय —रस मश मय में यह वचन है कि मनमय गुण एक
 अनुपमि कर्मों के भट्ट कर्ता और जिनके द्वारा गुण प्राप्त हुए
 परम पुण्य ऐसे गुणगुनलङ्घन भी भविष्यतः आ मश राजा को नम
 स्कार है। एता जिनके मशरीरीसिद्ध बजाज्रामर यदि मनेक नाम
 सगुण्यति युक्त प्रसिद्ध हैं जिनके साथ कम रूप है गय है मर्पति
 आ कर्म कविरत्नसे विमुक्त है गय है भार जिनके भट्ट गुण प्रादुर्भूत
 हुए हैं इत्यादि मनेक सुगुणों मर्पति भी सिद्ध मशराओं का नमस्कार
 हो भविष्यतः पट्ट विराति गुणों युक्तमर्पति स क्रिया करने वाले जिन
 को ज्ञानमें गति अधिक है तथा आ मयय प्रकार से गच्छ (माधु
 समुदाय) की साधना (रक्षा करना) धारणा (स्थिराधार होने हुए
 को) साधना करना) साध मशहन् को दिन शिष्या दना तथा धरु
 पत्रादि द्वारा भी मर्पति जो सहायता दनी या परम्परा गुण शास्त्रार्थ
 पठन कराना और ७ दुबल भय न अथ'बलहीन रंगादि युक्त साधु
 हो जा का क्या योग्य सहायता करना इत्यादि मनेक गुणों से युक्त हैं
 भार उक्त वार्ताओं के पूर्ण करने में सदैव कटिबद्ध हैं ऐसे आभावाया
 को नमस्कार है। तथा जो पर्वविशति गुणों स भलङ्कन हो रहे हैं
 मर्पति आ पदाङ्ग नमः। इन्द्राय नमः को रूप पन्न है औरों
 पन्ते हैं तिन वार्ताओं के नाम यह है यथा —

अथाह्नसूत्राणि ।

- (१) श्री आचाराह्न जी ।
- (२) श्री सूर्यगडाह्न जी ।
- (३) श्री ठाणाह्न जी ।
- (४) श्री समवायाह्न जी ।
- (५) श्री त्रिषाढ प्रवृत्ति जी ।
- (६) श्री शान्ताधर्मकथाग जी ।
- (७) श्री उपासक दशाह्न जी ।
- (८) श्री भतगड जी ।
- (९) श्री भन्नुश्रावहार जी ।
- (१०) श्री प्रदग्ग्याकरण जी ।
- (११) श्री विषाक जी ।

अथोपाह्नसूत्राणि ।

- (१) श्री उग्रहार जी ।
- (२) श्री रायगणी जी ।
- (३) श्री जोशनिगमजी ।
- (४) श्री पणयन्ता जी ।
- (५) श्री जम्बूद्वीपप्रवृत्ति जी ।
- (६) श्री चन्द्रप्रवृत्ति जी ।
- (७) श्री सूर्यप्रवृत्ति जी ।
- (८) श्री निरावलिका जी ।
- (९) श्री पुष्पिका जी ।
- (१०) श्री काप्यया जी ।
- (११) श्री पुष्पचुम्बिका जी ।
- (१२) श्री पण्डितशा जी ।

अर्थात् जो पृथीक शास्त्रों का सम्पादन स्वयं करते हैं और औरों को यथा भवकाश वा यथाऽवसरपठनाभ्यास करवाते हैं और जिस के द्वारा धर्म तथा विद्या की वृद्धि हो यही काट्य कटके परिफुल्लित होते हैं ऐसे परम वरिष्ठ महान् विद्वान् दीर्घदर्शी परमोपकारी श्री उपाध्याय जी महाराज को नमस्कार हो, जो कि धृत विद्या की नाया से बनेना ही मनुष्य जीवों का ससार रत्नाकर से उत्थान करते हैं अथवा नमस्कार हो सत्य माधुर्गों का जो लोक में समुत्थान परिपूर्ण तथा विभूति हैं सदा ही परावहारी हैं और ज्ञान के द्वारा स्वमात्मा वा मन्वात्माओं के कार्त्तव्य सर्वत्र काल निश्चय करते हैं मणि सप्तविंशति गुण युक्त हैं तिन मुनियों को पुनः पुनः नमस्कार हो ॥

॥ *वचन ॥ जो द्वादशाह्न है तिन वर्तमान काल की मदेशा दत्त दशाह्न लिखे हैं ॥

प्रियजनों ! हम महा मन्त्र का पाठ भयया यह महा मन्त्र श्री
मंगलनी अथर्ववादि सूत्रों (शास्त्रों) में विद्यमान है यदि कोई इसे
देखने की भविष्यता करे तो उस की योग्य है कि जैनशास्त्रों का
अभ्यास करे क्योंकि सूत्रों के पठन से उसे स्वयमेव ही उपलब्ध
हो जायगा ॥

॥ अथोक्त मन्त्र के धात्वादि ॥

प्रियसुहृद्गणों ! अब उक्त महा मन्त्र के धात्वादि को छगा कर
अपके सम्मुख करना हूँ । जैसे कि—(नमस) शब्द भण्य है सो
नमस् शब्द के सकार को —

सजूरहस्मोऽनिष्पक स्रनसुध्वनसोरि ॥

शा० व्या० अ० १ पा० १ सू० ७२ ॥

सजूप अहन्नित्ये तयोरन्त्यस्य पदान्ते सकारस्य
च रिगादेशा भवन्ति क्वस्त्रन्सुध्वन्सु इत्येतान्
वर्जयित्वाननिपि ॥ इति मस्यरि इदित् ॥

इस सूत्र से विचार हो गया पुनः 'र'कार की हस्तज्ञा होने से
विभ का छोर हुआ भन्ता परबन्त रफ रहा । तब ऐसे रूप बना, जैसे
(अम+र) पुनः—

र पदान्ते विमर्जनीय ॥ शा० अ० १ पा० १ ।

सू० ६७ । पदान्ते रेफम्यस्याने ० विमर्जनीयादेशो
भवन्ति ॥

० इति—शृङ्गवद्वाल्गवत्सम्य, कुमारीम्ननयुग्मवत् ॥

नेत्रवत्कृष्णमरस्य, विसर्गोऽयम् इति स्मृत ॥ १ ॥

इस सूत्र से यदन्त के रेफ को विमर्जनीय का आदेश हुआ, तब (नम) ऐसे रूप सिद्ध हुआ पुन —

अतोऽङो विमर्गस्य ॥ प्रा० ङ्या० अ० ८ पा० १ सू० ३० ॥
सस्कृत लक्षणोत्पन्नस्य अत परस्य विसर्गस्य
म्यानेङो इत्यादेशो भवति ॥

इस सूत्र से सस्कृत लक्षणोत्पन्न के अत् से परं विसर्जनीय के स्थान में म्यात विसर्ग को ङो का आदेश हो गया, तब ऐसे रूप बना यथा—(नम+ङो) पुन —ङकार की इसच्छा हो जाने के कारण से तिस का लोप हो जाता है और साथ म म त्यङ्ग का लोप भी होना है तब ऐसे प्रयोग हुआ यथा (नम्+भो) फिर —

(मनञ्ज शब्द रूप पर वर्णमाध्वत इति सन्निकर्ष) इस वचन से व्यञ्जन रूप मकार आकारक आश्रय हुआ तो ऐसे रूप बना (नमो) अर्थात् एक रूप ऐसे सिद्ध हुआ ॥

इसके अनन्तर (भरि ताण) इस की व्याख्या लिखते हैं यथा—
अहं ऐसा धातु है तिस का —

सल्लङ्घवत्स्य लृटावाऽनितौ ॥ शा० अ० १ पा० ४
सू० ७८ ॥ सनिलटो भविष्यति लृटश्च अतद्भवत्
शतृग भवति तड वदानशनेतौ ॥ ऋशाविनौ ॥

इस सूत्र से वर्तमान लृट में अह धातु को शतृग्यय हो गया तब (मह्+शतृ) ऐसे रूप बन गया पन शकार ककारकी इसच्छा होने से नित का लोप हुआ तब (महत) ऐसे रूप बना फिर—

उच्चार्यति । प्रा० ङ्या० अ० ८ पा० २ सू० १११ ॥

अहन् शब्दे संयुक्तस्यान्त्य व्यञ्जनात् पूर्व उत
अदि तौ च भवत ।

इस सूत्र में यह वचन है कि मर्हत् शब्द में सयुक्त के अन्त
अञ्जन से पूर्व अघात् विदल्य करके फिा हकार से पूर हकार उच्चार
मध्यर यह तीन हो जाते हैं तब ऐसे रूप बन गया —

(मर्हन्) (मर्हन्त) (मर्हन्त) पुन (मर्हन्) (मर्हन्त)
(मर्हन्) मर्हित् ऐसेही *दृष्टिा धृति म भी बल्लेख है पुनः—

शत्रानि ॥ प्रा० अ० ८ पा० ३ सू० १८१ ।

शत्रु आनश् इत्येतयो प्रत्येकन्नमाण इत्येना वा
देशो भवत ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि शत्रुप्रत्यय को न्न और माण द्वि
भादेश होने हैं । किन्तु बल्गे का किया हुआ कार्य अन्त के मलोपदि
होना है अघात् मर्हत् शब्द के तकार का (न्) ऐसे भादेश हो गया
तब (मर्हन्त + मर्हन्त + मर्हन्त) ऐसे बन गये । ता —

ह ज ण ना व्यञ्जने । प्रा० अ० ८ पा० १ सू०

२५ ॥ ह ज ण न इत्येनेपाम्थाने व्यञ्जने परे

अनुस्वारा भवति ॥

*दृष्टिा—उत् ११ अमर्हन्तः मर्हन्त मर्हन्तीति मर्हन्त् मर्हन्त्यवा
लोचन मर्ह इतिज्ञाने र्ह इतिविदल्ये मन्त्र प्रथमह पूर्व उ द्वितीये ह
पूर्वमर्हन्तीये ह पूर्व इ सध्वर लोचनम् ११ अन्तः सेहो मर्हन्तो । मर्हन्तो
मर्हितो । मर्हन्तीति मर्हन् भुर्गद्विग्राह शत्रुशत्रुस्तुत्ये शब्द तु प्रत्यय
अन्तलोचन मर्हन्तमात्रो मन् स्थानसं व्यञ्जनाद्दन्तः लोचनम्
मनेन र्ह इति विदल्ये प्रथम ह पूर्व उ द्वितीये मर्हन्तीये इत्याद्या
११ मर्हन्तो मर्हन्ता मर्हितोः ॥ १११ ॥

† द्वितीय विधि इस प्रकार से भी है यथा (मर्हन् + मर्हन् +
मर्हन्) ऐसे प्रयोग स्थित हैं किन्तु—

इस सूत्र से नकारको मनस्वासादेश हो गया तब (महिं३+
महद३+म(हं३) ऐसे प्रयोग बने, पुन नमस्कारार्थ में —

शक्तार्थ्यपण्णम स्रस्तिम्याहा स्रधाहितै ॥ शा०
अ० १ पा० ३ सू० १४२ । शक्तार्थेन पण्णमि
युक्तेऽप्रधानात्थ्येयर्तमाना चतुर्थी
चेत्रायशक्तामेव । मत्त्रायप्रभवनिमज्ज ।
यति । अग्नयेवपद् । अर्हतेनम
इन्द्रायम्याहा । गुरुभ्यस्त्वधा । स०

उगिदचाऽनेधाद ॥ शा० अ० १ पा०

उगिताऽऽय नश्चनम् भवति ॥

ने शद ॥

इस अर्थमें यह कि शक्त है कि श्रियता उक्त
हो निमित्त भी पण्णम । न हो तो नम हो प्र
हो शक्त है । अर्हते नश्चनम् भवति ॥
न शक्ति नम नम नम नम नम नम नम
नम नम नम नम नम नम नम नम
नम नम नम नम नम नम नम नम
नम नम नम नम नम नम नम नम
नम नम नम नम नम नम नम नम

यन्तनादन्त्य ॥ २१०

यन्तनान्निनाद्वानान्न ॥

इस अर्थ में यह कि यन्तनाद्वानान्न
नम नम नम नम नम नम नम नम
नम नम नम नम नम नम नम नम
नम नम नम नम नम नम नम नम

शाब्दावन व्याकरण के इस सूत्रसे चतुर्थी विभक्ति के बहुवचन
अस् शतयशोमश्याधि धी, विन्तु —

चतुर्थ्या पण्टी ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० ३
सू० १३१ ॥ चतुर्थ्या स्थाने पण्टी भवति ।

ग्राह्य व्याकरण के इस सूत्र से चतुर्थी विभक्ति के स्थानोप
रिपण्टा विभक्ति हुई, तब (भरिहत) शब्द को पण्टी का बहुवचन
भाम् प्रत्यय होने से (भरिहत + भाम्) ऐसे रूप हो गया एवम् —

जस् शस्डसित्तोदोदामिदीर्घ ॥ प्रा० अ० ८
पा० ३ सू० ११ ॥ एषु अता दीर्घो भवति ॥

इस सूत्र से भरिहत शब्द के तकार का भत् दीर्घ होजाने से
(भरिहत + भाम्) ऐसे बन गया तदन्तर —

टा आमोणं ॥ प्रा० अ० ८ पा० ३ सू० ६ ॥
अन परस्य टाडृत्येनस्य पण्टी बहुवचनस्य च
आमोणो भवति ॥

इस सूत्र से भाम् प्रत्यय को णकारादेश हो गया तो (भरिहता
+ ण) ऐसे रूप बन गया, तत्पदवत् —

क्त्वा स्यादेर णस्वार्वा ॥ प्रा० अ० ८ पा० १
सू० २७ ॥ क्त्वाया स्यादीताच यौणसूनयारनुस्वारो
ज्न्तावाभवति ॥

इस सूत्र से णकार को विकल्प से अनुस्वार भी हो जाता है
तब एक पक्ष में (नमामरिहताण + नमोमरिहताण + नमोमरिहताण)
और द्वितीय पक्ष में (नमामरिहताण + नमोमरिहताण + नमोमरिहताण)
इत्यादि तीन प्रयोग इस प्रकार सिद्ध हुए ॥

सा पूर्व सूत्रा स तीन रूपों का एक हो मर्त्य है किन्तु पर्यायार्थ
तीन हैं जैसे कि—

जो कमादि शत्रुओं को दहन करे तथा सर्वत्र सर्वदशी हो
वद् मर्त्यित्वा मयितु —

जिन की पुनरावृत्ति ससार चक्र में न होये मर्त्यान् जो जन्म मरण
से रहित हो सो मर्त्यदहन, किन्तु उन दो मर्त्य शीघ्र हैं तथा जो सब
का परमनोय या सब का ज्ञाता सर्वोत्तम है सो मर्त्यदहन क्योंकि धातु
का मुख्यार्थ यन्त्रो हे ॥ तथा नाममाला नृत्ति में हेमवद्राचार्य मर्त्य
शब्द शिष्य पक्षे भी लिखते हैं, तथा च पाठ —

अहनि चतत्रिशदनिशयान्मुरेन्द्र कृतामशोभा
द्यष्टमहाप्रानिहाय्य रूपापूजादिनिशार्हन् अर्हयाग्य
र्ये अर्हमहपूजा या अर्हप्रशसायामिति शनृप्रशय
उगिदचामितिनुम अर्हन्तो अर्हन्त इत्यादि ॥

अर्हन् मुरनरवगादिमेषादिति अर्हपूजायां ऽम्मा
द्राह ऊरुत तृभुवहिवमिभामोरयादि नाशाशिव्यर्थ
ज्ञचिज्ञाऽन्त इत्यनादेशे अर्हन् इत्यदनोपनिर्हन्तीति
पचायि विष्टोदरादित्या न्मुमागमे अर्हमिति ॥

॥ इति मर्त्यित्वाण वद् की सा अनिष्टा ॥

॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

जन्म मरणसे रहित शब्द का अर्थ मर्त्य ही सिद्ध है जन्म (जन्म
ह) का अर्थ विद्वत्संगदायसे धातु हे शिव हे ऊरुत की उरुता
सिद्धि का अर्थ पुनरावृत्ति (विष्ट) देसे शब्द से ही सिद्ध

(१४७)

आदे एगोऽप्यकृष्ट्याष्टीव स्तम् ॥ शा० अ० ४
पा० २ सू० २२१ । धानो गदे पन्थ सो भर्वा
णस्यन नप्यकृष्ट्याष्टीवाम् ॥
इस सूत्र से धानु के मादि पत्तार को सफार हो गया तब (विष)

के रूप बना पुन —
क क्वत्तु ॥ शा० अ० ४ पा० ३ सू० २०४ ॥
धानोर्भूने क क्वत्तु भवन ॥ कानाविनो ॥
इस सूत्र में वा विषय है कि धानु को मूलार्थ में ल ल वत्
मन्दर होने द । इसी कथन से विष धानु को ल मध्य हुआ तो देसे
कर बना गया (विषल) फिर कटार की ससम्प्रा हात से विनम्र
होय है तब (विष् + ठ) देसे हुआ पुनः—

अथ ॥ शा० टपा० १० १ पा० २ सू० ८० ॥
अवाजा क्षपन्नाक्षानो परयोन्मम्यपार्थो भवति ।
इस सूत्र से कटार को सफार हो गया तब देसे मध्य हुआ
(विष् + थ) सिद्ध—

अपि जम् । शा० टपा० अ० १ पा० १ सू० १३६ ।
जर स्थाने जशादेशो भवति अपि परे ॥
इस सूत्र में वा विषय है कि ज के स्थान में ज्वा का बदल
होने पर मध्यस्थान पर हाथ हुए इसी स्थान से हल पत्तार को हल
सफार हो बना गया (विष् + थ) पुन

(ननदकं शब्दरूप परवण माधयेत्) ।
इस कथन से (विष्) कटार बन गया सिद्ध (विष् + थ) देना बनने
के समूचे निष्ठा कटार को कपटी विनम्र के बदल करी बना विनम्र
पर वत् बन बन हो गया तब (विष् + थ) भवि विष् परवण

सा पूर्ण सूत्रा से तीन कर्गों का एक हो मर्ष है किन्तु पूर्णदर्प
तीन हैं जैसे कि—

जो कर्मादि शत्रुओं का दहन करे तथा सर्वत्र सर्वार्थों से
यह मरिहृत, भवितु —

जिस की पुनरावृत्ति सत्कार घट में न होवे भवितु जो जन्म मरण
से रहित हो सो महर्षन, किन्तु उक्त दो मर्ष योग हैं तथा जो स्व
का पुण्ययोग या सत्य का माता सर्वोत्तम है सो महर्षन क्योंकि स्व
का मुख्यार्थ यही है ॥ तथा नाममाला वृत्तिमें हमबन्धुचर्य मर्ष
शब्द विषय ऐसे भी लिखते हैं, तथा य पाठः—

अर्हन्ति चतुर्त्रिंशदनिशयान्मुरेन्द्र कृतामशोका
द्यष्टमहाप्रानिहाय्य रूपापूजाइनिवाअर्हन् अर्हयोग्य
त्वे अर्हमहपूजा वा अर्हप्रशसायामिति शत्रुप्ररथ
उगिदचामिनिनुम अर्हन्तोअर्हन्त इत्यादि ॥

अर्हन् सुरनरवरादिसेवाइति अर्हपूजाया उस्मा
द्वाहलकात तृभवहिवसिभासीत्यादि नाआशिष्ये
क्षचिज्ञोऽन्त इत्यनादेशेअर्हत इत्यदनोपिअर्हनोनि
पचायविष्टपोदरादित्वा न्मुमागमेअर्हमिति ॥

॥ इति भरिहृताण पद की साधनिका ॥

॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

नमसः अक्षयसेनमा शब्द ना पूषन् हो सिद्ध है परन्तु (सिद्धार्थ)
इव का (समर्थ) विषय सत्तादा ऐसे धातु इति के ऊपर की (सत्ता)
दाने स विज्ञाता लाह हुमा पुना (विषय) ऐसे शब्द से रक्षा कि

आदे णोऽप्यक्कप्प्याप्पीव स्तम् ॥ शा० अ० ४

पा० २ सू० २६१ । धातो रादे पस्य सो भवति

णस्यन नप्यक्कप्प्याप्पीवाम् ॥

इस सूत्र से धातु के आदि पक्षर को सकार हो गया तब (सिध्) सेसे रूप बना पुन —

क क्त्वन् ॥ शा० अ० ४ पा० ३ सू० २०४ ॥

धातोर्भूने क क्त्वन् भवन् ॥ काताविनो ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि धातु को मूलार्थ में क क्त्वन् रूप रहने दें। इसी कथन से सिध् धातुको क प्राप्त हुआ तो ऐसे रूप बना दिया (सिध्+क) फिर कक्षर की इसल्लवा होने से निमज्ज होय है तब (सिध्+त) ऐसे हुआ पुन—

अथ ॥ शा० टपा० ज० १ पा० २ सू० ८० ॥

अधाजो झपन्नाद्धातो परयोऽन्म्ययोर्धो भवति ।

इस सूत्र से तक्षर को घक्षर हो गया, तब ऐसे प्रयोग हुआ (सिध्+घ) फिर —

जपि जश् । शा० टपा० अ० १ पा० १ सू० १३६ ।

जर स्थाने जशादेशो भवति जषि परे ॥

इस सूत्र में यह कथन है कि जर् के स्थान में जर् का आदेश होवे जर् प्रत्ययाहार पर होन हुआ इसी याव से इत् पक्षर को इत् पक्षर हो गया यथा (सिध्+घ) पुन

(अनङ्क शब्दरूप परवर्णं साश्रयेत्)

इस कथन से (सिध्) शब्द बन गया फिर (निद्राव) ऐसा बनने के कारणे निद्र शब्द को चतुर्थी विनक्ति के स्थाना पति पण्टी विनक्ति का यह व्यवहार मान् हो गया यथा (सिध्+मान्) इति स्थि परवन् ।

सा पूर्व सूत्रा से तीन रूपों का एक ही मर्थ है निम्न वर्णोदर्थ
तीन हैं जैसे कि—

जो कर्मादि शयनों को दहन करे तथा सर्वत सर्वदुर्गों से
परमरहित भवितु —

जिन की पुनरावृत्ति ससार चक्र में न होवे मर्णात् जो जन्म मरण
से रहित हो सो महद्दत्त, निम्न उक्त दो मध्य गौण हैं तथा जो सब
का पुण्यशेष या सर्व का ज्ञान सर्वोत्तम है सो महद्दत्त क्योंकि एन
का मुख्यार्थ यही है ॥ तथा नमःमाला वृत्ति में हमबन्दाचार्य महर्षि
शब्द गिर्य पसे भी लिखते हैं, तथा यह पाठा—

अहंनि चतुर्निशदनिशयान्मुरेन्द्र कृनामशोभ
षष्टमहाप्रानिहाय्य रूपापूजांनियमिअहंन् अहंयोग्य
स्वे अहंमहपूजा वा अहंप्रशसायामिति शनृप्रारब्ध
उगिदयामिनिनुम अर्न्तोअहन्न इत्यादि ॥

अहंन् मुरनरवगदिमेशाहिति अहंपूजायां उम्मा
द्राहलकान तृम्बहिवमिभासोरथादि नाशानिष्य
सचिज्जन्म इत्यनादेशेअर्न्त इत्यदनोपिगर्हनेति
पचायतिष्टपादगदित्वा न्मुमागमेअहंमिति ॥

॥ इति मरिचिका पद की साधनिका ॥

॥ अथ सिद्ध शब्द की साधनिका ॥

अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका
अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका
अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका
अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका अथ साधनिका

टा आमोर्ण ॥ प्रा० व्या० अ० ८ पा० ३ सू० ६ ।

इस सूत्र से प्रथम् आम प्रायश्च को णकारदेश हुआ यथा(सिद्ध + ण) किर —

जस् शम् ढसितो दोद्रामि दीर्घ ॥ प्रा० व्या०
अ० ८ पा० ३ सू० १२ ॥

इस से सूत्र प्रायश्च सिद्ध शब्द का भकार दीर्घ हो गया जैसे (सिद्धा + ण) पदमात ।

यत्त्वाम्यादेरणम्बोर्वा ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २७ ॥

इस सूत्र से णकार को विस्मय से मनुस्वार हो गया तब पठि पकड़प (नमा सिद्धाण) वा (नमा निद्धाण) ऐसे सिद्ध हुए ।

अपित् “सिद्ध” शब्द पि गो शास्त्रे माहृत्ये च

इस घातम मा घन जान है किन्तु जो विधिविधान पूर्य ही है ॥

॥ इति सिद्धाण पदको साधनिका ॥

॥ अथ आचार्य शब्द की साधनिका ॥

ममस् शब्द पूर्ण हो सिद्ध होता है जना आचार्य शब्द माह् उपपन्न मर्वादा युक्त मय में आ व्यवहृत है मा पूर्य जाने से पुनः अर्गुणि मयम्या घात को हृदय का वयन प्रत्यय करने से आचार्य शब्द बनता है जैसे कि (मा + चर्) येमे रूप दे पत :—

एण ॥ शा० व्या० अ० ४ पा० ३ सू० ६ ॥

न्यम् प्रत्ययो भवति ॥

इ से माह् पूर्व शब्द घन को एण् प्रत्यय हो गया, किन्तु एण् शब्द के अन्त को इसम्या जाने से तिन का टोप

है कश्चिद्वाच्य को भी इत्थम्वा हानी है तब (भाङ्+वर्त्+
इत्) एव कर स (भा+वर्त्+य) ऐसे रूप देव रहा फिर —

जित्यस्या ।। शा० अ० ४ पा० १ सू० २३० ॥

धाना रुपान्त्यस्यान् आद्भवति । जितिणिनि च
प्रत्ययेपरे ॥

इस सूत्र से यह दिखान है कि जिस प्रत्यय का मूल् शेष हो
गया होतो धातु के उपसर्ग (भक्त्यसममेपमुपासयम्) धातु का मात्र हो
जाय इस ऐ-वन्तुसार उदात्त बकार के धन को धातु हुआ जैसे —

(आ+वर्त्+य) पुन (अनच्छकशब्दरूपपर वर्ण
माधयेन्) ॥

इस वाक्य से एव उक्त इस वाक्य, यथा (भाङ्+य) फिर —

अन्तर्द्वय पूर्ण करने से तथा अन्तर्वाच्य में धातु के विनिधि
का बहु बचसान्न होय स एत तित्त्व हुआ (अन्+भाङ्+देव्य) इति ॥

अथ प्राप्ति में इस व कर बकार दिखाने हैं वाच्य, एत,
प्रत्यय एत न सर्व प्राप्ति न ह कश्चिन् भावार्थ शब्द व बकार के
वाच्य प्राप्ति व इव इत्यम य एव सूत्र प्रणि पादन दिया गया है
ऐसे कि —

आचार्यचोच्च ॥ शा० अ० ८ पा० १ सू० ७३ ॥

आचार्य शब्दे चस्यान् इत्थम् अग्वचभवति ॥

अतः भाङ्+य शब्द व बकार के धन इस एव वा अदेव
होने है इति —

देस कर हुए यथा (भाङ्+य) कश्चिन् एतम् —

क-ग-च-व-न-द-प-य-वा प्रायालुक् ॥

शा० अ० ८ पा० १ सू० १७७ ॥

स्वरात्परेषामनादि भूतानामसयुक्तानां क्व च
जतदपयवाना प्रायोलुग् भवति ॥

इस सूत्र से (आचर्य) ऐसे रूप के भा अकार का लोप होगया,
जैसे (भामर्य) (भार्य) फिर —

अवर्णोयध्रुति ॥ प्रा० ङ्या० अ० ८ पा० १ सू०
१८० ॥ कगचजेत्यादिनालुकिसति, शेष
अवर्ण अवर्णात्पिरालघुप्रयत्नतरयकार श्रुति
भवति ॥

इस सूत्र में यह ध्यान है कि जिसके क ग च त द प य इत्यादि
लोप हो गए हों। शेष जो मकार रह जाये, तो उस के स्थान पर
यकार भी हो जाता है सा इसी नियम से हम स्थान में शेष अकार के
स्थानोपरि यकारादेश होगया तब ऐसे रूप हुए (भामर्य) (भार्य)
(भार्य) पुनः—

स्याद्भयचैत्यचौर्यसमेपुयात् ॥ प्रा० अ० ८ पा०
२ सू० १०७ ॥ स्यादादिपुचौर्य शब्देन समेषु-
चसयुक्तस्य यात् पूर्वइद् भवति ॥

इस सूत्र में यह कथन है कि स्याद् भय चैत्य चौर्य इत्यादि
शब्दों में द्वित्व शब्द से पूर्व इत् हो जाता है इसी न्याय से रेफ यकार
के योग भर्षात् द्वित्व होने से रेफ को इत् होने से ऐसे रूप हुआ,
(भारिय) पुन पण्टी का बहु ध्वनत भाम् प्रायय हुआ, तो (भारि-
य+भाम्) ऐसे रूप हुआ पुन भाम् को (टा आमोर्ण) इस सूत्र
से भाम को णकार होजाने से (भारिय+ण) हुआ, पश्चात् —

(जस् शम् ङसित्तोदोद्वामि दीर्घ)

इस सूत्र से पूव स्वर दीर्घ होगया, यथा (भारिया+ण) पुनः—

(ब्रह्मास्त्रादेवस्योवा) इस सूत्र से यकार का रिक्तत्व से मनु
 स्कार हो गया, फिर परिपठक्य ऐसे हुए (नमो भापरिपठ्य) वा
 (नमो भा परिपठ्य) वा (नमो भापरिपठ्य) त्रय (अर्णवचञ्चुति)
 इस सूत्र से यकार का मकार भी हो जाय ह तब (भापरिम) एसा
 बन बना, किन्तु —

अनोरिआरिज्जरीअ ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू०
 ६७॥ आठचयेअकारात्परस्वर्यस्यरिअ अर रिज्ज
 रीअइत्येते आदेशा भवन्ति ॥

इस सूत्र का मत्र प्राप्ति नहीं है और दोष कार्य प्राग्वत् हा है ॥

॥ इति भापरिपठ्य शब्द की साधनिका ॥

॥ अथ उपाध्याय शब्दकी साधनिका ॥

उर और मधि उपपत्ति पूर्वक इह् मन्त्रवने घत्त को घञ् प्रत्य
 यान्न हो कर उपाध्याय शब्द बनता है जैसे कि (उर+मधि+इह्)
 ऐसे स्थित है पुनः—

इह् । आ० अ० ४ पा० ४ सू० ४॥ इहोऽकृतंरि
 घञ् भवन्ति । अव्याय । उपाध्याय ।

इस सूत्र से इह् मन्त्रवने घत्त को घञ् प्रत्य की प्राप्ति हुई
 त (उर+मधि+इह्+घञ्) ऐसे बना पदवत् रु घ म् इन की
 इत्थम् होने से स्पष्ट हुआ और स्पष्ट—(उर+मधि+र+म)
 ऐसे हो रहा, किन्तु यकार की इत्थम् होने से—

आरैचोऽश्वादे । शा० अ० २ पा० ३ सू० ८४ ॥ प्रकु
तेरचा मादरच आ आर् ऐच् इत्येते आदेशा
भवन्ति त्रिणि णिनि च नञिने प्रत्यये परे ॥

इड घात को हकार को इस सूत्र से पेकार हो गया पुनः—

(उप+अधि+पे+अ) ऐसे प्रयोग हुआ कि—

एचोऽद्य यवायात्र ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ६९ ।

एच स्थानयथा सख्य अय् भव् आय् आव्
इत्येते आदेशा भवन्ति अचि परे ॥

इस सूत्र से पेकार क स्थान में आय होने से (उप+अधि+माय्
+अ) ऐसा प्रयोग बना तो (नन-र शब्द रूप पर नण माभ्यस्त)

इस वचनानुसार (उप+अधि+माय) इस रूप बन गया कि—

दीर्घ ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ७७ ॥

अक स्थानेपरेणाच् सहितस्य तदासन्नो दीर्घो
नित्य भवत्यचि परे । यथा दण्ड अग्र दण्डाग्र ॥

इस सूत्र से उप उपनर्त के पक्षरका मकार मार अधि उपनग
के भादि का मकार उभय मिलकर दीर्घ होने से (उप+अधि+माय) ऐसे
रूप बना पुन—

अस्त्रे । शा० अ० १ पा० १ सू० ३ ॥

इक स्थाने यजादेशो भवति अस्त्रेऽचि परे स च
अथवा इक परोयन् भवति अम्पेऽचि परे ।
द्वयत्र ॥

इस सूत्र से हकार को यकार हो गया १ व (उप+अधि+माय)
ऐसे रूप बना पुनः—

अनन्तरादेति यच्च स्ते(उपाध्याय) रूपद्वया, पुनः ननस्कारार्थं न
(शकार्थं वषण्णम स्वस्ति स्वाहा स्वधाहिनै)

शाकटायन व्याकरण के इस सूत्र से चतुर्थी विनक्ति का बहुवचन
अयम् प्रत्यय होने से तथा ननस् भाष्य पूर्व होनेसे (ननः उपाध्याय ये
अयः) ऐसा परिपक्व रूप, सस्कृत भाषा में तो निश्च होगया किन्तु मध्य
प्राकृत में जिस प्रकार रूप बनता है सो देखिये। यथा (उपाध्याय)
ऐसे स्थित है तथा—

ह्रस्व सयोगे ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० ८४ ॥
दीर्घस्य यथादर्शन सयोगे परे ह्रस्वो भवति ॥

इस सूत्र से (उपा) का पञ्चम ह्रस्व होगया तो (उपाध्याय) ऐसे
रूप बना पुनः—

साध्वम ध्य ह्याङ्ग ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० २६ ॥
साध्वसेसयुक्तस्य ध्य ह्योश्चक्षो भवति ॥

इस सूत्र से (ध्व) मात्र का ह्रस्व हुआ किन्तु (उपाध्याय) ऐसा प्रयोग
बना तो :—

पोव ॥ प्रा० अ० ८ पा० १ सू० २३१ ॥ स्वरात्प-
रस्यासयुक्तस्यानादे पस्यप्रायोवो भवति ॥

इस सूत्र से पञ्चम को वञ्चम हाजाने से (उपाध्याय) ऐसे रूप
बना, पुनः—

अनादौशेषादशयोर्द्वित्वम् ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू० ८९
पदस्यानादौवर्तमानस्य शेषस्यादेशस्य च द्वित्वं भवति

इस सूत्र में यह वचन है कि आदि निम्न भाष्य के रूप छन्द
के ही रूप होजाने हैं जैसे कि :—(उपाध्याय) पदवान् ।

कगचनदयवाप्रायो लृक् ॥ प्रा० अ० ८ पा० १
 सू० १७७ ॥ स्वरात्परेषामनादिभूनानामसयुक्ता
 ना कगचेतदपयवाना प्रायोलृग् भवति ॥

इस सूत्र से ककार का लृप् होने से गेय एकार अयात् (लोप)
 ऐसे प्रयोग हुआ, फिर 'सर्व' शब्द था—

सर्वत्रलवरामवन्दे ॥ प्रा० अ० ८ पा० २ सू०
 ७९ ॥ वन्द् शब्दादन्यत्र लवरामर्वत्र सयुक्तस्यो
 र्ध्वमधोऽन्विनानालृग् भवति ॥

इस सूत्र से सयुक्त रेफ का लृप् हागया जैसे (सर्व) मपितु
 (अनादौ शेषादयार्द्धित्वम्), इस सूत्र से गेय एकार द्वित्व हो
 गया यथा—(सर्व) मयान (ननाऽयनम्) रूप बना फिर (साध-
 साधससिद्धौ) इस माघ धातु का—

कृवापाजिमिन्वदिमाध्यशृभ्य उण् ॥
 शा० उणादि० पा० १ सू० १ ॥ दुहृज् करण। वा
 गतिगन्धनयो। पापाने। जि अभिभवे। दुमिज्
 प्रक्षेपणे। प्वद् आस्वादने। साधससिद्धौ।
 अशृव्याप्नौ। एभ्योऽष्टधातुभ्य उण् प्रत्यय
 स्यात् ॥ माघानिगकार्यमिनिमाधु सञ्जन ॥

० सत्रनिष्पृवरिष्वलष्व शिवपदप्रहेष्वानन्त्रे ॥
 उणादिवृत्ति। पा० १ सू० १५३ ॥ सर्वादयावन
 प्रत्ययान्तानिगार्यनेऽनन्त्रेऽवर्तार सृगता। म-
 निरवगपन् ॥

- १-(नमो अरिहताण) (णमो अरिहनाण)
 (नमो अरिहताण) (णमो अरिहंताण)
 (नमो अरुहनाण) (णमो अरुहताण)
 (नमो अरुहताण) (णमो अरुहताण)
 (नमो अरहताण) (णमो अरहनाण)
 (नमो अरहताण) (णमो अरहताण)
-

- २-(नमो सिद्धाण) (णमो सिद्धाण)
 (नमो निद्धाण) (णमो निद्धाण)
-

- ३-(नमो आयरियाण) (णमो आयरियाण)
 (नमो आयरियाण) (णमो आयरियाण)
 (नमो आपरिआण) (णमो आयरिआण)
 (नमो आयरिआण) (णमो आयरिआण)
 (नमो आइरियाण) (णमो आइरियाण)
 (नमो आइरियाण) (णमो आइरियाण)
-

- ४-(नमो उवज्झायाण) (णमो उवज्झायाण)
 (नमो उवज्झायाग) (णमो उवज्झायाण)
-

- ५-(नमो लोएसत्तवमाहूण) (णमो लोएसत्तवमाहूण)
 (नमो लोएसत्तवसाहूण) (णमो लोएसत्तवसाहूण)
-

अथ चूलिकापञ्च पदों का माहात्म्य रूप गाथा ।

पमोपच नमाक्रारा, मञ्जपावणामणा ।

मगलाणच मञ्जमि, पढम हउड मगल ॥

अथान्वय — (पमो) (पमो) यह (पमो) (पमो) पञ्च (नमोकारो)
(नमस्कार) नमस्कार रूप पद (मञ्ज) (मञ्ज) मारे (पाव) (पाव)
पावों के (पणामणा) (प्रणाशन) प्रणाशन मारे हैं अथान् पावों के
मष्ट वानवाले ह (मगलाण) (मगलाना) मगलाक से (म) (म) और
भाविता आभ्यय है (मञ्जमि) (सर्वथा) सर्वस्याना परि पदे हुए (पढम)
(प्रथम) प्रथम अथान् दृष्ट्यादि पदार्थों से पूर्ण (मञ्ज) (मञ्ज) हाता
है (मंगल) (मङ्गलम्) मङ्गलोक ॥

भावार्थ — इस मन्त्र के पाञ्च पदों का नमस्कार रूप पद सर्व
पावों के नाश करने वाले हैं तथा मगलाक मारे सर्व स्यानावत्पिडन
किये हुए दृष्ट्यादि पदार्थों से पूर्ण मङ्गलोक हैं क्योंकि अनेक
गुण युक्त महा मन्त्र है ।

॥ अथ ओम् शब्द निर्णयः ॥

प्रियम्न पुष्यो — पाञ्च पदों का हा बीज रूप ओम् शब्द बनता
है जैसे कि—

॥ गाथा ॥

अरिहंता अमरीरा, जायरियउपञ्ज्ञाया ।

मुणिणोपचक्षर निष्पण्णो ओंकारो पचपरमेही ॥

अर्धान्वय — (मरिहता) (मर्हन्ता) मर्हन् शब्द का आद्यवर्ण
 मकार है (मसरीरा) (मगरीरा) मशरीरी शब्द जोकि सिद्ध
 पद का हो वाचक है तिसका भी आद्य वर्ण मकार है पुनः (मायगिया)
 (माखाया) माखाय पद का आद्यवर्ण मकार है तथा (उवज्झाया)
 (उपाध्याया) उपाध्याय पद का आद्यवर्ण उकार है और (मुपिप्पो)
 (मनिम) मुनि पद का आद्यवर्ण स्वर रहित मयात व्यञ्जन रूप
 मकार है इन पाञ्च का एकत्व करना (पचकञ्जर) (पञ्चाक्षर) पाचा
 क्षर जैसे कि (अ + म + मा + उ + म) (निप्यन्तो) (निप्यन्त) निप्यन्त
 (मोक्षरा) (माक्षर) आम् शब्द है सो (पच परमेष्ठो) (पच परमेष्ठि)
 पचपरमेष्ठि का हो वाचक है ॥

मथाया—पाच पदों में स पूर्व क दो पदों के आद्य वच मकार
 हैं तृतीय पद का आद्यवर्ण मकार है तथा चतुर्थ पद का आद्य वच
 उकार है भार पञ्चव पद का आद्यवर्ण मकार है अब पाचों की एक
 स्थता से —

(म + म + मा + उ + म्) एसा प्रयोग स्थित है पुनः—

दीर्घ ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ७७ ॥

अरु स्थाने परेणादा सहिनम्य तदासन्नो दीर्घो
 नित्य भवत्यचि परे ॥

इस सूत्र से मकार दीर्घ होगया अब (मा + मा + उ + म)
 ऐसे रूप हुआ ता —

ओमादिपर ॥ शा० अ० १ पा० १ सू० ८६ ॥

अवर्णम्य स्थाने माच पगेऽनादेशो भवनिओ
 शब्दे आहादेशेचरे ।

इस सूत्र से माधाय्य पद का माकार पर रूप होगया तब ओष
(मा+उ+म्) ऐसे रहा ॥

इक्चेडर् ॥ शा० अ०१ पा०१ सू०८२ ॥

अवर्णम्यस्यानेपरेणात्रामहिनस्यक्रमेण एङ् अर्
इत्यादेशाभवन्ति इकिपरे ॥

इस सूत्र से मरण उर्ण एकरय होने पर ओकार होगया । तब
ऐसे रूप हुआ ।

जैसे कि —(ओ+म्) पुनः —

मम्मोहलिनो ॥ शा० अ० १ पा०१ सू० १११ ॥

ममागमस्यपदान्तस्यच मकारस्य परस्वोऽनुना-
सिकोऽनुस्वारश्चपर्यायेण भवन्ति हलिपरे ।

इस सूत्र से मकार आ स्वर रहित व्यञ्जन रूप है तिस का
अनुस्वार होगया । तब (आ) ऐसे रूप बन गया । पुनः—

आम प्रारम्भे ॥ शा० अ०२ पा०३ सू०२१ ॥

प्रारम्भेवर्तमानस्याम प्लुतोवाभवन्ति ॥

ओ३म् ऋषभपवित्रम् । आ३म् श्री शान्ति
रस्तु सुखमस्तु । प्रारम्भेति रिम् ओम् इत्यादि ॥

इस सूत्र में यह विधान है कि प्रारम्भ (भारि) में वर्तमान ओम्

● किमी २ व्याकरण का एसा भी लेख है यथाः—

इलोक -अदीर्घोदीर्घनापानि, ताम्निदीर्घम्यदीर्घना ।

पूर्वदीर्घस्वरदृष्ट्वा, परलोपोविधीयते ॥१॥

विषय से उत्पन्न हो जाता है ॥

उक्त शब्दों से ताम् शब्द पञ्च पद का ही वाक्य मिल जाता ॥

इस लिये विद्वानों ने ताम् शब्द को पाच पदों का शब्द माना है।

॥ इति गुणम् ॥

॥ इति महामन्त्र सत्य प्रकाश समाप्त ॥

उल्लोक - ज्ञानप्रदक्षिणीकृत्य, तद्वत्तनविलम्बितम् ।

अहन्निष्फोटनदुर्यानि सागात्रेनिप्रकीर्तिना ॥१॥

चटकोरोत्येकमात्र द्विमात्ररोनिवायस ।

त्रिमात्रतुगिम्बिरोति ह्रस्वदीर्घप्लनक्रमात् ॥२॥

॥ इति ॥

* प्रार्थना *

विषयानु गणो व समान्य गतिनामय रागपदायो का ज्ञानेडा
 धी जैतमन भाषने दाण धं जिन प्रकार हो गया है । विषय के धारण
 करने के भाव जगल व सनायासी कहलाते हैं । जिन के धारण करने
 से भाव परीक्षास्थितो व सप्रयोग बनते हैं । विषय के धारण करने के
 भाव मोक्षमार्ग के साधक होते । विषय के प्रमाण से भाव साध्यक
 ज्ञान साध्यक दुर्लभ साध्यक ग्राह्य व साराधिक होना चाहते हैं ॥

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

जिन के महान् परिधमरा फल भाप लोगों की दृष्टि गोचर होगया है। अथि तु शास्त्र से बड़ा पड़ता है जिन भाचार्यों ने भाप लोगों पर इतना परोपकार किया किन्तु भाप लोगों ने उन के भूमध्य परिधम का फल कुछ भी न दिया शास्त्र ॥

मला कथा भाप लोगों ने उनके नाम की बारी सस्था स्थापन की ! कथा भाप लोगों ने उन भाचार्यों के रचित पुस्तकों को पढ़ा ! या उनका पुनरुद्धार किया ! कुछ मा नही तो कथा यह शास्त्र का स्थापन नहीं है ! अथर्व है ॥

मला भाप दूर की बात जान दीजिये। किन्तु समीप काल की लीजिये। उद्दी भाचार्यों में से एक महान् भाचार्य परम जैनोद्योत करने वाले जिन्दा ने अनेक हा कष्ट सहन करके इस पवित्र जैन धर्म का स्थापन २ प्रकार किया किन्तु पापद्व मत्त का पराजय किया पञ्चाष दश म जिन्दा ने विशेष करके जनधर्म का प्रचार किया। सत्य मार्ग मध्य स्त्री का मुक्ति पत्रक बनटाया। ऐसे महान् गुणा के धारक भोमदु थाबाप भमर सिंह जो महाराज हुए हैं। तो मला भाप लोगों ने उनका नाम बिरुप्रापि बनाने का बड़ा प्रयत्न किया शोक। ऐसे पर मोपकारी महत्त्वा का नाम से कोई भी सस्था न हो ॥

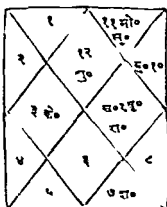
दक्षिणे विशाल हृदय के धारक महान् भाबाप की दया इस दुःखापसर्पिणी काल के प्रभाव से मिथ्यातत्त्वों सदैवकाल ही वृद्धि है इसी कारण से जितनक भगवत जन यह कहने लग गये थे कि गृहस्थी लोगों को सूत्र पढ़ने करने नहीं बल्कि हैं क्योंकि उन लोगों के मन में यह विचार था कि यदि गृहस्थ लोग भी सूत्र पढ़ने लग जायेंगे तो उस का फल हमारे लिये गुन न होगा इसलिये यह लोग सूत्र के पत्र का गृहस्थ लोगों का निषेध करते थे ॥

अपितु उक्त विशाल हृदय महर्षि ने मत्तों द्वारा यह सिद्ध किया कि भर्तृन् ज्ञान के धार हो सब भविष्यारी ह या न सच याग्यता धारण करते हुए सूत्रों का पढ़ सकते हैं। सा दक्षिणे उक्त महर्षि ने कैसे

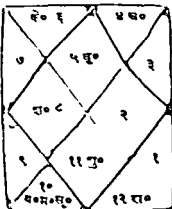
अथ शुद्धि पत्रम् ।

प्रियसुख जनों ! पृष्ठ ८ ३४ ८६ को जमकुण्डलियों में किञ्चित् मात्र भगुदियें रह गई हैं इस कारण से निम्न लिखित कुण्डलियों को अनुकमता से गुद हात करना चाहिये । यथा :—

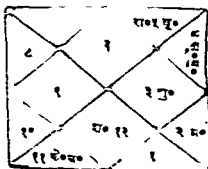
पृष्ठ ८ की



पृष्ठ ३४ की



पृष्ठ ८६ की



पृष्ठ	पङ्क्ति	मनुजि	गुजि
१	१३	वरमा	वरे
२	९	वृद्धो	वृद्धघर्षे
३	१४	प्राकश	प्राज वा
३	११	द्वीताम्बर	द्वीताम्बर
३	१७	जनमर्गोपर	जनमनऊपर
५	१७	भीष्मो	भी
६	४	हे	हे
६	१	हे	हे
६	७	गुप्तोमित	गुप्तोमित
६	१०	कर्म	कर्म
७	२१	गणिक	गणक
७	२६	मगल	मगल
१०	१९	गिनकी	गिनकी
१०	२२	मग	मग
११	१८	त्रिभ	त्रिभदे
११	२०	क्षत्रो	क्षत्रिग
१२	१	जय	जय
१२	१७	वन्द्य	वन्द्य
१३	१८	जयक	जयक
१४	६	वन्द्य	वन्द्य
१४	१३	वन्द	वन्दो
१५	१४	द्विप्राग	द्विप्राग
१५	१४	हे अन्ध	हे अन्ध
१५	१०	वन्द	वन्द
१५	२१	वन्द	वन्द

पृष्ठ	पंक्ति	अनुलि	तुलि
११	२	षड्विध	षड्विधं
११	४	सूत्रानुसार	सूत्रानुसार
१७	२	ह	है
१७	४	सगे	छडोंदर
१८	११	फिरोजपुर	फीरोजपुर
१८	१३	घोमास	घोमास है
२०	१७	पन्थ	पूथ
२०	२३	अनिष्ट वरण को	अनिष्टावरण को
२१	१४	विक्रमाब्द	विक्रमाब्द
२१	२५	क	के
२२	१२	कि	कि
२४	१२	करके	करि कि
२४	१९	सूत्र	सूत्र
२६	२२	हाति के	•
२७	११	पञ्चम	पञ्चम
२८	२४	परचात् ॥	परचात्
२९	४	कच्छोरी	कचौरी
३०	१३	केशर	केशर
३०	२५	जैन समाचार	जैन समाचार
३	२१	मद्वत्य	मद्वति
५	२१	जैसे	जैसे
३१	२१	रेड	रेड
३३	११	मिष्टपात	मिष्टान्न
३७	२१	जोका	जोके
३८	५	बावराहार	बनुपहार

पृष्ठ	पनि	मनुसि	नुसि
४०	१	कदिपत विनागद के	कदिपत
४०	४	दे	दे
,	१२	मामापि	मद्यापि
"	१६	मममरईन	मममईन
४१	१०	मडटेह	मडटेई
४१	११	वधाय	वधाय
,	२१	अन	चेनमन के
४४	२१	मनहल	मनहल
४५	१	यत्न	वडन
,		मामिगिज	मामिगिज
	१०	२	२२
	२३	मक्षर	मक्षर
४६	१०	मविगण	मविगण
४७	९	४	४
	१३	उझोनग	उझोनग
,	१४	निदुग	निदुग
	१	माक्याथी	मक्याथी
	११	त्रिनिवाछाय ७	त्रिनिवाछाय ७ ।
"		तुनिता	तुनिता
४८	४	माग्या	माग्या
४९	२	माग्या	माग्या
५०	११	माग्या	माग्या
"	१५	माग्यादिग	माग्यादिग
५१	११	माग्या	माग्या
५२	२६	दिग	दिग

पृष्ठ	पंक्ति	मनुष्य	पुत्र
५१	२५	दुष्टेय	दुष्टेय
५७	७	तपस्य	तपस्य
"	१८	माधवा	माधवा
५८	१५	दुष्टेय	दुष्टेय
"	१८	स	स
"	१९	ससे	ससे
५९	२	दुष्टेय	दुष्टेय
"	२	दुष्टेय	दुष्टेय
"	२३	साधु	साधु
"	२५	दुष्टेय	दुष्टेय
६०	११	पुत्र	पुत्र
६०	२४	नगमा	नगमा
६१	१	महिषा	महिषा
६१	२०	सद्यो	सद्यो
६१	२०	पुत्र	पुत्र
६२	१०	पुत्र	पुत्र
६३	१०	दुष्टेय	दुष्टेय
६३	२१	दुष्टेय	दुष्टेय
६३	२	दुष्टेय	दुष्टेय
६३	९	दुष्टेय	दुष्टेय
६३	१	दुष्टेय	दुष्टेय
६३	२१	दुष्टेय	दुष्टेय
६७	२	दुष्टेय	दुष्टेय
६७	१७	दुष्टेय	दुष्टेय
६७	२१	दुष्टेय	दुष्टेय

पृष्ठ	शक्ति	मन्त्रि	गुणि
५१	२५	दूटेराय	दूटेराय
५७	७	तपगच्छ	तपागच्छ
"	१८	भाशवाल	भोसवाल
५८	१५	बटेराय	दूटेराय
"	१८	स	से
"	१९	असे	जैसे
५९	२	दूबोळ	दूबोळ
"	२	चित्तनहा	चित्तने हो
"	२३	साधु	साधु
"	२५	बदसकते	बदसकते
६०	११	पञ्चन	दूञ्चन
६०	२४	मगगन	मगगान्
६१	१	महिषा	महिषा
६१	२०	सुशो	सुशो
६१	२०	पुर्ण	पुर्ण
६२	१०	पुन्य	पुन्य
६३	१०	बपूर	बपूर
६३	२१	हु	हु
६१	२	लघ	लघ
६१	९	उज्जत	बद्धत
६१	१	को	को
६१	२२	को	को ।
६७	२	भार	भीर
६७	१७	लिखने	लिखते
६७	२१	नमस्कार	नमस्कार

पृष्ठ	पङ्क्ति	अनुलि	गुलि
८१	८	११४	११६
८७	७	१	६
८८	१	जन,	जन
८९	५	लिखिते	लिखिते
८९	२३	आमाराम	आमाराम
९०	२१	भाष्ये	भाष्ये
९१	१२	के	'के'
९१	१९	दागगा	दागधे
९२	३	दागगा	दागगा
९२	७	लिखिते	लिखिते
९२	७	जन	जन
९४	१७	पदधन	पदधन
९५	१७	पदधन	पदधन
९९	३	जिनके	जिनके
९९	७	हागे	हागे
९९	११	बष्टम अष्टम	बष्टम अष्टम
१००	६	१	१
१००	१३	धर्मदा	धर्मदा
१०१	११	हागे	हागे
१०२	५	६	६
१०३	८	हरने	हरने
१०४	४	बो	बो
१०४	५	बर्तन	बर्तन
१०४	११	कद	कद
१०५	१३	कद	कद

पृष्ठ	पंक्ति	मनुदि	नुदि
८१	८	११क	११के
८७	७	१	६
८८	१	उन,	जैन
८९	५	टिछिने	टिछने
८९	१३	भाम्भराम	भाम्भाराम
९०	११	भापदे	भापये
९१	१२	हे	के
९१	१९	होगण	होगये
९१	३	दायण	दायण
९१	७	लिप	लिप्टे
९१	७	उन	जैन
९४	१७	परचत	परचत
९५	१७	परन्	परन्त
९९	३	दिनके	दिनके
९९	७	होगे	होगे
९९	११	षष्टन् मष्टम्	षष्टन् मष्टम्
१	६	१	१
१००	१३	धीदान	धाम्भन्
१०१	११	होदेग	दावेग
१०१	५	६	६
१०१	८	वरसे	वरसे
१०४	४	बी	बी
१०४	५	भरन्	भरन्
१०४	११	उन	उन
१०५	११	एग	एगे

पृष्ठ	पंक्ति	अनुच्छि	नुच्छि
१०७	१२	य	घे
"	१५	ह	हैं
"	२२	म	मे
१०९	२४	सुघन्मतीले	सुघसुतले
१११	२१	नही	नहीं
११२	१	चढचङ्ग	चढचङ्ग
"	२७	आर्याय	आर्याये
११३	४	सम्मत्यानुसार	सम्मत्यनुसार
११३	४	१९५२	१९५१
"	६	गणावच्छेदिका	प्रवर्तिका
"	२३	कसे	कैसे
११४	११	प परा	परपरा
"	२५	मतिपजा	मतिपजा
११५	२३	नहीं है	नही है
११६	६	मोतीरम	मानीराम
११६	२१	१९६१	१९६२
११७	१४	मृति	मृति
११८	४	मे	मे
"	५	स	से
"	१३	लोगों	लोगों
"	१८	म	म
११९	१९	क	के
१२०	१२	मूर्तियाँ	मूर्तियाँ
१२२	२०	पजा	पजा

पृष्ठ	पङ्क्ति	मनुदि	नुदि
१२२	२	सत्र	सूत्र
"	३	जी	जीके
"	१०	धो	धो
"	१७	मयत्त	मयात्
"	२०	वय	वैत्य
"	२१	राष्ट्र	राष्ट्र
"	२१	करणी	करनी
"	२३	चय	चैय
"	२३	वय	वैत्य
	२४	मृति	मृति
१२३	८	क	क
१२४	४	मनक	मनेक
१२५	३	१०११	१०११॥
"	६	रेषु	रेषु
१२६	२४	तृतीय	तृतीय
१२७	२४	वज्रिदाधार	वज्रिदाधार
१२८	१	सत्र	सूत्र
१२९	२७	पञ्च	पञ्चा
१३०	११	शालादे	शालादे
१३१	११	जाय	जैय
१३२	८	राष्ट्रपत्त	राष्ट्रपत्त
१३३	२३	दश	दश
१३४	११	दत्ते	दत्ते
१३५	४	दोह	दोह
१३६	२१	मोह	मोह

पृष्ठ	पंक्ति	अनुदि	नुदि
१०७	१२	घ	घे
"	१५	ह	है
"	२२	म	मे
१०९	२४	सुधन्नतीले	सुधषतले
१११	२१	मही	महीं
११२	१	चटचज	घटघज
"	२७	आर्याय	आपार्ये
११३	४	सम्मत्यानुसार	सम्मत्यनुसार
११३	४	१९१२	१९५१
"	६	गणावच्छेदिका	प्रयत्तिका
"	२३	कसे	कैसे
११४	११	प परा	परपरा
"	२५	मतिपज्ञा	मतिपज्ञा
११५	२३	नहीं है	नहीं है
११६	६	मोतीरम	मोतीराम
११६	२६	१९६१	१९६२
११७	१४	मूति	मूति
११८	४	मे	मे
"	५	ख	खे
"	१३	लोगों	लोगों
"	१८	म	म
११९	१९	क	के
१२०	१२	मूर्तियां	मूर्तियां
११२	२०	पज्ञा	पूजा

પૃષ્ઠ	પત્ર	અગ્રિય	ગ્રિય
૧૨૨	૨	સૂત્ર	સૂત્ર
"	૩	ઝી	ઝીઢે
"	૧૦	ઝી	ઝી
"	૧૭	ઝર્પતિ	ઝર્પત્
"	૨૦	ઝાય	ઝૈય
"	૨૧	ઝાદ	ઝાદ
"	૨૧	ઝાનો	ઝાનો
"	૨૩	ઝાય	ઝૈય
"	૨૩	ઝાય	ઝાય
"	૨૫	ઝનિ	ઝતિ
૧૨૩	૮	ઝ	ઝ
૧૨૪	૪	ઝાદ	ઝાદ
૧૨૫	૩	૧૦૧૧	૧૦૧૧
"	૧	ઝે	ઝે
૧૨૬	૨૪	ઝૈય	ઝૈય
૧૨૭	૨૪	ઝાઝાઝાઝા	ઝાઝાઝાઝા
૧૨૮	૧	ઝા	ઝા
૧૨૯	૨૭	ઝા	ઝા
૧૩૦	૧૧	ઝાઝા	ઝાઝા
૧૩૧	૧૧	ઝા	ઝા
૧૩૨	૧૧	ઝા	ઝા
૧૩૩	૧૧	ઝા	ઝા
૧૩૪	૮	ઝાઝાઝા	ઝાઝાઝા
૧૩૫	૧૧	ઝા	ઝા
૧૩૬	૧૧	ઝા	ઝા
૧૩૭	૧૧	ઝા	ઝા
૧૩૮	૪	ઝા	ઝા
૧૩૯	૧૧	ઝા	ઝા

पृष्ठ	पंक्ति	अनुलि	नुलि
१०७	१२	घ	घे
"	१५	ह	हे
"	२२	म	मे
१०९	२४	मुयन्नतोले	मुयषतले
१११	२१	नदी	नदी
११२	१	घटचक्र	घटचक्र
"	२७	आर्याय	आर्याय
११३	४	सम्प्रत्यानुसार	सम्प्रत्यनुस
११३	४	१९५२	१९५१
"	६	गणावच्छेदिका	प्रयत्तिका
"	२३	कसे	कैसे
११४	११	प परा	परपरा
"	२५	मतिपत्रा	मतिपत्रा
११५	२६	नहीं है	नहीं है
११६	६	मोतीराम	मोतीराम
११६	२६	१९६१	१९६२
११७	१४	मूति	मूति
११८	४	मे	मे
"	५	से	से
"	१३	लोगों	लोगों
"	१८	म	म
११९	१९	क	के
१२०	१२	मूर्तियाँ	मूर्तियाँ
११२	२०	पञ्चा	पञ्चा

पृष्ठ	पङ्क्ति	मनुजि	शुद्धि
१२१	२	सत्र	सूत्र
"	३	जो	जोके
"	१०	धो	धो
"	१७	मघात	मघात्
"	२०	काय	कैय
"	२१	राष्ट्र	राष्ट्र
"	२१	बानो	बानी
"	२३	कन्य	कैय
"	२३	कन्य	कैय
"	२५	मृति	मृति
१२३	८	क	क
१२४	४	मदक	मदक
१२५	३	१०११	१०११४
"	६	रेपु	रेपु
१२६	१४	तृतीय	तृतीय
१२७	१४	वर्जिषाचार	वर्जिषाचोद
१२८	१	सूत्र	सूत्र
१२९	१७	पञ्च	पञ्च
१३०	११	राष्ट्र	राष्ट्र
१३१	११	जो	जो
१३२	८	राष्ट्र	राष्ट्र
१३३	११	राष्ट्र	राष्ट्र
१३४	११	राष्ट्र	राष्ट्र
१३५	४	राष्ट्र	राष्ट्र
१३६	११	राष्ट्र	राष्ट्र

